ISSN No. 2582-9548

nbt.india
एक सूत्रे सकलम्

पुस्तक संस्कृति

साहित्य और संस्कृति की द्विमासिकी

वर्ष-8 ◆ अंक-3 ◆ मई-जून 2023 ◆ मूल्य ₹40.00

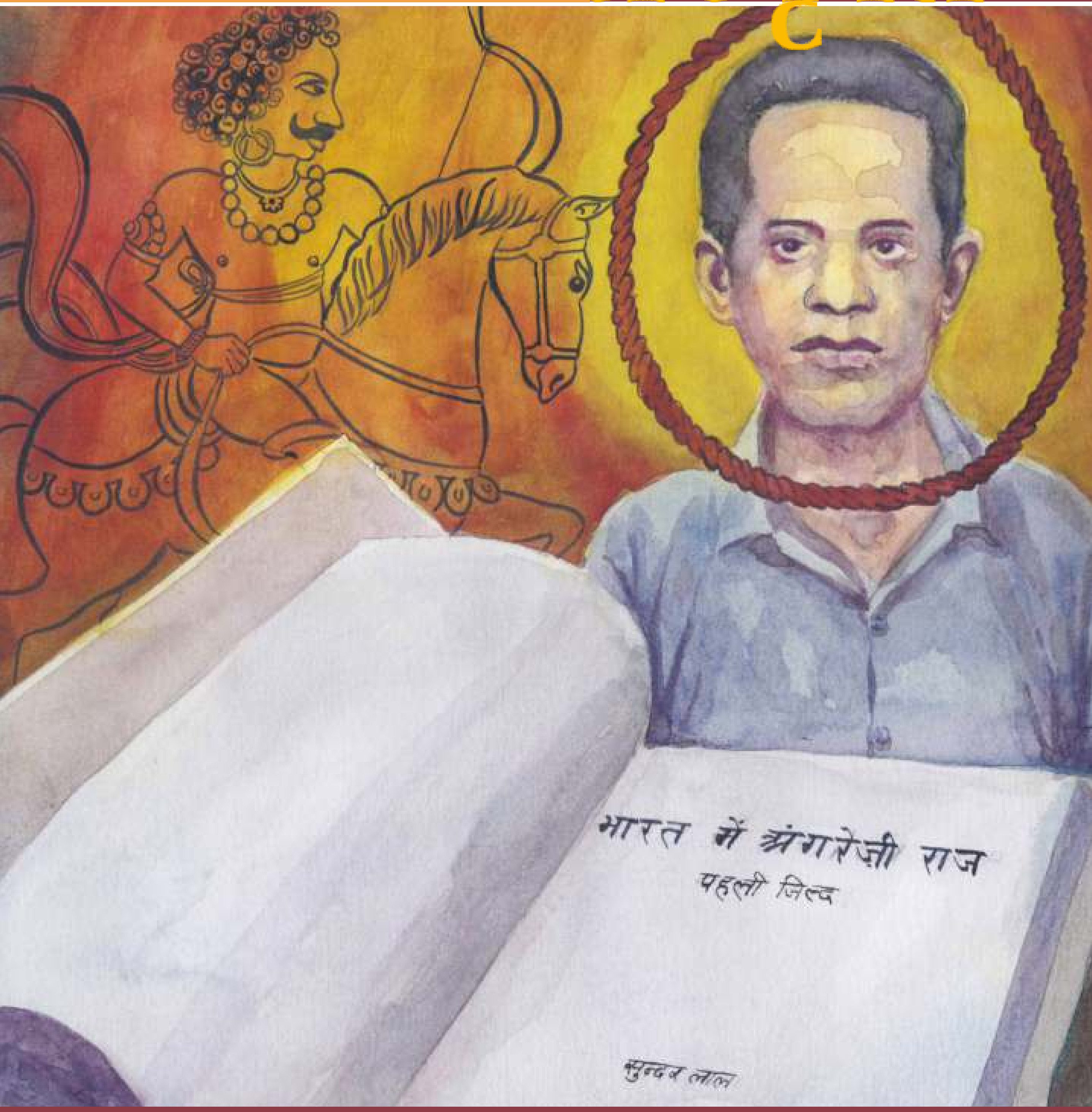

- झारखंड के 'लाईब्रेरी मैन' संजय कच्छप
- हार्डिंग बमकांड
- मातृभाषा में शिक्षा और शोध
- पुस्तक, जिस पर डाका पड़ा
- ओ हिंदुस्तान, हल हैं तेरे लहूलुहान
- प्रथम सम्राट : चंद्रगुप्त

पाठकीय प्रतिक्रिया

'राष्ट्रीय पुस्तक न्यास' की द्विमासिक पत्रिका 'पुस्तक संस्कृति' का मार्च-अप्रैल 2023 अंक 'डिजिटल पुस्तकालय विशेषांक' नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के दौरान देखा। आकर्षक कवर देखकर पत्रिका उठा ली। प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा जी का संपादकीय पढ़ते ही पत्रिका खरीदने का मन बना लिया। न्यास-स्टॉल में ही संपादकीय पढ़ गया। यह बहुत रुचिकर था। एक तरफ जहाँ अंग्रेजी का फितूर युवाओं के सिर चढ़कर बोल रहा है, वहीं हिंदी की वैश्विक पहुँच ने हम भारतीयों का सिर गर्व से ऊँचा किया है। इस अंक के संपादकीय में हिंदी के उत्थान का ब्यौरा बहुत शानदार ढंग से दिया गया है। आज हिंदी का अध्ययन-अध्यापन दुनिया के 180 विश्वविद्यालय में हो रहा है, ब्यौरा आश्चर्यचकित करने वाला है। उल्लेखनीय है कि हिंदी का वैश्विक विस्तार प्रवासी भारतीयों के कारण हुआ है। हम भारत में हिंदी को सिरमौर नहीं बनने दे रहे हैं और इसके विपरीत यह आज संयुक्त राष्ट्र संघ तक जा पहुँची है। यह भी रोचक है कि आज हिंदी विश्व के लगभग 15 देशों में बोली जाती है।

पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख स्तरीय हैं जो हमें पुस्तकालयों की भौतिक दुनिया से डिजिटल रूपी आभासी दुनिया में ले जाते हैं। यह बात सौ फीसदी सच है कि पुस्तकालयों में पुस्तकों का रखरखाव काफी दुरूह कार्य है और एक निश्चित सीमा तक ही इनका संग्रह किया जा सकता है। दूसरा यह कि शोधार्थी की पुस्तकों तक पहुँच और उसमें से पसंदीदा और आवश्यक पुस्तक का चुनाव जटिल कार्य है, लेकिन आज डिजिटल पुस्तकालयों ने इस समस्या को आसानी से हल कर दिया है। बस एक क्लिक पर पुस्तक आपके फोन, लैपटॉप और कंप्यूटर पर उतर आती है। अंततः मैं यही कहूँगा कि पत्रिका का यह अंक शोधार्थियों को उनकी शोध के लिए नए रास्ते खोलता है।

पत्रिका का दूसरा भाग पुस्तक समीक्षा और साहित्यिक गतिविधियों का है। हर दिन हजारों पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है, उनमें से बड़े लेखकों के नाम ही सामने आ पाते हैं, लेकिन 'राष्ट्रीय पुस्तक न्यास' ने नवोदित, स्थापित और अस्थापित लेखकों की पुस्तकों की समीक्षा देकर लेखन जगत को नया आयाम दिया है। समग्र रूप से पत्रिका के इस शानदार विशेषांक के लिए न्यास और पत्रिका के संपादक श्री पंकज चतुर्वेदी जी को बहुत-बहुत धन्यवाद! आगे भी इसी तरह के विशेषांक प्रकाशित करने के लिए शुभकामनाएँ!

–**नीरज कुमार**, डढ़वापुर, कानपुर देहात

'पुस्तक संस्कृति' का 'जनवरी-फरवरी 2023' अंक 'विश्व हिंदी सम्मेलन' पढ़ा। यह अंक हिंदी भाषा की गरिमा को बढ़ाने वाला है। इसमें हिंदी भाषा के मूर्धन्य लेखकों के लेख समाहित किए गए हैं, जो न केवल सारगर्भित हैं, बल्कि पाठकों का ज्ञानवर्धन भी करते हैं। संपादकीय 'देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता एवं उसकी प्रयोजनशीलता' बहुत ही जानकारीपूर्ण लगा। इसमें देवनागरी लिपि का विकास एवं उसकी प्रयोजनशीलता के संदर्भ में सटीक जानकारी दी गई है। इस अंक के अन्य कई लेख जैसे 'दक्षिण भारत में हिंदी की स्थिति', 'वैश्वीकरण के दौर में हिंदी', 'विश्व में हिंदी की वैधानिक उपस्थिति' हिंदी भाषा की महत्ता को दर्शाने वाले हैं। यह अंक वास्तव में हिंदी भाषा को विश्व स्तर तक पहुँचाने की पहल करने वाला अंक साबित होगा।

–**भावना पाण्डेय**, नई दिल्ली

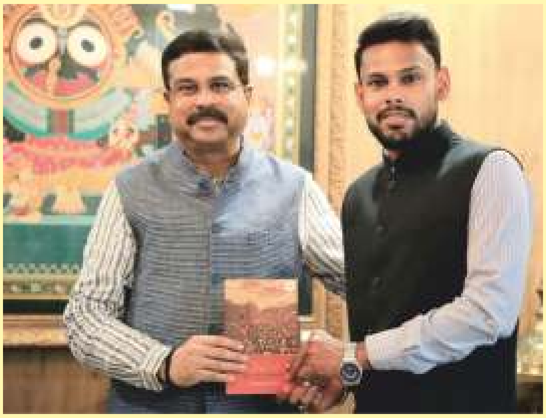

प्रधानमंत्री-युवा पुस्तकमाला के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तक 'पाइका पीपुल, नरेटिव एंड रेबेलियन' माननीय शिक्षा मंत्री को भेंट की

रवींद्रालय लॉन में 17 मार्च - 26 मार्च, 2023 तक आयोजित लखनऊ पुस्तक मेले में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का स्टॉल

ISSN NO. 2582–9548

पुस्तक संस्कृति

साहित्य एवं संस्कृति की द्विमासिकी

वर्ष-8; अंक-3; मई-जून, 2023

प्रधान संपादक
प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा

संपादक
पंकज चतुर्वेदी

सहायक संपादक
दीपक कुमार गुप्ता

संपादकीय सहयोग
विजय कुमार

विज्ञापन एवं प्रसार
कंचन वांचु शर्मा

उत्पादन
अनुज कुमार भारती, पवन दुबे

रेखाचित्र
रोहित शुक्ला

सज्जा/डिजाइन
ऋतुराज शर्मा, समरेश चटर्जी

शब्द संयोजन/कार्यालयीन सहयोग
प्रवीन कुमार

सदस्यता शुल्क
व्यक्तियों के लिए
एक प्रति : ₹ 40.00
वार्षिक : ₹ 225.00
(शुल्क भारत के लिए मान्य)

संपादकीय पत्र-व्यवहार
संपादक
पुस्तक संस्कृति
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
पता : नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया
फेज़-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070.
फोन : 011-26707876
ई-मेल: editorpustaksanskriti@gmail.com

प्रकाशक व मुद्रक अनुज कुमार भारती द्वारा नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया (राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत) नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 के लिए प्रकाशित और सालासर इमेजिंग सिस्टम्स, ए-97, सेक्टर-58, नोएडा-201301 (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित।

संपादक
पंकज चतुर्वेदी

सर्वाधिकार सुरक्षित : प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

इस अंक में

संपादकीय — *प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा* — 2

लेख — **झारखंड के 'लाईब्रेरी मैन' संजय कच्छप** *—डॉ. आर.के. नीरद* — 4

आलेख — **जंगे-आजादी में 'लुटेरवा' और उसके गायक 'सुयश'** *—भगवती प्रसाद द्विवेदी* — 7

लेख — **सिंधी समाज के संदर्भ में भावरूप राम**—*भगवान अटलानी* — 9

आलेख — **हार्डिंग बमकांड**—*डॉ. रश्मि कुमारी* — 12

आलेख — **शिव-विवाह और गद्दी जनजातीय वैवाहिक परंपरा का अंतर्संबंध**—*भरत सिंह* — 14

लेख — **आधुनिक कला का प्रतिमान : अमृता शेरगिल**—*सुदर्शन वशिष्ठ* — 17

आलेख — **मातृभाषा में शिक्षा और शोध**—*विवेक मिश्रा* — 20

लेख — **पुस्तक, जिस पर डाका पड़ा**—*सुधीर निगम* — 23

आलेख — **राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान**—*ध्रुव सचिन पटवर्धन* — 26

लेख — **ओ हिंदुस्तान, हल हैं तेरे लहूलुहान**—*प्रकाश मनु* — 29

शब्द ज्ञान — **आओ भारतीय भाषाएँ सीखें** — 32

लेख — **हिंदी के पाणिनी : आचार्य किशोरी दास वाजपेयी** *—बबिता बसाक* — 34

लेख — **प्रथम सम्राट : चंद्रगुप्त**—*डॉ. संचित त्यागी* — 36

पुस्तक समीक्षा — 38

प्रयास — **युवा लेखकों के लिए प्रधानमंत्री की मेंटरशिप योजना** — 49

पुस्तकें मिलीं — 54

साहित्यिक गतिविधियाँ — 56

भारतीय ज्ञान परंपरा

भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल हमारे बौद्धिक चिंतन और अकादमिक चर्चाओं का केंद्रबिंदु रही है, अपितु वह हमारे जीवन में भी गहराई से जुड़ी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में यह कहा गया है कि, "प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में यह नीति तैयार की गई है।" (राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 पृ.सं. 4) तथा इस तथ्य को स्वीकार किया गया है कि, "ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता था।" (वही) फलतः आज न केवल समूचे शिक्षा और अकादमिक जगत में भारतीय ज्ञान परंपरा को लेकर गंभीर चिंतन किया जा रहा है, अपितु समाज के सभी वर्ग भारतीय ज्ञान परंपरा पर विचार कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में ज्ञान क्या है? ज्ञान की भारतीय परंपरा क्या है? वह कब से प्रारंभ मानी जाए? इस पर विचार किया जाना समीचीन भी है और उसके भारतीय चिंतन एवं जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को गहराई के साथ समझने के लिए आवश्यक भी है।

ज्ञान आत्मतत्व का अंतर्निहित स्वभाव है जिसकी प्रकृति जानना है। यह जानना सत्य और असत्य दोनों का होता है। भारतीय चिंतन में असत्य का ज्ञान माया के भ्रमात्मक, मिथ्या और असत्य के प्रभाव से युक्त होता है। इसके विपरीत परम और उच्च ज्ञान जिसे 'शुद्ध और पूर्ण ज्ञान' कहते हैं, अनुभवात्मक, समाधिजन्य और अध्यात्म से प्राप्त होता है। यह तप, इंद्रिय संयम और उपाधि रहित बुद्धि से प्राप्त किया जाता है। यही निर्विकल्प ज्ञान भी है।

पूर्ण ज्ञान हमारे मन, विचारों, भावनाओं और संकल्पों को पवित्र करता है। गीता में कहा गया है, "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्र मिहि विद्यते।" (4/38, श्रीमद्‌भगवद्‌गीता) अर्थात "ज्ञान के समान पवित्र करने वाला इस लोक में दूसरा कोई नहीं है।" यह ज्ञान का सत्य और सात्विक पक्ष है। इस पवित्र और पूर्ण ज्ञान के आलोक में जो शिक्षा अर्जित की जाती है, उसके संबंध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में कहा गया है कि, 'प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा स्कूल के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि पूर्ण आत्मज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया है।' (राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 पृ. 4)

ज्ञान का दूसरा पक्ष भी है। ज्ञान हमारे विकास का आधार है। मानव की संपूर्ण प्रगति का आधार ज्ञान है। आदम काल में घुमंतू जीवन से लेकर परिवार और समाज के विकास तक, कच्चे खाद्यान्न को खाने से लेकर पका हुआ भोजन बनाने तक, पैदल चलने से लेकर हवाईजहाज में उड़ते हुए जाने तक, मानव मेधा से लेकर कृत्रिम मेधा तक की प्रगति, ज्ञान के कारण ही है। मानव विकास के इतिहास में जितनी भी क्रांतियाँ हुई हैं, चाहे वह कृषि क्रांति हो, औद्योगिक क्रांति हो, प्रौद्योगिकी क्रांति हो अथवा दूरसंचार क्रांति हो, सभी का आधार ज्ञान रहा है। आज के वैश्वीकरण के युग में ज्ञान एक शस्त्र है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक रघुनाथ माशेलकर का कहना है कि, "'ज्ञान' नामक नए ताप नाभिकीय हथियारों से ज्ञान बाजार में भविष्य का युद्ध लड़ा जाएगा।"

भारतीय ज्ञान परंपरा शताब्दियों से समृद्ध रही है। मानव सभ्यता के विकास का इतिहास यह बतलाता है कि तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, सोमपुरा, बल्लभी, ओदंतपुरी, उदयगिरि आदि विश्वइतिहास में प्राचीनतम विश्वविद्यालय रहे हैं। अनेक विदेशी यात्रियों, जिन्होंने शताब्दियों पूर्व समय-समय पर भारत की यात्राएँ की हैं, ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि भारत में ज्ञान-विज्ञान की समृद्ध परंपरा रही है। कई विदेशी यात्रियों ने भारतीय विश्वविद्यालयों में अध्ययन भी किया था। ह्वेनसांग (चीन) ने नालंदा विश्वविद्यालय में बौद्ध धर्म के साथ ही चिकित्साशास्त्र, दर्शनशास्त्र, तर्कशास्त्र, गणित, ज्योतिर्विज्ञान और व्याकरण का अध्ययन किया। इसी प्रकार अलबरुनी ने भारत में संस्कृत, विज्ञान, साहित्य, दर्शन और धर्म का अध्ययन किया (अमर्त्य सेन : भारतीय अर्थतंत्र, इतिहास और संस्कृति) पृष्ठ : 139 व 160)

भारत में ज्ञान परंपरा का प्रारंभ वेदों से माना जाता है। वेद को 'शब्द ब्रह्म' माना गया है। (अनादि निधनं ब्रह्म शब्दतत्व यदक्षिरम्) वेद ब्रह्मांडीय ज्ञान का मूल स्रोत है। 'वेद' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'विद्' धातु से हुई है जिसका एक अर्थ 'ज्ञान' भी है अर्थात वेद ज्ञान हैं। वेदों में निहित ज्ञान को आगे बढ़ाने का कार्य श्रुति परंपरा से किया गया। कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने वेदों की प्रकृति आदि को देखते हुए अपने शिष्य पैल को ऋग्वेद, वैशम्पायन को यजुर्वेद, जैमिनी को सामवेद तथा सुमन्तु को अथर्ववेद को संरक्षित रखने और उसे आगे बढ़ाने का दायित्व दिया। इन

चारों शिष्यों ने अपने-अपने शिष्यों के माध्यम से वेद ज्ञान को आगे बढ़ाने का कार्य किया। इसी क्रम में श्रुति परंपरा विकसित हुई तथा भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास आगे हुआ।

कालांतर में वेदों की अनेक शाखाएँ बनीं। ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदों में वेदों के ज्ञान का विस्तार है। ब्राह्मण ग्रंथों में वेदों की गद्य में व्याख्या है। आरण्यक ग्रंथों में वेद के उन भागों की जिनमें यज्ञ अनुष्ठान आदि का उल्लेख है, के आध्यात्मिक पक्ष को समझाया गया है तथा उपनिषदों में आत्मा, परमात्मा, जगत आदि के संबंध में दार्शनिक और ज्ञान से पूर्ण विचार किया गया है।

भारतीय चिंतन परंपरा सदैव वैज्ञानिक सोच पर आधारित रही है। वैदिक ऋषियों ने प्रकृति के रहस्यों को समझने के लिए भावात्मक के साथ ज्ञानयुक्त और तार्किक चिंतन भी किया है, यही वैज्ञानिक सोच है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का कथन है कि, "ऋग्वेद के सूक्त इस अंश में दार्शनिक हैं कि वे संसार के रहस्य की व्याख्या किसी अति मानवीय अंतर्दृष्टि अथवा असाधारण दैवीय प्रेरणा द्वारा नहीं, किंतु स्वतंत्र तर्क द्वारा करने का प्रयत्न है।" (भारतीय दर्शन भाग-1, पृ.सं. 55)

उपनिषदों का भी केंद्रीय विषय 'सत्य की खोज' रहा है। वृहदारण्य उपनिषद में कहा गया है, "असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमय।" अर्थात "असत से सत की ओर ले चलो, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।" उपनिषदों में व्यक्ति का अंतिम लक्ष्य क्या है? आदर्श क्या है? मुक्ति क्या है? जन्म-मृत्यु, पुनर्जन्म आदि पर विचार है। भारत की दार्शनिक चिंतन परंपरा में सत्य को जानने की उत्कट अभिलाषा व्यक्त होती है। व्यक्ति अपने चिंतन, अनुभव एवं ज्ञान के आधार पर सत्य को जानने की विशिष्ट समझ बनाता है। यह विशिष्ट दृष्टि और समझ ही दार्शनिक मतों का आधार है। षड्दर्शन (न्याय, सांख्य, वैशेषिक, योग, पूर्व मीमांसा और वेदांत) जीव, जगत, आत्मा, परमात्मा और अंततः सत्य को जानने और समझने का मार्ग है। चार्वाक चिंतन भी, जो आत्मा-परमात्मा नहीं मानता, स्याद्वाद का दार्शनिक विचार (जैन धर्म) और शून्यवाद का चिंतन (बौद्ध धर्म) तथा सम्यक जीवन दर्शन वैचारिक विकल्प प्रस्तुत करते हैं।

गीता जिसने ज्ञान को पवित्र माना, स्वयं भी ज्ञान का भंडार है। इसमें वेद और उपनिषदों के तत्व ज्ञान का सार है। एक ग्रंथ वैचारिक और व्यावहारिक रूप से किस प्रकार व्यक्ति के चिंतन और जीवन को प्रभावित करता है, श्रीमद्भगवद्गीता उसका उदाहरण है। अखिल विश्व गीता के तत्वज्ञान से प्रेरणा लेता है। आत्मा की अमरता, कर्मसिद्धांत की श्रेष्ठता तथा भक्ति मार्ग द्वारा ईश्वर प्राप्ति का भारतीय चिंतन गीता में अपनी पूर्णता प्राप्त करता है। रोग, जरा, मरणयुक्त शरीर से पृथक मैं सच्चिदानंद स्वरूप हूँ तथा सर्वव्यापक, अचिंत्य, अविकारी, निर्गुण आत्मतत्व हूँ। यह गीता का अमर ज्ञान है। संक्षेप में कहें तो गीता आत्मा की अमरता का ग्रंथ है। गीता कहती है कि आत्मा अजर-अमर है। आत्मा को न शस्त्र काट सकता है, न अग्नि जला सकती है, न जल इसे गला सकता है और न वायु इसे सुखा सकती है। गीता कर्म करने पर जोर देती है। गीता में कहा गया है कि कोई भी प्राणी बिना कर्म किए जीवित नहीं रह सकता, पर कर्म व्यक्ति को बंधन में डालता है। फलतः कर्मफल भी व्यक्ति को भुगतना पड़ता है। अतः गीता निष्काम कर्म का ज्ञान देती है। (कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन) गीता कहती है कि निष्काम भाव से कर्म करो। कर्म करो पर कर्मफल की इच्छा न करो।

ज्ञान परंपरा के प्रवाह की व्यापकता पुराणों, महाकाव्यों, धर्मग्रंथों और स्मृतियों में व्याप्त है। इससे विशाल भारतीय बौद्धिक संपदा आज भी प्रभावी है। इस विचार संपदा में अध्यात्म के अतिरिक्त साहित्य, संगीत, कला, विज्ञान, भूविज्ञान, ज्योतिष, स्थापत्य, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद आदि सम्मिलित हैं।

ज्ञान मनुष्य में सोचने, विचार करने और जगत के साथ अपने संबंधों को बनाने की दृष्टि विकसित करता है। यही दृष्टि संस्कृतियों और सभ्यताओं के विकास का आधार बनती है। प्रसिद्ध चिंतक धर्मपाल का कहना है कि, 'प्रत्येक सभ्यता की अपनी ज्ञान परंपरा, चित्त परंपरा होती है।' (धर्मपाल : समग्र लेखन, भाग-एक पृ.सं. 109) विश्व में विभिन्न सभ्यताओं के बीच कई समानताओं के बावजूद जो कई विशिष्टिताएँ पाई जाती हैं तथा जो उन सभ्यताओं की विशेषताएँ कहलाती हैं, ज्ञान परंपरा का ही परिणाम होती हैं। उदाहरण के लिए, जीव और जगत को तथा समूचे ब्रह्मांड को देखने की हमारी दृष्टि अन्य सभ्यताओं से भिन्न है। इसका मूल कारण हमारी ज्ञान परंपरा है। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल साहित्य या दार्शनिक चिंतन तक सीमित नहीं है, वह वास्तुशास्त्र, मूर्तिकला, शैलचित्र, चित्रकला, संगीत, नृत्य, वाद्ययंत्रों के रूप में हमें प्राप्त हुई है। सभी कलाएँ अपनी प्राचीनता और निरंतरता का अद्भुत उदाहरण हैं। आम भारतीय के जीवन में ज्ञान की सनातन परंपरा उतनी ही गहराई से जुड़ी हुई है जितनी पौधों की जड़ों के साथ मिट्टी जुड़ी रहती है। जीवन के प्रति आम भारतीय का नजरिया, आत्मा-परमात्मा के संबंध में उनका विचार, कर्म सिद्धांत के संबंध में उसकी सोच, व्यष्टि, समष्टि, परमेष्टि के बीच संबंधों के संबंध में उसका चिंतन भारत की ज्ञान परंपरा से प्रभावित है।

स्वाभाविक है कि जब भारतीय ज्ञान परंपरा इतनी विस्तृत और व्यापक है तब उसे पहचानना और उस पर गर्व करना प्रत्येक भारतीय के लिए स्वाभाविक है। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल संस्कृत ग्रंथों तथा पाली, प्राकृत भाषा तक ही सीमित नहीं है, अपितु वह सभी भारतीय भाषाओं में व्यक्त है, उसका सतत् प्रवाह प्राचीनकाल से आज तक प्रवाहमान है। आज तकनीक विज्ञान और प्रबंधन के क्षेत्र में भी वह तीव्रता के साथ पुनः विकसित हो रही है।

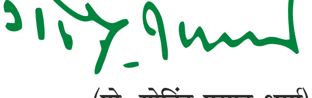

(प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा)
प्रधान संपादक, **पुस्तक संस्कृति**

झारखंड के 'लाईब्रेरी मैन' संजय कच्छप

इंसान अपनी मुश्किलों और मुसीबतों से सीखता है और अगर उसमें कुछ अलग करने की लगन हो, तो वह उन्हीं मुश्किलों और मुसीबतों से प्रेरित होकर देश-समाज के लिए नई राह भी गढ़ता है। ऐसे ही एक शख्स हैं संजय कच्छप। यूँ तो संजय कच्छप दुमका कृषि बाजार उत्पादन समिति के सचिव हैं, मगर यह उनका पेशा है। उनका पैशन है—गरीब, प्रतिभाशाली और जरूरतमंद बच्चों और युवाओं को लाईब्रेरी की सुविधा

प्रदान करना, उन्हें पढ़ाना और उनका मार्गदर्शन करना। संजय कच्छप मूलतः चाईबासा के पुलहातु वार्ड नंबर-एक के रहने वाले हैं और उन्होंने जमशेदपुर, चाईबासा, सरायकेला-खरसावाँ, गुमला और दुमका जिलों में 40 लाईब्रेरी की स्थापना की है। इनमें से 24 लाईब्रेरी डिजिटल हैं। वह अपनी इस मुहिम को लगातार आगे बढ़ा रहे हैं। दुमका में अपने सरकारी आवास के गैरेज को ही इन्होंने कक्षा और लाईब्रेरी बना लिया है, जहाँ बच्चे नियमित रूप से पढ़ने और सीखने आते हैं। संजय कच्छप झारखंड में 'लाईब्रेरी मैन' के नाम से जाने जाते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 नवंबर को अपने मासिक कार्यक्रम 'मन की बात' में उनके कार्यों की चर्चा की और सराहना भी।

माता-पिता मजदूर थे, दो वक्त का खाना भी मिलता था मुश्किल से

संजय कच्छप बताते हैं कि उनका छात्र जीवन बेहद गरीबी में बीता। माता-पिता मजदूर थे। गरीबी ऐसी कि दो वक्त का खाना भी मुश्किल से मिलता था। उन्होंने शिक्षा हासिल कर हालात को बदलने का निश्चय किया, मगर जहाँ भोजन की समस्या ही बड़ी हो, वहाँ पढ़ाई और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए किताबों को जुटा पाना आसान नहीं था। आस-पास पढ़ाई का माहौल नहीं था। सामाजिक बुराइयाँ ज्यादा थीं, मगर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और यहीं से उन्होंने ऐसे हालात से गुजरने वाले समाज के दूसरे बच्चों और युवाओं के लिए लाईब्रेरी बनाने और उन्हें पढ़ाने का संकल्प लिया। लोहरदगा के पूर्व सांसद और स्वतंत्रता सेनानी कार्तिक उराँव को अपना आदर्श मानने वाले संजय कच्छप ने खुद तो उच्च शिक्षा हासिल की ही, अब समाज के अभिवंचित छात्रों-युवाओं को किताब एवं मार्गदर्शन उपलब्ध करा कर उनका जीवन सँवारने में लगे हैं।

संजय कच्छप के संघर्ष की कहानी उन युवाओं को प्रेरित करती है, जो अभावों के

डॉ. आर.के. नीरद

संप्रति : वरिष्ठ पत्रकार, लेखक, जनजातीय कला, संस्कृति एवं इतिहास के अध्येता और आर.टी.आई. एक्टिविस्ट।

उपलब्धि : 'जादोपटिया चित्रकला' और फिर 'बैद्यनाथ पेंटिंग' इनकी दो बड़ी खोज हैं।

सम्मान : इन दो पेंटिंग के अनुसंधान, नामकरण व शैली निर्धारण हेतु संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र एवं सांस्कृतिक कार्य निदेशालय, झारखंड द्वारा 'यामिनी राय आदिवासी चित्रकला शोध सम्मान' व ली पोक्यू डी' आर्ट गैलरी, नई दिल्ली द्वारा 'नंदलाल बोस चित्रकला अनुसंधान सम्मान' एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र द्वारा सम्मान।

प्रकाशन : लगभग छह पुस्तकें प्रकाशित तथा 'वाचिक परंपरा के धवल साहित्यकार-समालोचक प्रो. मनमोहन मिश्र' पुस्तक के संपादक।

संपर्क : मो.– 8789097471, 9431177865

ईमेल– niradrk@gmail.com

बीच रह कर भी बड़े सपने देखते हैं, उन सपनों को पूरा करने की जिद रखते हैं और धारा के विपरीत खुद-से-खुद की राह गढ़ते हैं। संजय बताते हैं कि 1996 में मैट्रिक की परीक्षा का नतीजा आया, तो कॉलेज में दाखिला लेने से ज्यादा बड़ी चिंता नौकरी पाने की थी। लिहाजा, इंटर में दाखिला तो हो गया, मगर ध्यान आर्मी बहाली की परीक्षा में कामयाबी पाने पर लगा रहा। जितनी मेहनत एक इंसान कर सकता है, उसमें कमी नहीं आने दी, मगर मेडिकल टेस्ट में छँट गए। तब बंदूक की नौकरी की उम्मीद छोड़ कलम की नौकरी पाने के ओर मुड़े। बाधाएँ यहाँ भी थीं। कॉमर्स पढ़ना चाहते थे, मगर किताबें नहीं मिलीं। पहचान के जिन सक्षम लोगों से उम्मीद थी, उन्होंने किताब खरीद कर देने का भरोसा तो खूब दिया, बस किताबें नहीं दीं। अंततः इतिहास विषय के साथ 2004 में बी.ए. की डिग्री हासिल की और सिविल सेवा की तैयारी में जुट गए। 2004 से 2008 तक रेलवे में विभिन्न पदों पर नौकरी की। जीवन में पैसे की कमी, छोटे भाई और एक बहन को पढ़ाने की जिम्मेदारी तथा दूसरों की मदद करने की धुन ने स्टेशन मास्टर की जगह गार्ड की नौकरी को ज्यादा तवज्जो दी, क्योंकि इसमें थोड़े ज्यादा पैसे मिल रहे थे। भाई अजय कच्छप आज डिप्टी कलेक्टर हैं और झारखंड के मनिका में अंचल अधिकारी हैं।

इस लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था में राजा होने के लिए राजा का बेटा होने की शर्त नहीं होती। ज्ञान की सत्ता आज भी है और यही वह सत्ता है, जिसकी ताकत से हालात को कोई भी इंसान बदल सकता है। संजय कच्छप ने इसी ताकत को हासिल करने और यही ताकत समाज के अभिवंचित वर्ग के बच्चों-युवाओं में पैदा करने की मुहिम तब शुरू की, जब वे महज मैट्रिक के छात्र थे। तब उनका ध्यान झुग्गियों में रहने वाले छोटे-छोटे बच्चों पर था। जैसे-जैसे संजय कच्छप आगे बढ़े, उनकी मुहिम की परिधि और फोकस ग्रुप का स्तर भी बढ़ता गया। उन्होंने 'पहली रात्रि पाठशाला' शुरू की। चाईबासा के बरकंदाज में, बिजली ऑफिस के सामने, 'बाबा कार्तिक उराँव संध्या पाठशाला' खोली, जिसमें पहली से छठी कक्षा के बच्चे बिना पैसे के पढ़ने आते थे। तब वहाँ के महादेव लकड़ा ने अपने घर का सबसे बेहतरीन कमरा पाठशाला को दे दिया। हालाँकि दो साल बाद यह संस्था बंद हो गई, मगर संकल्प तब भी जिंदा रहा। अब चीजें थोड़ी बदल रही थीं। 2004 में जब उन्हें नौकरी मिली, तब उन्होंने

पाठशाला के साथ लाईब्रेरी खोलने की भी मुहिम शुरू की। गाँव में सामुदायिक भवन था, मगर उसका सबसे ज्यादा उपयोग वैसे लोग कर रहे थे, जिनकी गतिविधियाँ समुदाय के हित के प्रायः खिलाफ जाती थीं। ऐसे लोग भवन पर अपना कब्जा छोड़ना नहीं चाहते थे। लाईब्रेरी खोलने की इजाजत देने की बात तो सोची भी नहीं जा सकती थी, मगर संजय कच्छप के संकल्प, संघर्ष, स्वभाव और सादगी के आगे वे हार गए। साल 2008 में गांधी जयंती के दिन दूसरी लाईब्रेरी चाईबासा के पुलहातु में खुली। तब घर में रसोई के बर्तन-बासन, बिस्तर और कुछ जरूरी कपड़ों के अलावा दो कुर्सियाँ, एक टूटी खाट, एक चटाई, एक लालटेन और कुछ किताबें थीं। माँ को चिंता हुई, बेटा दोनों कुर्सियाँ और चटाई उठा कर लाईब्रेरी ले जाएगा, तो घर आने वाले मेहमानों को वह बैठाएगी कहाँ, मगर हुआ वही, जो बेटे ने चाहा, माँ की चिंता धरी-की-धरी रह गई। दोनों कुर्सियाँ, चटाई, लालटेन और किताबें अब सामुदायिक भवन में समुदाय के बच्चों-युवाओं को समर्पित थीं। यह उनकी पहली डिजिटल लाईब्रेरी थी। फिर यह कारवाँ ऐसा चल पड़ा कि झारखंड के कोल्हान क्षेत्र में उन्होंने 40 लाईब्रेरी स्थापित कीं, जिनमें से 24 लाईब्रेरी डिजिटल हैं। अब झारखंड के दुमका जिले में इस काम को आगे बढ़ा रहे हैं। उनके साथ युवाओं का बड़ा समूह है, जो इस काम में लगा है। उन्होंने बौद्ध दर्शन के सूत्र वाक्य 'अप्प दीपो भव' (अपना प्रकाश स्वयं बनो) को आत्म-सूत्र बनाया है और इसी सूत्र से एक नया समाज बना रहे हैं।

दुमका में उन्हें कृषि उत्पादन बाजार समिति के कार्यालय परिसर में सरकारी आवास मिला है। इसी परिसर में सप्ताह में दो दिन हाट (ग्रामीण बाजार) लगती है। बाकी के दिनों में यह परिसर बेघर, बेसहारा, समाज के अभिवंचित तबके के लोगों का बसेरा है, जिनके बच्चे स्कूल की जगह बाजार और गलियों में वक्त बिताते हैं, स्लेट पर भविष्य गढ़ने की बजाय कचरों के ढेर में अपना बचपन खो देते हैं। संजय कच्छप ने इस परिसर के इस परिवेश को बदलने का फैसला किया और सरकारी आवास के गैरेज में ही लाईब्रेरी खोल दी। कल तक स्कूल न जाने वाले बच्चे अब किताब के पन्नों पर छपे अक्षरों को पहचानने लगे हैं। बड़े बच्चे भी पढ़ने आते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवा इस लाईब्रेरी का लाभ उठाते हैं।

संजय कच्छप के इस अभियान का हिस्सा वे युवा भी हैं, जो किसी-न-किसी रूप में उनसे प्रभावित हुए हैं। ऐसे ही एक युवा हैं मनीष कच्छप, जो कोल्हान से दुमका जा कर उनके साथ वहाँ इस अभियान को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। संजय कच्छप दुमका कृषि उत्पादन बाजार समिति के झाड़ूदार हीरू मिर्धा

जैसे अनेक ऐसे अभिभावकों के लिए भी प्रेरक हैं, जो अपने बच्चों को कल तक स्कूल नहीं भेजते थे, मगर आज उनके भी बच्चे स्कूल में पढ़ रहे हैं।

लोगों से मिल रही सराहना

संजय कच्छप के इस काम को खूब सराहना मिल रही है। चाईबासा के विधायक दीपक बिरुवा और खरसावाँ विधायक दशरथ गगराई ने अपने-अपने क्षेत्र में लाईब्रेरी खोलने की बात कही है। दुमका के उपायुक्त रविशंकर शुक्ला उनके काम से बेहद प्रभावित हैं। कहते हैं, संजय बहुत अच्छे इंसान हैं। कुमार क्लासेस, दुमका के निदेशक प्रभाकर कुमार उनके कार्यों की सराहना करते हुए इसे सामाजिक बदलाव की बड़ी पहल मानते हैं।

ऐसे बनता है ग्रुप, ऐसे चलती है लाईब्रेरी

संजय कच्छप और उनकी टीम पहले उन गाँवों-मुहल्लों की पहचान करते हैं, जहाँ पढ़ने और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले

छात्र और युवा होते हैं। फिर उनकी किताबों की आवश्यकता का आकलन करते हैं। उसके बाद वहाँ के छात्रों-युवाओं के साथ बैठक कर उन्हें लाईब्रेरी की अहमियत समझाते हैं। अंत में उन्हीं को संचालन की जिम्मेदारी सौंपते हुए लाईब्रेरी स्थापित करते हैं। इसके लिए अपने मित्रों, ग्रुप के साथियों और समाज के समर्थ लोगों के सहयोग से किताबें जमा करते हैं।

समाज से लिया है, तो लौटाएँगे भी

संजय कच्छप कहते हैं कि कुछ भी समाज से इतर नहीं होता। समाज जैसा भी हो, हमें वह बहुत कुछ देता है। हम सब का फर्ज बनता है कि हम उसके लिए कुछ करें। हर आदमी को समाज के लिए कुछ-न-कुछ करना चाहिए। वह कहते हैं कि किसी भी देश के विकास के लिए शिक्षा पहली जरूरत है और देश की सबसे बड़ी शक्ति युवा होते हैं। इसलिए देशहित में युवाओं को शिक्षा के प्रसार में निश्चित रूप से योगदान करना चाहिए।

बहरहाल, संजय कच्छप एक मिसाल हैं, जिन्होंने समाज को बदलने के लिए, देश को आगे ले जाने के लिए, युवाओं को उनकी क्षमता की पहचान कराने और उनके लिए किताब जैसी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है।

गरीब बच्चों के सपनों को नई उड़ान दे रहे हैं संजय

प्रधानमंत्री ने कहा, 'झारखंड के संजय कच्छप जी गरीब बच्चों के सपनों को नई उड़ान दे रहे हैं। अपने विद्यार्थी जीवन में संजय जी को अच्छी पुस्तकों की कमी का सामना करना पड़ा था। ऐसे में उन्होंने ठान लिया कि किताबों की कमी से वह अपने क्षेत्र के बच्चों का भविष्य अंधकारमय नहीं होने देंगे। अपने इसी मिशन की वजह से आज वो झारखंड के कई जिलों में बच्चों के लिए 'लाईब्रेरी मैन' बन गए हैं। संजय जी ने जब अपनी नौकरी की शुरुआत की थी, उन्होंने पहला पुस्तकालय अपने पैतृक स्थान पर बनवाया था। नौकरी के दौरान उनका जहाँ भी ट्रांसफर होता था, वहाँ वह गरीब और आदिवासी बच्चों की पढ़ाई के लिए लाईब्रेरी खोलने के मिशन में जुट जाते हैं। ऐसा करते हुए उन्होंने झारखंड के कई जिलों में बच्चों के लिए लाईब्रेरी खोल दी है। लाईब्रेरी खोलने का उनका यह मिशन आज एक सामाजिक आंदोलन का रूप ले रहा है। मैं उनकी विशेष सराहना करता हूँ।'

(मन की बात, 27 नवंबर 2022, स्रोत : पीआईबी)

इन स्थानों पर चल रही हैं लाईब्रेरी

सरायकेला-खरसावाँ : शाहरबेड़ा और रिड़िंगदा; **पश्चिमी सिंहभूम** : चक्रधरपुर की इंदिरा कॉलोनी, टोंकाटोला, सेताहाका; **चाईबासा शहर** : पुलहातु, कुम्हार टोली, बरकंदाज टोली, मेरिटोला, जगरनाथपुर, इचापुर, कंकोशी; **चाईबासा ग्रामीण क्षेत्र** : कमारहातु, सुरजाबासा, कांकुसी-कुरसी, उलीहातु, बादुड़ी और असुरा, ताँतनगर के हरिबेड़ा, मंझारी प्रखंड के लुमझरी, जगन्नाथपुर प्रखंड के देवगाँव और मनोहरपुर, गोइलकेरा (आराहसा), बंदगाँव, सोनुवा (देवांबीर); **पूर्वी सिंहभूम** : सीतारामडेरा, बिरसा नगर, लेधा, घाटशिला, मुसाबनी, डुमरिया, परसुडीह, पोटका, तेतला औ धालभूमगढ़, उचारी मांडर; **दुमका** : ए.एन. कॉलेज पहाड़िया आदिम जनजाति छात्रावास, दुमका हटिया परिसर।

इनके अलावा लोहरदगा और गुमला जिले में भी लाईब्रेरी स्थापित हैं। संजय कच्छप झारखंड की आदिम जनजाति पहाड़िया के लिए सुदूर जंगलों में, पहाड़ों पर भी लाईब्रेरी खोलना चाहते हैं। इसकी शुरुआत उन्होंने ए.एन. कॉलेज, दुमका के पहाड़िया आदिम जनजाति छात्रावास से की है।

झारखंड की बदल रही है तस्वीर

झारखंड में पंचायत स्तर पर पुस्तकालय स्थापित करने की नई सोच विकसित हुई है। पंचायती राज विभाग ने 30 सितंबर को वित्त वर्ष 2022-23 में 'पंचायत ज्ञान केंद्र' यानी 'पंचायत पुस्तकालय' स्थापित करने के लिए 21 करोड़ रुपये की स्वीकृति दी है। इस वित्त वर्ष में 500 ग्राम पंचायत ज्ञान केंद्र शुरू किए जाने हैं। बाकी पंचायतों में 2027 तक इस योजना को लागू किया जाना है। ये ज्ञान केंद्र यानी पुस्तकालय मुखिया की अध्यक्षता में संचालित होंगे।

जंगे-आजादी में 'लुटेरवा' और उसके गायक 'सुयश'

जब 1857 में भोजपुरिया जवान मंगल पांडे की अगुवाई में सिपाही विद्रोह हुआ, तो तमाम भोजपुरियों का लहू उफान मारने लगा था और जो जहाँ था, वहीं से उसने खिलाफत के स्वर बुलंद करना शुरू कर दिया था। जन-जन में राष्ट्रीय चेतना जगाने की गरज से देश के इतिहास, भूगोल, कुदरत, संस्कृति से लबरेज बाबू रघुवीर नारायण का 'बटोहिया गीत' स्वाधीनता-संग्राम सेनानियों का कंठहार बन चुका था, जिसको महात्मा गांधी ने 'भोजपुरी का वंदेमातरम्' कहा था। मगर मुल्क के गौरवशाली इतिहास पर पानी फेरने वाले अंग्रेजों की करतूत पर जब प्रिंसिपल मनोरंजन ने व्यंग्य की तीक्ष्ण धार से सराबोर 'फिरंगिया' गीत की सर्जना की, तो देश के क्या छोटे-क्या बड़े, सबका खून खौल उठा

तथा घर-आँगन से लेकर खेत-खलिहान तक उसका गायन होने लगा था।

गाँव-गाँव से भोजपुरी के क्रांतिकारी गीत गूँज उठे थे और राष्ट्र के लिए सभी अपनी जान हथेली पर रखकर मर-मिटने की खातिर तैयार हो गए थे। 'बटोहिया' और 'फिरंगिया' की तर्ज पर एक और अमर गीत का सृजन हुआ था। वह अविस्मरणीय गीत था—'लुटेरवा', जिसके रचनाकार को नौ महीने के कठोर (सश्रम) कारावास की सजा मिली थी।

'लुटेरवा' के अमर कवि थे गुंजेश्वरी मिश्र 'सुयश', जिनका जन्म बिहार के तत्कालीन सारण जनपद (अब सिवान) के बसंतपुर थानांतर्गत सैदपुर गाँव में हुआ था। बचपन से ही उनकी कविताई में दिलचस्पी देखकर बाबूजी पंडित राजकुमार मिश्र ने उनका दाखिला छपरा के संस्कृत कॉलेज में करवा दिया था। लेकिन महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भागीदारी निभाते हुए युवा 'सुयश' जी ने पढ़ाई छोड़ दी थी।

स्वाधीनता संग्राम से उनका ध्यान भटकाने के लिए बाबूजी ने उन्हें घर-परिवार की जिम्मेदारी से जोड़ना चाहा था और सारण जिले के शिवपुर सकरा, थाना दरौली के केदारनाथ पाण्डेय की पुत्री के साथ उनका विवाह संपन्न करवा दिया था।

मगर देशभक्त गुंजेश्वरी मिश्र 'सुयश' ने तो खुद को जंगे-आजादी के लिए समर्पित कर दिया था। फिर पीछे हटने का सवाल ही नहीं था।

सन् 1921 शुरू हो चुका था। 'सुयश' जी ने एक नए क्रांतिकारी गीत की सर्जना कर दी थी और बगैर किसी को कुछ बताए छपरा के कमला प्रेस में चुपके से जाकर रात में अपने गीत 'लुटेरवा' की एक हजार प्रतियाँ छपवा ली थीं। गीतकार के रूप में उन्होंने अपना नाम नहीं डाला था। अगले दिन से ही छद्म नाम से छपे 'लुटेरवा' गीत को रेलगाड़ी में गा-गाकर वह जनता को सुनाने लगे थे। वे हर गाँव में जाते और 'लुटेरवा' गीत गाते हुए जनजागरण का अभियान

भगवती प्रसाद द्विवेदी

हिंदी और भोजपुरी के लब्धप्रतिष्ठ कथाकार, कवि, समालोचक और लोकसाहित्य के अध्येता। बालसाहित्य के समर्पित रचनाकार तथा शताधिक पुस्तकों के प्रणेता। बिहार सरकार के हिंदी प्रगति समिति के सलाहकार सदस्य रहे द्विवेदी जी भारत सरकार के दूरसंचार विभाग से सेवानिवृत्त होकर स्वतंत्र लेखन में तल्लीन हैं। 'बालसाहित्य भारती सम्मान' सहित अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार-सम्मान प्राप्त तथा कृतियों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद और विभिन्न पाठ्यपुस्तकों में संकलन।

संपर्क : मोबाइल– 9304693031

ईमेल– dubeybhagwati123@gmail.com

चलाते। उनका गीत और भावप्रवण गायन सुनकर श्रोताओं का कलेजा मुँह को आ जाता था। सिर्फ इतना ही नहीं, वह जनता-जनार्दन से मातृभूमि के लिए तन-मन-धन सर्वस्व होम करने की शपथ भी लेते थे।

“‘सुयश’ जी के गीत ने अंग्रेजी शासन की नींद हराम कर दी थी। भले ही गीत पर उनका नाम मुद्रित नहीं था, लेकिन खुफिया पुलिस को असलियत की भनक मिल गई थी। उनके घर जब पुलिस का छापा पड़ा, तो गीत की मूल पांडुलिपि और मुद्रित प्रतियाँ बरामद हो गईं। ‘सुयश’ जी को गिरफ्तार कर लिया गया। गाँव-जवार के कई नामी-गिरामी और संभ्रांत लोग जमानत लेने के लिए आगे आए।”

मगर ‘सुयश’ जी के गीत ने अंग्रेजी शासन की नींद हराम कर दी थी। भले ही गीत पर उनका नाम मुद्रित नहीं था, लेकिन खुफिया

पुलिस को असलियत की भनक मिल गई थी। उनके घर जब पुलिस का छापा पड़ा, तो गीत की मूल पांडुलिपि और मुद्रित प्रतियाँ बरामद हो गईं। ‘सुयश’ जी को गिरफ्तार कर लिया गया। गाँव-जवार के कई नामी-गिरामी और संभ्रांत लोग जमानत लेने के लिए आगे आए। छपरा के जिलाधीश के इजलास में मुकदमा चला।

आखिरकार ‘सुयश’ जी को सश्रम कारावास की सजा सुनाई गई, वह भी नौ माह की कठोर सजा। किंतु ‘सुयश’ जी के उत्साह में कोई कमी नहीं आई। वह तो जेल में भी सस्वर ‘लुटेरवा’ का गायन करते रहते थे। दरअसल ‘लुटेरवा’ में देश में कारोबार करने आए गोरों को लुटेरा साबित किया गया था। सच बात कहने वालों को कारावास की हवा खिलाई जा रही थी। ‘लुटेरवा’ की शुरुआती पंक्तियाँ गौरतलब हैं—

मक्का ओ मदीना अइसन जहान रहे,
पुन्न भूंइ भीत में मिलवले, लुटेरवा!
हमनी गरीब जब कुछ मंगलीं त
झट से तें जेहल देखवले, लुटेरवा!

कवि का कहना था कि लूट-खसोट करने के साथ ही अबोध बेकसूर बच्चों की हत्या और संत स्वभाव के लोगों पर बर्बर अत्याचार भला किसका दिल दहलाकर न रख देगा ?

सब कोई मिलके दुखवा रोवत रहे,
ताहि बीचे गोलवा गिरवले, लुटेरवा!
चूनवा के गड़हा में साधुन के खड़ा कके
ऊपर से पनिया गिरवले, लुटेरवा!
छोट-छोट बालकन के घमवा में खेदि-खेदि
सभनी के जमपुर भेजवले, लुटेरवा!

गीत में ‘सुयश’ जी ने उस वक्त की कुछ वारदातों के मार्मिक चित्र उकेरे थे—

उहवाँ जो बृधा अरु सुशील सुदेव रहे,
लंगटहीं खाड़ तें करवले, लुटेरवा!
रायबरेली में दुखिया प्रजा के ऊपर
नाहक में गोलिया चलवले, लुटेरवा!

भारत के भाई-भाई को लड़वाकर राज करने वाले इन लुटेरों ने कितने ही कलाकारों के हाथ काट डाले, आँखें फोड़ डालीं। आगे की पंक्तियों में कवि कहता है—

भाई में झगड़ा लगाइ ओ रिझाइकर
पराधीन नामवा धरवले, लुटेरवा!
जहवाँ के लोग रहे ब्रह्मर्षि, राजर्षि,
सभनी के गदहा बनवले, लुटेरवा!
इहवाँ के शिक्षित सुजन शिल्पकार रहे,
पकड़ के भाँड़ में झोंकवले, लुटेरवा!
कतना के हाथ काटि, कतना के आँख फोरि,
बिलकुल तें चउपट बनवले, लुटेरवा!
कपड़ा में चमड़ा के पालिस लगाइकर
साथ हीं पलेगवा भेजवले, लुटेरवा!

उपर्युक्त गीत ‘लुटेरवा’ पर ही गुंजेश्वरी मिश्र ‘सुयश’ को दंड संहिता की धारा 195 के तहत 20 जून, 1921 को नौ महीने के सश्रम कारावास की सजा मिली थी।

मगर इसको विडंबना ही कहा जाएगा कि ‘बटोहिया’ और ‘फिरंगिया’ के गीतकार को स्वाधीन भारत में जो प्रसिद्धि प्राप्त हुई, वह ‘लुटेरवा’ के गीतकार को हासिल नहीं हो पाई। कविवर गुंजेश्वरी मिश्र ‘सुयश’ को नाम-शोहरत की लालसा भी नहीं थी। फिर भी, अमर कवि ‘सुयश’ के देश के प्रति सच्चे समर्पण को न तो भुलाया जा सकता है, न ‘लुटेरवा’ की अमर पंक्तियों को ही। ‘सुयश’ जी का सुयश जंगे-आजादी के इतिहास में सदा दर्ज रहेगा।

सिंधी समाज के संदर्भ में भावरूप राम

भक्ति और ज्ञान को साधना के दो स्तंभों के रूप में स्वीकार किया जाता है। अंतर मात्र इतना है कि साधना के सोपान चढ़ने के लिए भक्ति और ज्ञान में से किसी एक स्तंभ को भी पर्याप्त माना जाता है। राम का भावरूप मुख्यतः भक्ति के पक्ष से जुड़ता है। ज्ञान को दलील चाहिए। बुद्धि संतुष्ट हो सके, ऐसा तर्क चाहिए। भक्ति, भावना से पुष्ट होती है। भाव पक्ष जितना प्रबल होगा, उससे भक्त का जुड़ाव उतना ही मजबूत होगा। राम ने जो कुछ किया, ज्ञान उसकी आध्यात्मिक व तात्विक व्याख्या करता है। दूसरी ओर जन्म से लेकर सीता के निष्कासन

तक जो कर्म निष्पादन राम करते हैं, भक्ति उसे लीला मानकर विभोर होती है। व्यक्ति मूलतः स्वभाव और संस्कार से संचलित होता है। पूर्व जन्मों से क्रमशः ग्रहण करते हुए वर्तमान जन्म में भी स्वभाव और संस्कार के साथ बच्चा आँख खोलता है। परिवार, वातावरण, शिक्षा-दीक्षा, सुसंगति-कुसंगति आदि उसके मूल स्वभाव व संस्कार को या तो पुष्ट करके विकास की ओर ले जाते हैं अथवा अधोगामी बनाकर विकृतियाँ उत्पन्न करते हैं। भक्ति और ज्ञान पक्ष भी व्यक्ति सापेक्ष प्रबलता की पृष्ठभूमि में मूल स्वभाव व संस्कार के साथ बाह्य प्रभावों की परिवेशगत युक्ति है। भजन गाते हुए या सुनते हुए कुछ गायकों व श्रोताओं के नयनों से धाराप्रवाह अश्रु विसर्जित होते हैं। उसी आयोजन में उपस्थित कुछ लोग उन अश्रुओं को देखकर मुस्कराते रहते हैं। सच यह है कि मन की इस अवस्था पर व्यक्ति का कोई नियंत्रण नहीं है। सातवीं शताब्दी में विदेशी आक्रमणकारियों के आधिपत्य के पश्चात् सिंध में धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक व भाषाई स्तर पर भूचाल आते रहे। वेदों की रचना सिंधु नदी के तटों पर आश्रमों में तपस्यारत ऋषियों ने की थी। किंतु मोहम्मद बिन कासिम के हाथों सिंध के अंतिम हिंदू महाराजा दाहर की पराजय ने जैसे शौर्यचक्र की दिशा बदल दी। भारत-पाक विभाजन के समय 1947 में पूरा सिंध पाकिस्तान की गोद में केवल इसलिए गया क्योंकि प्रदेश में निवास करने वाले मुसलमानों की आबादी अधिक थी। सातवीं शताब्दी के बाद विभिन्न कारणों के चलते धार्मिक आस्थाएँ बदलीं। हिंदुओं की संख्या कम होती गई। अपने धर्म का दामन न छोड़ने के लिए सिंध के हिंदुओं को जिन स्थानों से शक्ति मिली, उनमें सर्वाधिक प्रमुख महत्व पंजाब का है। राम, कृष्ण के

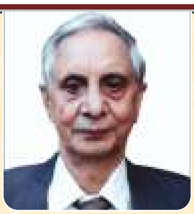

भगवान अटलानी

जन्म : 10 मार्च, 1945, लड़काणा (सिंध, अब पाकिस्तान)।

शिक्षा : बी.एस-सी.।

संप्रति : पूर्व अधिकारी, भारतीय स्टेट बैंक, वर्तमान में स्वतंत्र लेखन एवं पत्रकारिता।

प्रकाशन : हिंदी में 14, सिंधी में 11, अनुवाद 11, कुल 36 पुस्तकें प्रकाशित। 1400 से अधिक रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

पुरस्कार : कुल 35 पुरस्कार प्राप्त। राजस्थान साहित्य अकादमी की ओर से मीरा पुरस्कार, सामी पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ का सौहार्द सम्मान।

संपर्क : मोबाइल– 9828400325

ईमेल– bhagwanatlani@redffimail.com

साथ स्थानीय स्तर पर धार्मिक अवलंबन के क्षीण होते प्रभावों को गुरु नानक के पुत्र श्रीचंद ने सिंध जाकर, वहाँ गुरुद्वारों की स्थापना करके संबल दिया। विभिन्न मोर्चों पर जूझते रहने के कारण सिंध में निवास करने वाले हिंदुओं के लिए भक्ति मार्ग सहज ग्राह्य था। मुस्लिम प्रभाव के कारण प्रति शुक्रवार एवं अमावस्या के बाद पहले या दूसरे दिन होने वाले चंद्र दर्शन को विशिष्ट महत्व देते हुए भजनों व गायन के नियमित आयोजनों की परंपरा सिंध के हिंदू अत्यंत श्रद्धापूर्वक निभाते थे। सिख गुरुद्वारों की प्रथानुसार मात्र गुरु ग्रंथ साहिब स्थापित न करके सिंधी गुरुद्वारों में राम, कृष्ण, शिव, पार्वती, गणेश, हनुमान, झूलेलाल आदि अनेक आराध्यों की प्रतिमाएँ पूजी जाती थीं। पूजा-अर्चना का मुख्य आधार भजन व नृत्य होते थे। भक्ति पक्ष का वर्चस्व सिंध के हिंदुओं के प्रत्येक आराधना कर्म में आज भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। गुरुद्वारों में गुरु ग्रंथ साहिब, सुखमनी, अन्य सिख धर्मग्रंथों के साथ सर्वाधिक श्रद्धाभाव राम और कृष्ण के प्रति दिखाई देता है। जैसा कि कोई समझौता न करके मर्यादा के श्रेष्ठ मानदंड स्थापित करने वाले आदर्श पुरुष के नाते राम को भारत में ही नहीं, विश्व में मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में देखा जाता है। सिंध में भी राम को, उनके जीवन को, उनके निर्णयों को, लोकरंजन की उनकी प्राथमिकता को सर्वस्वीकार्य स्थान प्राप्त था। सिख धर्मग्रंथों और गीता के बाद यदि किसी धार्मिक ग्रंथ को सिंध में सबसे अधिक पढ़ा जाता था तो वह रामायण था। दादी-नानी अपने बच्चों को राम के जीवन प्रसंग इतनी प्रचुरता से सुनाती थीं कि राम की तरह त्यागमय, सत्यपरायण, माता-पिता के आज्ञा पालक और अन्याय के विरुद्ध संपूर्ण बुद्धि कौशल के साथ खड़े होने की भावना उनमें कूट-कूट कर भर जाती थी। राम के भाव पक्ष का ज्वलंत प्रभाव भारत में विकास करने वाले सिंधी हिंदुओं में आज भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। संयुक्त परिवारों की टूटन, वृद्ध माता-पिता की तिरस्कारपूर्ण मानहानि और स्वार्थधता की चहुँओर व्याप्त चूहादौड़ के बीच, विभाजन के दीर्घकाल के बाद भी एक चूल्हे पर बना भोजन करने वाले, वृद्ध माता-पिता को संपूर्ण आदर देते हुए उनकी अनुमति से निर्णय लेने वाले और परिवारों के हितों की अपने लाभ से अधिक चिंता करने वाले अनेक सिंधी हिंदू भारत में देखे जा सकते हैं। राम के भावरूप को रेखांकित करता है एक और तथ्य। राम ने कालांतर में अपने भाइयों और पुत्रों के बीच राज्य के विशाल भूभाग के संचालन का दायित्व बाँटा था। सिंध का शासन राम ने अपने ज्येष्ठ पुत्र लव को सौंपा था।

लव के वंशज 'लुहाणा' कहलाते हैं। जो सिंधी हिंदू लुहाणा नहीं हैं, वे भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में स्वयं को राम का वंशज मानते हैं। स्वाभाविक है कि आध्यात्मिक दृष्टि से वे उन सब गुणों के संदर्भ में प्रतिबद्ध महसूस करते हैं, जो राम के व्यवहार में परिलक्षित होते हैं। सातवीं शताब्दी में पराजित होने से पहले और इसके बाद, भारत का सीमावर्ती प्रदेश होने के नाते सिंधी वीरों के शौर्य ने जो सुरक्षा कवच प्रदान किया, उसके साथ राम की आनुवंशिकी को जोड़कर देखा जाना चाहिए। महाराजा दाहर की पराजय का एक कारण यह था कि मोहम्मद बिन कासिम ने महिला वेश में कुछ सैनिकों को भेजकर रक्षा

की गुहार लगवाई। नारी का सम्मान और न्याय के लिए पराकाष्ठा का स्पर्श रामायण में यत्र-तत्र देखा जा सकता है। सीता को रावण के चंगुल से मुक्त करने के लिए राम ने जो उद्यम किया, उसे नारी के सम्मान के अतिरिक्त कोई सटीक संज्ञा नहीं दी जा सकती। विपरीत स्थितियों के बावजूद विभीषण ने राम का साथ दिया। न्याय की अपेक्षा थी कि विभीषण को राम उचित देय प्रदान करें। भिन्न बात है कि महाराजा दाहर पराजित हुए, वस्तुतः राम से भावरूप में प्राप्त नारी के सम्मान और न्याय की रक्षा के गुणसूत्र का उन्होंने निर्वाह किया।

“सिख धर्मग्रंथों और गीता के बाद यदि किसी धार्मिक ग्रंथ को सिंध में सबसे अधिक पढ़ा जाता था तो वह रामायण था। दादी, नानी अपने बच्चों को राम के जीवन प्रसंग इतनी प्रचुरता से सुनाती थीं कि राम की तरह त्यागमय, सत्यपरायण, माता-पिता के आज्ञा पालक और अन्याय के विरुद्ध संपूर्ण बुद्धि कौशल के साथ खड़े होने की भावना उनमें कूट-कूट कर भर जाती थी। राम के भाव पक्ष का ज्वलंत प्रभाव भारत में विकास करने वाले सिंधी हिंदुओं में आज भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। संयुक्त परिवारों की टूटन, वृद्ध माता-पिता की तिरस्कारपूर्ण मानहानि और स्वार्थधता की चहुँओर व्याप्त चूहादौड़ के बीच, विभाजन के दीर्घकाल के बाद भी एक चूल्हे पर बना भोजन करने वाले, वृद्ध माता-पिता को संपूर्ण आदर देते हुए उनकी अनुमति से निर्णय लेने वाले और परिवारों के हितों की अपने लाभ से अधिक चिंता करने वाले अनेक सिंधी हिंदू भारत में देखे जा सकते हैं।”

जय-पराजय से अधिक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक आस्था होती है। सुखी, संपन्न, समृद्ध सुस्थापित एवं प्रतिष्ठा प्राप्त दस लाख से अधिक सिंधी हिंदू विभाजन के परिणामस्वरूप पूरी तरह बेसहारा होकर जब 1947 में भारत आए तो भौतिक दृष्टि से वे समग्रतः लुटे-पिटे थे। उन्हें छत, रोजगार और भूख के ब्लैक होल से निकलने का साहस भावरूप राम की परंपरा से मिला।

सिंधी हिंदू 1947 में अपने ही देश में शरणार्थी बनकर आया था। शनैः-शनैः वह पुरुषार्थी और परमार्थी के रूप में अपनी पहचान बना पाया। संभवतः राम की कर्मठता, हार न मानने की जिद, आत्मविश्वास, परहित साधन में दृढ़ आस्था और सबके साथ सामंजस्य बैठाने की व्यावहारिक संगठन क्षमता के भावरूप में प्राप्त सद्गुणों के बूते हिंदू सिंधी उस मुकाम तक पहुँच पाया जो किसी को भी विस्मित करता है। लव के शासन के दौरान जो कुछ सिंधी हिंदू को देखने-सुनने-सीखने को मिला, कालांतर में लव के वंशज लुहाणा जो संप्रेषित कर पाए, उसके बीजाणु कितने भी क्षीण क्यों न हो जाएँ, शून्य नहीं हो सकते। यही कारण है कि राम का भावरूप सिंधी हिंदू के पुनरुन्नयन में महत्वपूर्ण माना जा सकता है। धार्मिक रूप से अल्पसंख्यक होने के नाते सिंध में हिंदुओं को अपनी पहचान के लिए खानदान का सहारा लेना पड़ता था। सभी हिंदुओं की भाँति सिंधी हिंदुओं के भी गोत्र हैं। उग्गा, चिचिर, चच, माईपोटा, लुला, सचदेव, नागदेव, नागपाल, कुकड़ेजा, बठीजा ऐसे ही कुछ गोत्रों के नाम हैं। सार्वजनिक पहचान की दृष्टि से गोत्रों का गौण स्थान था। मगर विवाह आदि अवसरों पर गोत्र ही महत्वपूर्ण माने जाते थे। सिंध में कन्याओं की आबादी लड़कों की तुलना में कम थी। इसके बावजूद कम से कम, पिता के गोत्र में विवाह को दोनों पक्ष अनिवार्यतः टालते थे। पुराने जमाने से अब तक हरिद्वार आदि स्थानों पर अस्थि विसर्जन अथवा गया में पिंडदान के समय पंडे-पुरोहितों की बहियों में खानदान के साथ गोत्र का उल्लेख किया जाता रहा है। एक ही खानदान के हिंदू सुरक्षा, पहचान और पारिवारिक एकता की दृष्टि से प्रायः खानदान विशेष के नाम से प्रसिद्ध हवेली में रहते थे। इन हवेलियों में एक ही खानदान के सदस्य बड़ी संख्या में संयुक्त परिवार में रहते थे। हैदराबाद में आडवाणियों व मलकाणियों, लड़काणा में हरियाणियों और सखर में केसवाणियों की हवेलियाँ विख्यात थीं। खानदान के पूर्व प्रसिद्ध पुरुष के नाम के अंत में 'णी' जोड़कर उस उपनाम की रचना हुई है, जिसे सामान्यतः सिंधी समुदाय इस्तेमाल करता है। 'रामनाणी', 'रामाणी' और 'रामचन्दाणी' उपनाम इस तथ्य के प्रमाण है कि सुदीर्घ काल से सिंधी हिंदू अपने बच्चों के नाम 'राम' या 'रामचंद्र' रखते थे। अब तो प्रत्येक वर्ग में नाम-स्वरूप बदलने लगे हैं, मगर विभाजन के बाद भी कई वर्षों तक अनेक सिंधी परिवार बच्चों का नामकरण 'राम' या 'रामचंद्र' करते थे। इससे सिंधी हिंदुओं में राम के भावरूप के गहराई तक समाए प्रभाव को बखूबी समझा जा सकता है। जन्म-जन्मांतर के संस्कार और प्रकृतिगत स्वभाव का संयोग आनुवंशिक प्रभावों, संगति, पारिवारिक परिवेश, विद्यालय, पड़ोस-मित्रों-समाज के विभिन्न घटकों के परिप्रेक्ष्य में क्या रूपाकार व स्वरूप ग्रहण करता है, कह पाना संभव नहीं है। मात्र या कहें मुख्यतः भक्तियोग का अनुसरण उस रूपाकार व स्वरूप को किस परिणति पर पहुँचाता है, सुनिश्चित घोषणा इसकी भी नहीं की जा सकती। किंतु राम का भावरूप सिंधी हिंदू के कर्म (कर्मयोग) और विचार (ज्ञान योग) को गहराई से नियंत्रित करता रहा है। विभाजन के बाद

भारत में सिंधी हिंदुओं की निर्मित हैसियत से तो स्पष्टतः इसे समझा ही जा सकता है, कल और परसों भी यह तत्व उनके कार्य और व्यवहार को आच्छादित करता रहेगा। इस अर्थ में राम के भावरूप के सिंधी हिंदू के संदर्भ में स्थायी महत्व को काल की सीमाओं में कैद करना संभव नहीं है। भौतिकता की तेज आँधी मूल्यों को ध्वस्त करने पर आमादा है। किंतु जन्मों से पल्लवित संस्कार और प्रकृति से विरासत में मिला स्वभाव राम के भावरूप की छत्र-छाया में बिना किसी विशिष्ट संज्ञानाम के सिंधी हिंदू की राम आवेष्टित पहचान को बनाए रखेगा। काल के मस्तक पर लिखी इस इबारत को पढ़ना किसी सुधी व्यक्ति के लिए कभी कठिन कार्य नहीं होगा।

हार्डिंग बमकांड

बंगाल के उग्रवादियों और दिल्ली के क्रांतिकारी समूह ने मिलकर एक योजना बनाई। इस योजना के अधीन 12 दिसंबर, 1911 को दिल्ली, भारत की नई राजधानी बन जाने के उपलक्ष्य में जब वायसराय लॉर्ड हार्डिंग का जुलूस 23 सितंबर, 1912 को चाँदनी चौक की सड़कों, मुगल बाजार से गुजर रहा था, उस पर बसंत कुमार विश्वास द्वारा, जो एक महिला (बुरका पहनकर) के रूप में वस्त्र पहने हुए थे, रास बिहारी बोस के इशारे पर पंजाब नेशनल बैंक के भवन की छत पर से एक बम फेंका गया जिससे वायसराय का ए.डी.सी. घायल हो गया। यह बम हाथी पर बैठे लॉर्ड हार्डिंग के पीछे के भाग पर और उसके अंगरक्षक, बलरामपुर राज्य के निवासी महावीर सिंह के बीच जा गिरा। इस हमले में महावीर मारा गया और हार्डिंग की गरदन, कंधे तथा पैर पर चोट लगी। घटना के दोषी अमीरचंद के घर की तलाशी हुई जहाँ से अवध बिहारी को गिरफ्तार कर लिया गया। लाहौर में दीनानाथ ने सरकारी गवाह बनकर लाला हरदयाल द्वारा बनाई गई योजना और पात्रों की जानकारी दे दी। इसके अतिरिक्त उसने पुलिस को मास्टर अमीरचंद का भी नाम बता दिया। मास्टर अमीरचंद की गिरफ्तारी हेतु रु.5000 के इनाम की घोषणा की गई। 10 फरवरी, 1915 को जस्टिस जॉन्सटन लाहौर हाईकोर्ट ने अपील रद्द करते हुए तीनों अभियुक्तों को आई.पी.सी. की धारा 302/120 बी के अंतर्गत 05 अक्तूबर, 1914 को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई। इनकी बंदी संख्या-2760 थी। फलस्वरूप मास्टर अमीरचंद को उनके साथियों—अवध बिहारी और बालमुकुंद के साथ दिल्ली के केंद्रीय जेल में 08 मई, 1915 को फाँसी दे दी गई। वे प्रायः निम्न पद्य गाया करते थे—

"एहसान ना खुदा का उठाए मेरी बला
किश्ती खुदा पे छोड़ दूँ,
लंगड़ को तोड़ दूँ।"

इस कांड के सूत्रधार रास बिहारी बोस तथा एक अन्य क्रांतिकारी जोरावर सिंह बारहट पुलिस गिरफ्त में न आ सके। (मैं यहाँ पेपर के माध्यम से घटना से जुड़े क्रांतिकारियों के संक्षिप्त जीवन परिचय पर प्रकाश डालना चाहूँगी।)

रास बिहारी बोस का जन्म 25 मई, 1866 को गाँव पहलाड़ा, जिला हुगली बंगाल में हुआ। 23 सितंबर, 1912 को दिल्ली के चाँदनी चौक में लॉर्ड हार्डिंग के ऊपर बम फेंकने की योजना बनाने वाले रास बिहारी बोस अपनी युवावस्था के प्रारंभ से ही गुलामी का जुआ देश के कंधे से उतार फेंकने को कटिबद्ध थे। रास बिहारी बोस ने पंजाब को क्रांति का क्षेत्र बनाकर कार्य को आगे बढ़ाया। वे देहरादून के वन विभाग, शोध संस्थान सरदार पूरन सिंह रसायन विभाग के प्रभारी थे। रास बिहारी ने उनके सहायक के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। शोध संस्थान के रसायन विभाग में उपलब्ध ऐसे रासायनिक पदार्थ मिल सकते थे जिनका उपयोग वह बम निर्माण में कर सकता था। रास बिहारी ने देहरादून में टैगोर विला में

डॉ. रश्मि कुमारी

डॉ. रश्मि कुमारी ने 'उत्तर प्रदेश के स्वतंत्रता आंदोलन में शाहजहाँपुर के क्रांतिकारियों का योगदान' विषय पर शोध तथा '1857 के विद्रोह के दौरान उत्तर-पश्चिम प्रांत में मृत्युदंड प्राप्त विद्रोहियों का सामाजिक दस्तावेजीकरण, 1857-60' विषय पर पोस्ट-डॉक्टरेट फेलोशिप प्राप्त की है। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से उनकी पुस्तक '1857 का महाविद्रोह व मौलवी अहमदउल्लाह शाह', 'काकोरी से पहले, काकोरी के बाद', 'जलियाँवाला बाग' के अलावा इनके कई शोध-पत्र प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

संप्रति : स्वतंत्र लेखन।

संपर्क : kumari.rashmi1979@yahoo.in

रहना प्रारंभ कर दिया जो क्रांतिकारियों का केंद्र बन गया। लाहौर बम कांड (1913) के पश्चात रास बिहारी देहरादून लौट आए। रास बिहारी बोस की गिरफ्तारी के लिए वारंट निकाल दिया और भारी इनाम घोषित किया। जनवरी 1915 में बोस अमृतसर पहुँच गए। 12 मई, 1915 को जापान के 'सानुकीमारू' नामक जहाज से रास बिहारी बोस जापान हेतु प्रस्थान कर गए और 05 जून, 1915 को जापान की भूमि पर पहुँच गए। 1916-23 तक जापान के आठ वर्ष के प्रवास में उन्हें 19 बार अपने रहने के स्थान बदलने पड़े। जापानी फौजी अधिकारी एम. तोयामा का वरदहस्त बोस को प्राप्त था। एजोसोमा तथा कोक्कोसोमा दंपती ने अपनी पुत्री तोशिको का विवाह जुलाई 1918 में रास बिहारी के साथ कर दिया। 1923 में रास बिहारी बोस को जापान की नागरिकता प्राप्त हो गई। रास बिहारी ने 28 अक्तूबर, 1937 को एशियाई युवक संघ की स्थापना की और 'एशिया एशियावासियों' के लिए नारा दिया। उन्होंने 1942 में टोक्यो में 'इंडियन-इंडिपेंडेंस लीग' की स्थापना की। जनवरी 1945 में बोस इलाज के लिए टोक्यो के सरकारी अस्पताल में भर्ती हो गए। सम्राट ने बोस को 'उगते हुए सूर्य का देश दो किरणों वाला' द्वितीय सर्वोच्च पद के सम्मान से विभूषित किया। 21 जनवरी, 1945 को बोस टोक्यो में शहीद हो गए।

> **सन् 1912 के दिल्ली लॉर्ड हार्डिंग बम कांड के समय भी जोरावर सिंह संदिग्ध थे। दिल्ली लॉर्ड हार्डिंग बम केस के साथ 1914-1915 में बनारस में भी प्रमुख क्रांतिकारियों की गिरफ्तारियाँ हुई, परंतु रास बिहारी बोस को गिरफ्तार करने में पुलिस असफल रही। कुँवर प्रताप पर राजस्थान से शस्त्रों को भिजवाने का आरोप था, अन्य अभियुक्तों के साथ कुँवर प्रताप को 'बनारस षड्यंत्र केस' में लंबी सजा हो गई। जेल की असहनीय यातनाओं के कारण 07 जुलाई, 1918 को बरेली जेल में कुँवर प्रताप सिंह का स्वर्गवास हो गया।**

कुँवर प्रताप सिंह आत्मज ठाकुर केसरी सिंह बरहट का जन्म शाहपुरा, राजस्थान में हुआ। 10 नवंबर, 1912 से ठाकुर केसरी सिंह बरहट, इनके भाई ठाकुर जोरावर सिंह और लड़के कुँवर प्रताप सिंह प्रमुख क्रांतिकारियों के सहयोग में कार्य कर रहे थे। राजस्थान में अर्जुन लाल सेठी से भी घनिष्ठ संबंध था। 1912 के दिल्ली लॉर्ड हार्डिंग बम कांड के समय भी जोरावर सिंह संदिग्ध थे। दिल्ली लॉर्ड हार्डिंग बम केस के साथ 1914-1915 में बनारस में भी प्रमुख क्रांतिकारियों की गिरफ्तारियाँ हुई, परंतु रास बिहारी बोस को गिरफ्तार करने में पुलिस असफल रही। कुँवर प्रताप पर राजस्थान से शस्त्रों को भिजवाने का आरोप था, अन्य अभियुक्तों के साथ कुँवर प्रताप को 'बनारस षड्यंत्र केस' में लंबी सजा हो गई। जेल की असहनीय यातनाओं के कारण 07 जुलाई, 1918 को बरेली जेल में कुँवर प्रताप सिंह का स्वर्गवास हो गया। कुँवर प्रताप सिंह की मृत्यु के समय उनके पिता ठाकुर केसरी सिंह बरहट, कोटा महंत की हत्या के आरोप में आजीवन कारावास काट रहे थे।

बालमुकुंद का जन्म 1889 ईसवी में खरियाला गाँव में जिला झेलम, पंजाब (अद्यतन पाकिस्तान) में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री भाई मथुरा दास था। उन्होंने कला स्नातक उपाधि के पश्चात शिक्षक के रूप में कार्य किया। ब्रिटिश शासन के विरोध में राष्ट्रवादी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध विद्रोह के प्रचार-प्रसार हेतु साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का लेखन व वितरण का कार्य किया तथा शस्त्रों के प्रयोग और बम फेंकने का प्रशिक्षण लिया। हार्डिंग की जुलूस यात्रा पर बम फेंकने के षड्यंत्र में वे फरवरी 1914 में गिरफ्तार हुए। 17 मई, 1913 को लॉरेंस गार्डन, लाहौर में हुए बम विस्फोट में भी आपको आरोपी बनाया गया था। 05 अक्तूबर, 1914 को मृत्युदंड की सजा हुई और दिल्ली जिला जेल में 08 मई, 1915 को फाँसी के तख्ते पर लटका दिया गया।

अमीरचंद गदर पार्टी के नेता, मास्टर अमीरचंद आत्मज हुकुमचंद वैश्य का जन्म 1869 में दिल्ली में हुआ था। मास्टरजी की शादी 12 वर्ष की आयु में ही कर दी गई थी, लेकिन वे पाँच वर्षों में ही विधुर हो गए। उन्होंने स्वयं ही पुनर्विवाह के विरोध में प्रतिज्ञा ली थी। उनकी शिक्षा दिल्ली के सेंट स्टीफेंस स्कूल और सेंट स्टीफेंस कॉलेज में हुई। वे यहाँ अध्यापक बन गए, बाद में दिल्ली के संस्कृत हाईस्कूल के प्रधानाचार्य बन गए। बंग-भंग के बाद उन्होंने स्वयं को पूर्णतया स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन में झोंक दिया था। 1908 में क्रांतिकारी रामचंद्रजी के संपादन में एक उर्दू साप्ताहिक 'आकाश' भी निकाला था।

शिव-विवाह और गद्दी जनजातीय वैवाहिक परंपरा का अंतर्संबंध

'गद्दी' हिमाचल प्रदेश की एक प्रमुख जनजाति है जिन्हें भगवान शिव का 'गण' माना जाता है। इनके प्रत्येक रीति-रिवाज और परंपराएँ शिवानुरूप हैं। जिस प्रकार का विधि-विधान अर्थात मांगलिक रीति-रिवाज भगवान शिव ने अपने विवाहोत्सव के उपलक्ष्य पर संपन्न किए थे, वैसे ही मांगलिक रीति-रिवाज एवं परंपराएँ गद्दी समुदाय के लोग सदियों से अपने विवाहोत्सव के समय करते आ रहे हैं। अतः भगवान शिव की वैवाहिक परंपरा का अनुसरण करते हुए गद्दी समुदाय के लोग सर्वप्रथम वर के लिए वधू की तलाश हेतु 'रवार' (विवाह प्रस्ताव) भेजते हैं, यदि कन्या पक्ष विवाह प्रस्ताव हेतु सहमति जताता है तो वर पक्ष के पिता अपने दो-चार प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ जाकर विवाह प्रस्ताव को निश्चित करते हैं जिसे स्थानीय भाषा में 'गुड़भनणा' (कुडमाई) कहा जाता है। पुरोहित द्वारा विवाह तिथि निश्चित करने के उपरांत 'लखणौत्तरी' संस्कार संपन्न किया जाता है।

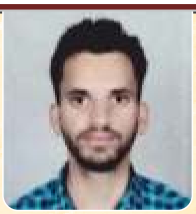

भरत सिंह

जन्म तिथि : 31 मई, 1993

प्रकाशन : 'गद्दी जनजाति के लोकगीत' पुस्तक प्रकाशित। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में 17 से अधिक शोध आलेख प्रकाशित।

संप्रति : शोधार्थी, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला।

संपर्क : मोबाइल– 8219775906

ई-मेल : bharat.singh85000@gmail.com

गद्दी अथवा शिव-विवाह का अपरिहार्य संस्कार 'लखणौत्तरी' है, जिसे 'विवाह का लिखित समझौता' भी कहा जाता है। इस संस्कार का प्रसंग शिव-विवाह से जुड़ा हुआ है। जब भगवान शिव ने अपने कुलपुरोहित को गजपति के महल में विवाह निश्चित करने हेतु भेजा था तो वहाँ पर विवाह का लिखित समझौता हुआ था, जो 'लखणौत्तरी' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। लखणौत्तरी में विवाह की तिथि, समूहत, हांदी, लग्न-वेदी तथा अन्य अनिवार्य संस्कारों को कलमबद्ध किया जाता है। विवेच्य प्रसंग का अनुसरण करते हुए गद्दी समुदाय के लोग भी विवाह निश्चित होने पर वर और वधू के परिजन अपने कुलपुरोहित से लखणौत्तरी लिखवाते हैं।

विवाह-तिथि निर्धारित होने के उपरांत वर-वधू का कुलपुरोहित यजमान के आदेशानुसार वर-वधू के समस्त संबंधियों को 'न्युन्दर' अर्थात निमंत्रण देता है। सगे-संबंधियों को 'न्युन्दर' देने के उपरांत विवाह उत्सव में अभीष्ट सर्वप्रथम 'समूहत संस्कार' संपन्न किया जाता है।

समूहत : 'समूहत संस्कार' से अभिप्राय शुभ मुहूर्त से है जिसके निमित्त भगवान नारायण को स्वर्गलोक से पृथ्वीलोक में 'समूहत' (शुभ-मुहूर्त) हेतु आने का आग्रह

किया जाता है। नारायण अपनी उपस्थिति में असमर्थ होने पर अपने स्थान पर धरती, आकाश को मंडप में बैठने व वर-वधू को आशीर्वाद देने हेतु भेजते हैं। 'समूहत संस्कार' के उपलक्ष्य पर गणपति, कुंभ और समस्त देवी-देवताओं की पूजादि की जाती है। 'समूहत' के उपरांत आटा, हल्दी, तेल इत्यादि को सम्मिश्रित कर बनाई सुपारी को मंत्रोच्चारण करके लड़के को उबटना किया जाता है जिसे स्थानीय लोकभाषा में 'लोपरी लगाना' कहा जाता है। कुलपुरोहित वर की दाहिनी कलाई में तीन काले ऊनी धागे बाँधते हैं जो भूत-प्रेत तथा किसी अनिष्ट घटना से बचाते हैं। वर की माता उसे खुले आंगन में ले जाकर नहलाती है। नहाने के अवसर पर काला सूत तोड़कर फेंक दिया जाता है और माँ लड़के को अपनी चुनरी में ढककर दरवाजे के समीप ले आती है। इसके उपरांत दरवाजे के पास दहकते हुए कोयले पर सरसों जलती मिट्टी की बोरसी में डालकर फेंक देती है और दूल्हे को गृह प्रवेश करवाती है।

हांदी (शांति हवन) : गद्दी विवाहोत्सव के सुअवसर पर 'शांति-हवन' अपरिहार्य माना जाता है। इस संस्कार की धार्मिक मान्यता यह है कि भगवान शिव के कुलपुरोहित समस्त देवी-देवताओं एवं ग्रहों को प्रसन्न करने हेतु शांति-हवन करवाते हैं जिसके निमित्त धरती, आकाश, कुंभ और नवग्रह आदि को प्रसन्न करते हैं, परिणामतः समस्त देवी-देवताओं को छोड़कर नवग्रह अप्रसन्न रहते हैं। अतः नवग्रहों को प्रसन्न करने हेतु 'शांति-हवन' करवाया जाता है। इस संस्कार में वर के मामा-मामी की विशेष भूमिका रहती है। शांति हवन के उपरांत वर के मामा अपने हाथ में कटार पकड़े रखते हैं तथा उपस्थित समस्त जनमानस क्रमानुसार वर-वधू के सिर पर तेल-शांति संस्कार संपन्न करते हैं। तेल शांति संपन्न होने के पश्चात मामा वर/वधू के थोड़े से बाल, नाखून आदि काटकर हरे पत्ते में रखते हैं और नदी की जलधारा में प्रवाहित करते हैं, इस संस्कार को 'लौळ-लेना' कहा जाता है।

'जोगणू' (यज्ञोपवीत संस्कार) : यदि किसी व्यक्ति का यज्ञोपवीत संस्कार नहीं हुआ हो तो वह इसी समय अर्थात विवाह के समय ही पूर्ण किया जाता है। इस अवसर पर वर को 'जोगी' (योगी) का वेश धारण करवाया जाता है। जोगी के कानों में आटे की 'मुद्रा' पहनकर कंधे पर झोली डाल छाती पर काले डोरा लपेट, पीठ पर भेड़-बकरी से निर्मित 'खलड्डू' (झोला), धनुष-बाण एवं दाहिने हाथ में लकड़ी का डंडा ले दाहिने अंगूठे में जनेऊ लपेटकर योगी या ब्रह्मचारी का रूप धारण करता है। वास्तव में ये संस्कार भगवान शिव ने अपने विवाहोत्सव के सुअवसर पर पूर्ण किया था, अतः इसका अनुसरण करते हुए उसे 'योगी' का वेश धारण करवाया जाता है। कुलपुरोहित वर से पूछता है 'योगी, तू क्यों आया है?' वर उत्तर देता है—'ब्रह्मसूत्र लेने।' फिर पुरोहित उससे पूछता है—'किस तरह का सूत्र चाहिए, ताँबे का, पीतल का, चाँदी का, सोने का या कपास का।' वर कपास का सूत माँगता है। इस पर पुरोहित दूल्हे को मणि महेश, त्रिलोकनाथ और बदरीनाथ में स्नान करने के लिए भेजता है।

वर बाहर आंगन में जाकर किसी पात्र में रखे पानी से अपने शरीर पर छींटे मारकर नकली स्नान करता है। इस अवसर पर

वर के भाई एवं भाभियाँ आंगन में इकट्ठे होकर हास-परिहास करते हैं। नकली स्नान करने के उपरांत जोगी (योगी) भिक्षा माँगता है। परिवार के संबंधी योगी के झोले में रोटी का एक टुकड़ा डालकर अपनी इच्छानुसार बकरी, भेड़, गाय आदि देने का वचन देते हैं। इस संस्कार को पूर्ण करते हुए पुरोहित योगी से पूछता है—"क्या तू 'जतेरे' (गृहस्थ) रहना चाहता है, या 'मतेरा' (साधु)? प्रत्युत्तर में योगी जतेरा रहने की बात करता है। यह सुनने के उपरांत पुरोहित योगी से कपड़ों को ले लेता है, जिसके लिए उसे चार आना दक्षिणा मिलती है। कालांतर में तेल शांति संस्कार संपन्न करवाने के पश्चात वर को स्नानादि करवाकर विवाह के पारंपरिक परिधान पहनाकर बारात को प्रस्थान करवाया जाता है जिसके निमित्त सिर पर सफेद पगड़ी के ऊपर स्वनिर्मित पारंपरिक सेहरा, लुआंचा, सफेद पटका (कमरबंद), गुलबदन सुत्थण (पजामा) और कंधे पर जौंल (अंगौछा) पहनाया जाता है।

वर को विवाह की पोशाक धारण करने के उपरांत वधू की वरसुही (सोहाग पिटारी) वाली भेंट तैयार की जाती है जिसके भीतर एक खरवास (दुपट्टा), नौ-डोरी, उंगी, चुंदी (सुरमादानी), कंघी, मणिहार, तीन भेली गुड़, खजूर, किशमिश, बादाम, चावल और सात लूची आदि रखी जाती है। इस सुहाग पिटारी को कोई व्यक्ति अपने कंधों पर उठाकर बारात के साथ वधू के घर ले जाता है।

लग्न-संस्कार : जब वर की बारात कन्या के द्वार पर पहुँचती है तो उसकी सास सात बार वर के सिर की आरती उतारती है, जिसमें उसके दाहिने हाथ में आरती का दीया रहता है और बायाँ वर के सेहरे पर रहता है। चार बार आरती लड़के के दाहिने से बायें की जाती है और तीन बार बायें से दाहिने। वर की सास आरती की थाली में रखी तीन

रोटियाँ आँगन में फेंक देती है। कुलपुरोहित वर के हाथ में कुछ पैसे देता है, जिसे हाथ जोड़कर वह आरती की थाली में रख देता है। इसके पश्चात ससुर वर को अंगूठे से पकड़कर मंडप के समीप लाकर पैर धोकर पूजता है। वर का पुरोहित ससुर के साथ में चावल, अखरोट, दूब और फलों से भरा एक डोना देता है। ससुर उसे ऊपर हाथ किए लेकर दोनों अंगूठों को जोड़े वर को आंगन में ले जाता है। पुरोहित वैदिक मंत्रोच्चारण करते हैं।

इस क्रियाविधि को पूर्ण करने के उपरांत कन्या का चचेरा भाई घर के अंदर से उठाकर मंडप के समीप ले आता है। कन्या का चचेरा भाई उसका मुँह वर के आमने-सामने करते हुए वर के सामने खड़ा कर देता है। तदोपरांत पुरोहित लड़के को गरदन और दाहिने हाथ से और कन्या को बायें हाथ से गरदन और दाहिने हाथ को पकड़कर क्रमशः तीन बार एक-दूसरे को स्पर्श करवाता है, जिसके निमित्त पहले लड़के के बायें कंधे को लड़की के दाहिने कंधे से छुआता है,

इस संस्कार को 'चान-परचान' (जान-पहचान) करते हैं। इसके पश्चात कन्या का पिता 'कन्या-संकल्प' लेता है और सामने बैठे हुए दोनों के पैरों को धोता है। तत्पश्चात वर और उसके ससुर द्वारा छ-चारी अदा की जाती है, जिसमें क्रमशः बिस्तर, पाद, अर्घ, आमचन और मधुपर्क आदि सम्मिलित होती हैं। मंडप में हरे प्याले में एक अखरोट को डालकर बनाए गए गणपति, ब्रह्मा, विष्णु, कुंभ, दीया और नवग्रह आदि की पूजा होती है। इसके पश्चात कन्या की चादर का एक छोर उसका भाई पकड़ता है, जिस पर वर तीन बार लाल टिक्का छिड़कता है। इसी प्रकार वर के कमरबंद को पकड़ा जाता है, जिस पर कन्या तेल मलती है। फिर कन्या अपना हाथ निकालती है, जिसमें पुरोहित कुछ पैसे, एक अखरोट, दूब, फूल, तिल और चावल आदि डालता है। तदोपरांत कन्या का हाथ वर के हाथ के ऊपर रख दिया जाता है। पुरोहित वर-वधू के पटके एवं दुपट्टे के कोने से दोनों के हाथों को लपेटकर डोरी से बाँधते हुए 'लग्न-संस्कार' को पूर्ण करते हैं।

लग्न-संस्कार के पूर्ण होने के उपरांत कन्या का चचेरा भाई उसे उठाकर कमरे में ले जाता है, लेकिन वर को अभी मणिहार संस्कार पूर्ण करना पड़ता है जिसके निमित्त चावल पर नवग्रहों के प्रतीक नौ अखरोट रखकर पूजे जाते हैं। सास मणिहार पकड़कर वर को घर के भीतर कामदेव की बनी तस्वीर के सामने बैठा देती है। इसके पश्चात सिरगुंधी संस्कार संपन्न किया जाता है।

वेदी : केश-प्रसाधन के पश्चात पुरोहित वर और वधू को 'वेदी' संस्कार हेतु बाहर आंगन में बुलवाते हैं। अतः परंपरा के अनुसार वर के जौंल (अगौंछा) और कन्या के दुपट्टे को बाँध देते हैं। फिर कन्या का मामा उसे उठाकर वेदी की ओर लाता है, उनके पीछे-पीछे वर भी आ जाता है। सर्वप्रथम कन्या का पिता वर और वधू के पैर धुलाता है। फिर गणपति, नवग्रह, ब्रह्मा, विष्णु, सप्तऋषि, चारवेदी, चार दिशा, चार उपदेश आदि की पूजा की जाती है, इसके उपरांत वर और उसके साले द्वारा 'खीलें' खेली जाती हैं जिसके अनुसार एक हूप (छाज) में खिल्लें रखकर एक बार वर उन खीलों का ढेर लगाता है, जबकि उसका साला उसे मिटाता है, दूसरी बार साला ढेर लगाता है और वर उसे मिटाता है। उस विधि के उपरांत वर का साला अपने सिर में रखे छतर को छाज में रखता है। इस रस्म हेतु कन्या के भाई को कुछ पैसे देते हैं। इसके उपरांत कन्या की भावज आकर सिल पर हल्दी पीसकर तीन बार वर-कन्या के पैरों पर छिड़कती है। इस कार्य हेतु उसे कुछ पैसे मिलते हैं। अंत में वर-कन्या को अग्नि फेरे हेतु खड़ा किया जाता है।

अग्नि-फेरे : वेद स्थापना के पश्चात पुरोहित द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ-साथ वर तथा वधू के भीतर अग्नि के फेरे लिए जाते हैं। वर तथा वधू वेदी के भीतर अग्नि तथा चार वेद को साक्षी मानकर प्रणय-सूत्र में बँधते हैं। वर-कन्या को खड़े होकर दाहिने से बायें चार बार अग्नि की प्रदक्षिणा करनी पड़ती है। इस समय वर अपने दाहिने हाथ को कन्या के कंधे पर रखे रहता है। प्रत्येक परिक्रमा के बाद वे टोकरियों के समीप खड़े हो

जाते हैं और कन्या का पिता तिल, दूब, दूध और कुमकुम आदि से उनके पैरों को पूजता है। ध्यातव्य है कि इस उपलक्ष्य पर चार फेरे लिए जाते हैं जिन्हें 'चार-लाई' कहा जाता है जो विवाह की मुख्य रस्म है। शेष फेरे वर के घर पर दाड़िन, कुंभ आदि के चारों ओर परिक्रमा करके पूरे किए जाते हैं, जिन्हें 'अठलाई' कहा जाता है।

अंततोगत्वा कहा जा सकता है कि गद्दी समुदाय का संबंध शैव संप्रदाय से है। यदि इनकी वैवाहिक पद्धति और संपन्न किए जाने वाले अभीष्ट धार्मिक संस्कारों की बात करें तो इनमें 'शिव-विवाह' का प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित होता है। ऐसा कोई भी संस्कार नहीं है जिसका संबंध भगवान शिव से नहीं है। शिव के अनुरूप लुआंचा (विवाह की पोशाक), कमर में नाग रूपी 'जौळ', सिर पर कैलाश रूपी सेहरा, 'लखणौत्तरी', 'हांदी', उबटन, नहौण देना, दूध भात खिलाना, जोगी (योगी) बनाना, सेहरे पर सूरज-चाँद धारण करना, वधू के घर डेरा डालना, लग्न, वेद फिरना, केवल तीन फेरे के बाद चौथे फेरे के उपरांत शेष फेरे वर के घर आकर दाड़ू (दाड़िन) की टहनी के चारों ओर घूमकर लेना शिव-विवाह की प्रतीति करवाता है।

हालाँकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कृतियों के आपसी संक्रमण, बाजारवाद एवं विदेशी सभ्यता और संस्कृति का अंधानुकरण करने के परिणामस्वरूप जनजातीय समुदाय अपनी लोकसंस्कृति से कटते जा

रहे हैं, जो नितांत चिंता का विषय है। अगर भविष्य में ये संस्कार और परंपराएँ कालकवलित हो जाएँगी तो जनजातीय समाज की पहचान नष्ट हो जाएगी। अतः नवयुवक-युवतियों को इस समृद्ध संस्कृति की अनुपालना करते हुए इस महान सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा बनकर 'शिव-पार्वती विवाह' का स्वयं साक्षी बनने का गौरव प्राप्त करना चाहिए।

आधुनिक कला का प्रतिमान : अमृता शेरगिल

अमृता शेरगिल... फरवरी की बर्फ-सी, जिसमें ठंड के साथ एक अजीब-सी ऊष्मा विद्यमान रहती है। बाहर से मनोहारी, भीतर से धीरे-धीरे पिघलती हुई। अमृता की छवि एक कलात्मक रचना के रूप में उभरती है। उसकी काव्यमय भाषा, सिद्धहस्त तूलिका एक अद्‌भुत कोमल व्यक्तित्व को जन्म देती प्रतीत होती है, जो बाहर से सुंदर सुडौल है, भीतर से खंडित, उलझन भरा और मुरझाया हुआ है।

अमृता की डायरी के अंशों में अद्‌भुत भाषा के साथ आकर्षक पोट्रेट प्रकट हुए हैं। 15 मार्च, 1924 को शिमला में उन्होंने इर्विन अंकल के बारे में लिखा है—

सुदर्शन वशिष्ठ

जन्म : 24 सितंबर, 1949, पालमपुर (हिमाचल)।

संप्रति : पूर्व उपाध्यक्ष/सचिव हिमाचल अकादमी तथा उप निदेशक संस्कृति विभाग।

संपादन एवं प्रकाशन : 125 से अधिक पुस्तकों का संपादन/लेखन। हिमाचल की संस्कृति पर विशेष लेखन में 'हिमालय गाथा' नाम से सात खंडों में पुस्तक शृंखला के अतिरिक्त संस्कृति व यात्रा पर 20 पुस्तकों के अलावा पाँच ई-बुक्स प्रकाशित।

पुरस्कार : 'व्यंग्य यात्रा सम्मान' सहित कई स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत। अमर उजाला गौरव सम्मान, हिंदी साहित्य के लिए हिमाचल अकादमी के सर्वोच्च सम्मान 'शिखर सम्मान' से सम्मानित।

संपर्क : मोबाइल— 9418085595

ईमेल— vashishthasudarshan@gmail.com

"इर्विन अंकल घर आए। उन्हें देखा तो ऐसा लगा जैसे किसी गुफा से कोई ज्ञानी तपस्वी सीधा हमारे घर चला आ रहा हो। यह तपस्वी तेजस्वी भी था। मॉम के दूर के रिश्ते का यह चचेरा भाई जिसके शब्दों में एक अलग ही नाद था। उन्होंने आते ही मॉम को बाँह में भर लिया। किसी झरने की तरह हँसने लगे।...उन्होंने हवा में हाथ फटकारे। लगा जैसे क्षण भर में ही उड़ने लगेंगे। उठे हुए हाथ पक्षी के पंखों की तरह लग रहे थे।"

इर्विन अंकल भी पहले चित्र बनाते थे। बाद में उन्होंने लगभग बीस भाषाएँ सीखीं और तिब्बत में लामाओं के पास रहे। इर्विन अंकल ने अमृता के मॉम और पापा से कहा—

"मैडम मेरी एटोनिटी और सरदार उमराव सिंह! लड़की के चित्रों में यहाँ की संस्कृति की गंध है। यह दैवी पौधा आपके यहाँ उगा है। इसका संवर्धन करो। उसकी कला विकसित होने दो। मैं उसके बारे में आश्वस्त हूँ।" इस पर अमृता ने मन-ही-मन अंकल का धन्यवाद किया और लिखा—

"धन्यवाद अंकल! आपके विश्वास को मैं टूटने नहीं दूँगी। मेरे अस्तित्व पर आशीर्वाद का हाथ हमेशा रहने दें। मेरे भीतर आपके द्वारा रोपा हुआ आत्मविश्वास का बीज अंकुरित होता रहेगा। मुझ पर विश्वास रखिए। मेरी आँखें अनायास भर आईं। अभी भी लिखते समय लग रहा है जैसे अक्षर पिघल रहे हों।"

भारत में आधुनिक कला की कर्णधार प्रसिद्ध चित्रकार अमृता शेरगिल शिमला में दो बार रहीं। उनके प्रसिद्ध चित्र यहीं बने। वे समरहिल में रेलवे स्टेशन से ऊपर 'होम' (Holme) नामक भवन में रहती थीं।

इस घर में बाद में एक कलाकार, पुष्करनाथ भी रहे। लगभग 1986 में एक बार भाषा संस्कृति विभाग हिमाचल प्रदेश की ओर से उनके चित्रों की प्रदर्शनी स्थानीय वाई.डब्ल्यू.सी.ए. में लगाई गई तो उनके इस घर में जाना हुआ। दोमंजिला लकड़ी से निर्मित यह कॉटेज सड़क के पास है। 'होम' का अर्थ टापू है। इस भवन को एक स्वीडिश इंजीनियर ने अपने रहने के लिए बनाया था।

भवन के साथ स्वीमिंग पूल और सुंदर बगीचा हुआ करता था। घर के प्रांगण में एक ओर छोटा-सा पुल था, जिसमें बतखें तैर रही थीं। हो सकता है कि यह वहीं स्वीमिंग पूल हो। कहा जाता है कि अमृता शेरगिल की माँ के इसमें डूबने के बाद इसे बंद करवा दिया गया। इस समय अब यह भवन हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के पास है। इसमें कार्यालय है और बहुत ही जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है।

"कहा जाता है कि शिमला में विदेशी माहौल होने के बावजूद अमृता बाहर जाने पर हमेशा साड़ी पहनती थीं। इनके चित्रों में भी साड़ी प्रायः देखने को मिलती है। अमृता की तूलिका से निकले चरित्र समाज के निम्न वर्ग से थे।"

यह सन् 1921 की बात है जब अमृता शेरगिल अपने माता-पिता के पास रहने आईं। अमृता के पिता उमराव सिंह शेरगिल एक संपन्न परिवार से संबंध रखते थे। इनके दादा ने अंग्रेज-सिख लड़ाई में सिखों का साथ दिया, अतः पैतृक गाँव 'मजीठा' में परिवार की संपत्ति ज़ब्त कर ली गई। सन् 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों का साथ देने पर इनके पुत्र सूरत सिंह को ज़मीन वापस दे दी गई। इनके छोटे पुत्र सुंदरसिंह मजीठिया ने चीनी की तीन मिलें लगाकर अपार संपत्ति अर्जित की, किंतु बड़े पुत्र उमराव सिंह शेरगिल अलग तरह के व्यक्ति थे। वे यूरोपीय तथा भारतीय पाँच भाषाओं के जानकार थे। इन्हें हंगेरियन मेरी एटोनिटी से प्रेम हो गया, जो सन् 1911 में महाराजा रणजीत सिंह की पौत्री के साथ पंजाब आई हुई थी। उमराव सिंह शेरगिल ने मेरी एटोनिटी से विवाह कर लिया और हंगरी चले गए।

अमृता का जन्म भी 03 जनवरी, 1913 को बुडापेस्ट, हंगरी में ही हुआ। इनकी एक दूसरी बहन का नाम 'इंदिरा' था जो इनसे दो साल छोटी थी। सन् 1921 में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान यह परिवार शिमला के इस घर में आ गया। अमृता शेरगिल उस समय आठ वर्ष की रही होंगी। उमराव सिंह शेरगिल ने अपने रहने के लिए समरहिल स्थित यह घर स्वीडिश इंजीनियर से खरीद लिया था। लकड़ी से निर्मित यह घर एक बहुत ही शांत वातावरण में अवस्थित था। अमृता पंजाबी पिता और हंगेरियन माँ की संतान थीं जिससे उनका आस-पास के बच्चों से कोई संपर्क नहीं बन पाया। अतः वह घर में ही अकेली रहती थीं। माँ उन्हें संगीत सिखाना चाहती थीं, अतः घर में ही पश्चिमी क्लासिक संगीत सिखाने की व्यवस्था की गई।

अमृता शेरगिल आरंभ से ही स्वतंत्र विचारों की स्वामिनी थीं। अतः वह संगीत के स्थान पर कला की ओर आकर्षित हुईं। कला के बाद वह वाटर कलर में काम करने लगीं। उसे घर में पढ़ाने आने वाला अध्यापक भी चित्रकार था। अमृता को अपने आयाम खोजने में समय लगा और अंततः उन्होंने अपनी एक राह खोजी और वह राह थी चित्रकार बनने की। अमृता की पेंटिंग्ज़ में उदास और तनावपूर्ण चेहरों वाली ग्रामीण युवतियों के अक्स आने लगे।

अमृता को 12 वर्ष की आयु में कॉन्वेंट स्कूल में डाल दिया गया, किंतु चर्च न जाने की स्थिति में उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। अब वह घर में संगीत, कविता तथा चित्रकला में व्यस्त रहने लगीं। सन् 1924 के लगभग अमृता को फ्लोरेंस में एक स्कूल में दाखिला मिल गया। सन् 1929 से 1934 के बीच पेरिस प्रवास पर जब 16 साल की वय में कला विद्यालय में प्रवेश लिया तो प्रोफेसर पेर वेलान इनके चित्र देखकर आयु के हिसाब से प्रौढ़ अनुभव देख प्रभावित हुए। पेरिस में आर्ट में प्रशिक्षण लेने से अमृता को रेखा और रंग में महारत हासिल हो गई। पेर वेलान की कक्षा में इन्होंने न्यूड मॉडल पर काम सीखा। उन्होंने मानवीय संवेदनाओं, भावनाओं का सहारा लेकर स्केच बनाने आरंभ किए। उन्हें एक सिद्धहस्ता कलाकार बनने की चाह थी।

बचपन से अमृता अंतर्मुखी थीं यानी शांत स्वभाव वाली थीं। पेरिस में परंपरा से जुड़ा कवच टूटा और नई मुक्त अमृता का जन्म हुआ। प्राध्यापक सिमोन से सीख कर अमृता ने उस दृष्टि से साक्षात्कार किया जिसके बिना लोग आँखें होते हुए भी अंधे होते हैं।

सन् 1934 में अमृता पुनः भारत लौटीं और 1938 तक शिमला में रहीं। कहा जाता है एक रात दोनों बहनों में झगड़ा हो गया। दोनों बहनें घर में अकेली थीं तो आपस में हुए झगड़े पर बहन इंदिरा ने आधी रात में अमृता को घर से निकाल दिया। वह रात को कुछ मील चलकर अपनी मित्र हेलन के घर पहुँचीं। बचपन में, माता-पिता के बीच मनमुटाव और माँ का स्वीमिंग पूल में डूब कर मरना, बहन से तकरार आदि कुछ घटनाएँ थीं जिनका अमृता पर प्रभाव पड़ा होगा।

शिमला के एकांत घर व आस-पास के आकर्षक और शांत वातावरण ने अमृता के मन पर विशेष प्रभाव डाला। यहाँ की जलवायु, परिवेश और आकर्षक भूदृश्य ने कलाकार पर अपना प्रभाव बनाया। वैसे भी शिमला उन दिनों समर कैपिटल था, जहाँ देश और विदेशों से लोग आया करते थे।

कहा जाता है कि शिमला में विदेशी माहौल होने के बावजूद अमृता बाहर जाने पर हमेशा साड़ी पहनती थीं। इनके चित्रों में भी साड़ी प्रायः देखने को मिलती है। अमृता की तूलिका से निकले चरित्र समाज के निम्न वर्ग से थे। ये चरित्र अपनी भावनाओं को छिपाने वाले, संवेदना से भरे हुए और तनावग्रस्त रहे हैं, जो इनके चेहरों पर स्पष्ट झलकता है। शिमला में आवास के इन चार वर्षों में अमृता ने महत्वपूर्ण चित्रों का निर्माण किया। इनमें प्रमुख 'चाइल्ड वाइफ', 'हिल मेन', 'हिल वोमेन', 'ब्रह्मचारी', 'स्टोरी टेलर', 'अछूत' तथा 'फल बेचने वाली' आदि हैं। इसके अलावा उनका 'सेल्फ पोट्रेट', 'न्यूड', 'वोमेन एट बाथ', 'ट्राइबल मेन', 'टू एलिफेंट्स' आदि चित्र प्रसिद्ध हैं। अमृता एक व्यावसायिक और मौलिक चित्रकार बनना चाहती थीं, जो दूसरों से भिन्न हो और यह उसने करके दिखा दिया। वह मौलिक, वास्तविक और स्थायी अनुभवों और संवेदनाओं की चित्रकार बनना चाहती थीं और यह उनके चित्रों से स्पष्ट झलकता है।

अमृता ने लिखा है कि जब मॉम का प्रेमी मार्सेल्ले अपने गाँव की पत्नी के पास सिसिली लौट गया तो मॉम बहुत रोई। मॉम उसके लिए पापा से झगड़ कर इंडिया छोड़ एथेंस आई, किंतु मॉम के मिन्नत करने पर भी मार्सेल्ले चला गया। अमृता ने लिखा है—

"जहाज़ से लौटते हुए मॉम मौन ही थीं। उस स्थिति में मैंने उनके कई चित्र बनाए, पर वह मुझे उजड़ी हवेली जैसी लग रही थीं। इंदिरा को सीने से लगाकर रोती थीं।"

यह इटेलियन शिक्षक मार्सेल्ले, अमृता को समरहिल शिमला के घर में चित्रकला सिखाता था।

01 दिसंबर, 1923 को अमृता ने लिखा है—

"पापा कॉन्फ्रेंस के लिए बनारस गए हैं। मैं और इंदिरा साथ-साथ माल रोड पर वर्षा की फुहारों को देख रही थीं। स्वेटर तथा ओवरकोट के बावजूद ठंड हड्डियों तक को ठिठुरा रही थी। अँधेरा घिर गया तो आया बोली—मिस्सी बाबा, चलो, वापस चलो।...हम दोनों सेसिल गईं। वे मार्सेल्ले के साथ नृत्य में तल्लीन थीं। उन्होंने सिर उसके कंधे पर टिकाया था। उसके हाथ मॉम की कमर में लिपटे थे।"

पति के साथ लड़ाई-झगड़ा चलता रहता था। पत्नी से बचाव के लिए सरदार जी टेरेस पर आ जाते और दूरबीन से खुद को ग्रह-तारों में उलझा देते।

मॉम का मार्सेल्ले के प्रति प्रेम और पापा के प्रति उपेक्षा ने नन्ही अमृता के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ा। पिता का भारतीय कला के प्रति प्रेम अमृता में भी आया। वे उसे सच्चिदानंद...सत्, चित और आनंद से उत्पन्न कला का मर्म समझाते। सरदार जी का ज्ञान विस्तार बहुत था। वे संन्यासी की तरह रहते थे। उन्हें संस्कृत, पर्शियन, उर्दू भाषाओं का ज्ञान था। पापा तथा मॉम की वृत्ति-प्रवृत्ति में बहुत विरोधाभास था। वे ग्रह-तारे-नक्षत्रों में खोए रहते तो मॉम भौतिक संसार में आकंठ डूबी रहतीं। पिता के बारे में अमृता ने लिखा है—"संन्यासी वृत्ति के तत्वचिंतक, तुलनात्मक धर्माध्ययन करने वाले अभ्यासक तथा सामाजिक स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले समाज सेवक।"

समाज में व्याप्त विसंगतियों, कुरीतियों, विवाह संस्था आदि के विरुद्ध जाकर अमृता ने एक अलग जीवनयापन किया और समाज की रूढ़ियों को तोड़ते हुए स्वच्छंदता की हद तक स्वतंत्र जीवन जिया। एक रचनाशील और नए आयामों की तलाश में उन्होंने परंपरागत जीवन को त्याग अपने ढंग से जीवन अपनाया जिसे किसी हद तक उच्छृंखल भी कहा गया। उन्होंने प्रसिद्ध कला समीक्षक कार्ल खंडालवाला को एक पत्र में लिखकर ये विचार प्रकट किए थे—

"वास्तव में, मेरे विचार से, धार्मिक कला समेत सभी कलाएँ यौन आनंद के कारण अस्तित्व में आई हैं (ऐसा यौन आनंद, जो मात्र शारीरिक हदों से ऊपर बहता है।"

पेरिस में अमृता को मिली 'मारी ल्यूसी' नाम की सहेली भी उसके मॉम के साथ झगड़े का कारण बनी। लाड़ से वह उसका निचला होठ चूसती थी, बालों में उंगलियाँ घुमाती थीं। उसने अमृता को जब मर्जी कपड़े उतारने का अधिकार दिया था। उसके बहुत से नग्न चित्र अमृता ने बनाए। वे दोनों साथ-साथ रहने लगीं तो साथ की लड़कियाँ फ़ब्तियाँ कसने लगीं। मॉम से भी जोरदार झगड़ा हो गया। अमृता ने लिखा है—

"...अब मैं बच्ची नहीं हूँ। मुझे भी समझ है। दो लड़कियों की माँ होते हुए भी तुम्हारे शरीर की आग अभी बुझी नहीं है। तुम उस जवान मार्सेल्ले के पीछे पागल हो गई थीं। मैं तो युवा हूँ। मेरा भी शरीर है। मेरी भी कुछ जरूरतें हैं। कुछ दैहिक भी।...मेरी तरह से जीने का मुझे हक़ है। इस विषय में तुमने और कुछ कहा तो मैं रात को पिगाल की सड़क पर खड़ी होकर वेश्या का व्यवसाय करने लगूँगी।"

अमृता के साथ उसकी माँ ने आखिरी धोखा किया जब 1932 में उसका विवाह युसुफ अली से करवा दिया जिसके पहले ही तीन विवाह हो रखे थे। युसुफ को गुप्त रोग भी था जो अमृता को लग गया। वह पुनः मारी ल्यूसी के पास आ गई।

अमृता शेरगिल भारतीय कला और मूर्तिकला से प्रभावित रहीं और भारत लौटने की चाह उनमें बराबर बनी रही। वे भारतीय कला की प्रशंसक रहीं। यद्यपि पिता उमराव शेरगिल नहीं चाहते थे कि वे भारत लौटें, तथापि वह 1934 में भारत लौट आईं और शिमला में अपने माता-पिता के साथ रहीं। उनका पंडित नेहरू के साथ भी पत्र व्यवहार रहा। नेहरू की आत्मकथा पर अमृता ने प्रशंसा भरा पत्र लिखा। उन्होंने लिखा कि वे सामान्यतः आत्मकथा को पसंद नहीं करतीं क्योंकि वे झूठी होती हैं। किंतु नेहरू की आत्मकथा मुझे पसंद है क्योंकि उन्होंने यह लिखा है कि...जब मैंने समुद्र को पहली बार देखा...जबकि दूसरे कहेंगे कि जब समुद्र ने मुझे पहली बार देखा...।

अमृता ने 05 फरवरी, 1932 को पेरिस में डायरी में लिखा है कि उसने आज तक लगभग साठ चित्र बनाए हैं जिन्हें लोग खरीदना भी चाहते हैं। मारी ल्यूसी का पोर्ट्रेट भी बनाया। एक रेखाचित्र 'ड्यूडिश' को देखकर बहन इंदिरा ने कहा था कि तुम्हारे इस सेल्फ पोर्ट्रेट में तुम पुरुष की नग्न देह पर खड़ी काली लगती हो...खुले केश, क्रोधित शिव, शक्तिविहीन शाव...तुम कालजयी लगती हो।

अमृता शेरगिल की पेंटिंग्ज ने बिक्री की दृष्टि से भारतीय महिला कलाकारों में अद्भुत स्थान कमाया। 'द ट्रिब्यून' में 09 अक्तूबर, 2015 को छपी एक खबर के अनुसार मार्च 2015 में हुई नीलामी में इनका दुर्लभ चित्र सेल्फ पोट्रेट 2.9 लाख डॉलर में बिका, जो एक नया रिकॉर्ड बना। यह सेल्फ पोट्रेट सन् 1931 में बनाया गया था जिसे इन्होंने कलाकार बोरिस तालिज्की को दिया था। इसकी नीलामी लंदन में अंतरराष्ट्रीय नीलामी हाउस सोदेबीज द्वारा की गई थी।

अमृता शेरगिल की मृत्यु 05 दिसंबर, 1941 को लाहौर में हुई, जबकि उनसे कला जगत को अभी और कलाकृतियों की अपेक्षा थी।

मातृभाषा में शिक्षा और शोध

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में कहा गया है—
"मातृभाषां परित्यज्य येऽन्यभाषामुपासते,
तत्र यान्ति हि ते यत्र सूर्यो न भासते।"

अर्थात् जो मातृभाषा का त्याग कर अन्य भाषा अपनाते हैं, वहाँ ज्ञानरूपी सूर्य का उदय नहीं होता।

प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणाली मनुष्य के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित थी। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का चिंतन, दर्शन, अध्यात्म एवं ज्ञान-विज्ञान सदियों से विश्व को प्रभावित करता रहा। न जाने कितने देशी और विदेशी दार्शनिकों ने नालंदा एवं तक्षशिला जैसे अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में अपने शोध कार्य संपन्न किए और संपूर्ण विश्व का मार्गदर्शन किया।

विवेक मिश्रा

जन्म : सीतापुर, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा : स्नातक एवं परास्नातक, लखनऊ विश्वविद्यालय; शोधार्थी, अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

प्रकाशन : 'हिंदूराष्ट्र प्रणेता वीर विनायक दामोदर सावरकर' पुस्तक का लेखन और 'आजादी@75 क्रांतिकारियों की शौर्यगाथा', 'भारत का अनकहा इतिहास' एवं 'आधुनिक भारत के भाग्यविधाता' पुस्तकों का संपादन। दैनिक जागरण, अमर उजाला जैसे समाचार पत्रों में निरंतर लेखन।

संपर्क : vivekgolumishra41296@gmail.com

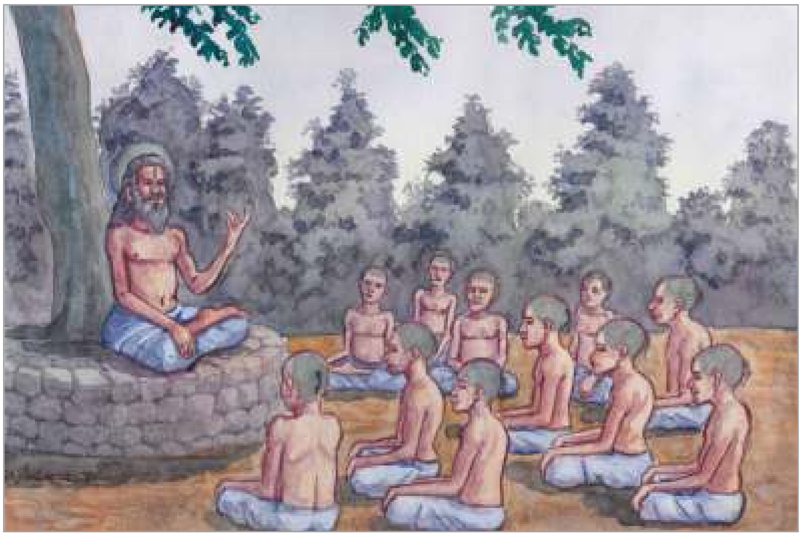

किंतु औपनिवेशिक भारत के दौरान लॉर्ड मैकाले ने इंडियन एजुकेशन पॉलिसी (1835) के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक जड़ों को खोखला करने का कार्य किया। दरअसल मैकाले की शिक्षा नीति का कार्य भारत में बौद्धिक संपदा को बढ़ावा न देकर केवल अंग्रेजी माध्यम से बाबुओं के एक नए वर्ग का निर्माण करना था, ताकि औपनिवेशिक भारत में अंग्रेजों की प्रशासनिक, राजनैतिक एवं कूटनीतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं में अध्ययन-अध्यापन कम होता चला गया। अंग्रेजी बाजार और उच्च वर्गों के कार्य-व्यवहार की भाषा होने लगी। हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में बोलना अथवा अभिव्यक्ति करना पिछड़ी एवं हीन भावना से ग्रसित होने लगा।

हरिजन सेवक में 09 जुलाई, 1938 को महात्मा गांधी ने लिखा कि—"जितना गणित, रेखागणित, बीजगणित, रसायन विज्ञान और ज्योतिष सीखने में मुझे चार साल लगे, अगर अंग्रेजी के बजाय गुजराती में पढ़ा होता तो उतना मैंने एक साल में ही आसानी से सीख लिया होता...अंग्रेजी माध्यम ने मेरे और मेरे कुटुंबियों के बीच, जो अंग्रेजी नहीं पढ़े थे, एक बड़ी खाई खड़ी कर दी। इस प्रकार मैं अपने ही घर में बड़ी तेजी के साथ अजनबी भी बनता जा रहा था..."

भारत सहित अनेक वैश्विक सर्वेक्षणों द्वारा सिद्ध हुआ है कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ती है जिससे उनके द्वारा अर्जित ज्ञान न केवल तुलनात्मक रूप से बेहतर होता है, बल्कि वे अन्य भाषाओं को सीखने के प्रति भी सक्षम हो जाते हैं। यहाँ तक कि स्कूली शिक्षा का माध्यम आवश्यक रूप से मातृभाषा ही होना चाहिए। वह कोई भी वस्तु, जो किसी व्यक्ति के मस्तिष्क की उपज हो,

जैसे—कोई शब्द, वाक्यांश, प्रतीक, डिजाइन, संगीत, काव्य, कलात्मक कार्य, खोज एवं आविष्कार जिसका कोई आर्थिक व सामाजिक विकास में महत्व हो, वह व्यक्ति की 'बौद्धिक संपदा' कहलाती है।

दरअसल मातृभाषा, भावात्मक जुड़ाव, बौद्धिक संपदा एवं राष्ट्र निर्माण का परस्पर अत्यंत गहरा संबंध होता है। बच्चा मातृभाषा की

"हमें यह बात समझनी होगी कि राजनीति से लेकर सामाजिक एवं तकनीकी समस्याओं तक का समाधान हमारी संस्कृति के गर्भ से ही प्रस्फुटित होगा। देश के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की विविधतापूर्ण संस्कृतियाँ समाहित और सम्मानित होकर एक-दूसरे से संवाद कायम करती हैं। हमारी संस्कृति हमारी भाषाओं में समाहित है। साहित्य, संगीत और कलाएँ उसे भिन्न-भिन्न रूपों में अभिव्यक्त करती हैं।"

ध्वनियों का अनुकरण करने के साथ-साथ उनकी भावनाओं को भी ग्रहण करता है। जब हम किसी बच्चे को मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करते हैं तो उसके अंदर अपनत्व का भाव जागृत होता है और अपने परिवेश को समझने का एक नया उत्साह उत्पन्न होता है। उसके मन-मस्तिष्क में सृजनात्मकता का विकास होता है। वह अपने समाज की आंतरिक, गूढ़ व अनन्य समस्याओं से अवगत होता है, चिंतन-मनन करता है और शोध कार्यों के माध्यम से स्वदेशी समाधान निकालने का प्रयास करता है। इस प्रकार विकसित हुई बौद्धिक संपदा से संपूर्ण राष्ट्र का पुनर्निर्माण किया जा सकता है। परिणामस्वरूप भारत विदेशी तकनीकों का अंधानुकरण करने के बजाय एक वैश्विक नेतृत्वकर्ता की भूमिका का निर्वाह करने लगेगा।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम ने स्वयं के अनुभव के आधार पर कहा था कि "मैं अच्छा वैज्ञानिक इसलिए बना क्योंकि मैंने गणित और विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की।" हम सब जानते हैं कि डॉ. अब्दुल कलाम द्वारा किए गए प्रयासों के माध्यम से ही आज भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान क्षेत्र वैश्विक पटल पर सफलता की ऊँचाइयों को छू रहा है।

हमें यह बात समझनी होगी कि राजनीति से लेकर सामाजिक एवं तकनीकी समस्याओं तक का समाधान हमारी संस्कृति के गर्भ से ही प्रस्फुटित होगा। देश के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की विविधतापूर्ण संस्कृतियाँ समाहित और सम्मानित होकर एक-दूसरे से संवाद कायम करती हैं। हमारी संस्कृति हमारी भाषाओं में समाहित है। साहित्य, संगीत और कलाएँ उसे भिन्न-भिन्न रूपों में अभिव्यक्त करती हैं। संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार के लिए यह आवश्यक है कि उस संस्कृति से जुड़ी महत्वपूर्ण भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन भी किया जाए।

वर्तमान में भारत सरकार द्वारा मातृभाषा में शिक्षा और शोध के माध्यम से बौद्धिक संपदा के निर्माण हेतु अनेक उपाय किए जा रहे हैं—

- एनसीईआरटी के अंतर्गत लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन (एलएलएफ दिल्ली) का उद्देश्य छात्रों की मातृभाषा को संजोते हुए उनके पूर्व ज्ञान को भी अभिव्यक्ति का मार्ग देना है। जब छात्रों को अपनी भाषा में अपनी बात कहने का अवसर मिलता है तो उनकी झिझक मिटती है, जो बच्चे पहले शिक्षक की किसी बात का जवाब नहीं देते थे, वे अब खुलकर जवाब देने लगे हैं।
- नई शिक्षा नीति 2020 में भारत की ज्ञान परंपरा, गौरव बिंदु, वैज्ञानिक दृष्टि तथा मातृभाषा में शिक्षा एवं शोध आदि को सम्मिलित कर एक भारत बोध पाठ्यक्रम हर स्तर पर समाविष्ट करने का प्रावधान है।

डॉ. सच्चिदानंद जोशी के अनुसार—"विगत 185 वर्ष से हम गुलाम और जर्जर करने वाली शिक्षा व्यवस्था से मुक्त होने के लिए छटपटा रहे थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) भारत के लिए सही मायनों में 'सा विद्या या विमुक्तये' का संदेश लेकर आई है।

- राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) की स्थापना, जिससे विश्वविद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शोध की संस्कृति को बढ़ावा मिले।

- आईआईटी बीएचयू द्वारा इंजीनियरिंग की पढ़ाई हिंदी में शुरू करने की पहल की गई है।
- भारत सरकार का दुनिया भर में हिंदी भाषा के पाठकों की सेवा के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र द्वारा उत्पादित हिंदी सामग्री की मात्रा और आवृत्ति बढ़ाने हेतु दो साल की प्रारंभिक अवधि के लिए मार्च 2018 में संयुक्त राष्ट्र सचिवालय के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर।

वर्तमान में मातृभाषा में शिक्षा और शोध के माध्यम से बौद्धिक संपदा के सृजन में अनेक चुनौतियाँ हैं—

- अटलबिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय (भोपाल), जिसमें इंजीनियरिंग की पढ़ाई हिंदी में होनी थी। शिक्षक व शिक्षण सामग्री उपलब्ध न होने के कारण बंद होने की कगार पर है।
- भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था एवं न्यायालय में अंग्रेजी का बोलबाला है। लेखक एवं वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय के अनुसार—'हिंदी कमजोर नहीं है, बल्कि अंग्रेजी ताकतवर बनाई जा रही है।'

- जब भी भारतीय भाषाओं अथवा राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की चर्चा की गई तो कुछ तथाकथित बुद्धिजीवियों एवं राजनैतिक लोगों द्वारा एक सुनियोजित विरोध का वातावरण बनाया जाता रहा है।
- व्यवसाय की भाषा के रूप में अंग्रेजी के दबदबे के कारण भारतीय भाषाविदों के लिए अवसरों की कमी है।
- रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने कहा था—"जब तक मातृभाषा को उच्च शिक्षा का माध्यम नहीं बनाया जाएगा, तब तक पाठ्य-पुस्तकें कैसे लिखी जाएँगी? नई शब्दावली कैसे बनेगी? भाषा का विकास उसके प्रयोग से होता है।"

उपर्युक्त चुनौतियों के समाधान के लिए हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है—

- 1950 के दशक में गठित वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग का पुनर्गठन किया जाए ताकि हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाएँ एक-दूसरे की शब्दावली को अपने में समायोजित कर सकें।
- जन-भागीदारी के माध्यम से शिक्षाविदों द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं में सरल एवं सुस्पष्ट शिक्षण सामग्री का निर्माण किया जाए।
- न्यायालय व लोक सेवा सहित अन्य सरकारी व्यवस्थाओं में मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए स्थानिकता पर आधारित एक समग्र नीति का निर्माण किया जाए।
- हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में शोध कार्य हेतु शैक्षणिक सहयोग, आर्थिक प्रोत्साहन तथा रोजगार की सुनिश्चितता उपलब्ध कराई जाए।
- हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन को प्रोत्साहित किया जाए ताकि स्वदेशी तकनीकों का विकास हो और भारत एक विकसित राष्ट्र के रूप में उठ खड़ा हो।
- भारतीय भाषाओं को तकनीकी और डिजिटल माध्यमों के साथ जोड़कर राष्ट्रीय स्तर पर समन्वयात्मक बनाया जाए। साथ ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उनके प्रोत्साहन के प्रयास किए जाएँ।

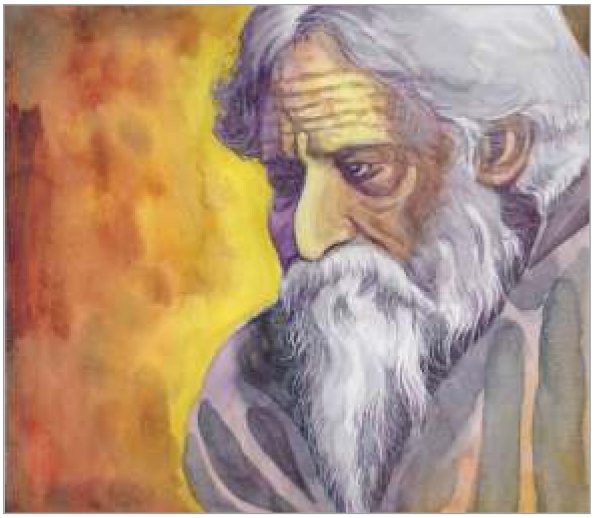

निष्कर्ष रूप में यदि हम चाहते हैं कि भारत अपनी विश्वगुरु की पदवी को पुनः धारित करे, तो हमें अपनी संस्कृति में रची-बसी भारतीय भाषाओं को संवर्धित करके अध्ययन-अध्यापन तथा शोध कार्य को बढ़ावा देना होगा, ताकि भारतीय राजनीति से लेकर आर्थिक क्षेत्र तक और तकनीक से लेकर अध्यात्म तक बौद्धिक संपदा का सृजन कर सकें और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सहायक हों।

तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू ने अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर कहा था—"भाषाई विविधता सदैव ही हमारी सभ्यता का आधार रही है। हमारी मातृभाषाएँ सिर्फ संवाद का ही माध्यम नहीं हैं, बल्कि हमें हमारी विरासत से जोड़ती हैं, हमारी पहचान को परिभाषित करती हैं। हमें प्राथमिक शिक्षा से लेकर प्रशासन तक, हर क्षेत्र में मातृभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए। अपने विचारों, अपने भावों को रचनात्मक रूप से अपनी भाषा में अभिव्यक्त करना चाहिए ताकि एक नए भारत की संकल्पना साकार रूप ले सके।"

पुस्तक जिस पर डाका पड़ा

सन् 1900 के बाद स्वाधीनता का बिगुल चहुँओर बज उठा। उस समय बंगाल क्रांतिकारियों का गढ़ था क्योंकि पराधीन भारत की राजधानी कलकत्ता थी। सन् 1906-07 में अंग्रेजों ने, निकृष्टतम राजनीति के तहत, हिंदू-मुसलमानों में जातिगत घृणा के बीज बोए और बंगाल को चीर कर दो टुकड़ों में बाँट दिया। सन् 1912 में अंग्रेज अपनी राजधानी कलकत्ता से दिल्ली उठा ले आए। उन्होंने 1922 में गांधी जी को जेल में डाल दिया। अंग्रेजों ने हिंदू-मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को भड़का कर दंगे करवाए। उनकी नीति थी—'फूट डालो और शासन करो।'

स्वाधीनता आंदोलन की सफलता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा अब बन गई थी—हिंदू-मुस्लिम घृणा। हिंदू-मुसलमान सदियों से इस देश में भाईचारे की भावना से रहते आए थे। अंग्रेजों की शासकीय भ्रष्टता ने अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए हिंदू और मुसलमानों के बीच फूट के घृणास्पद बीज बो दिए थे। ऐसे समय में आवश्यकता थी एक ऐसे प्रामाणिक दस्तावेज की जो अंग्रेजों के मुखौटे को हटाकर उनकी नंगी तस्वीर पेश कर सके।

सन् 1924 में उत्कृष्ट देशभक्त पंडित सुंदरलाल ने हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य की तह तक पहुँचने की चेष्टा प्रारंभ कर दी थी। जैसे-जैसे उनका अध्ययन और मनन इस दिशा में बढ़ता गया, उनके समक्ष अंग्रेजों के कुशासन की आंतरिक नीति और देश की सांप्रदायिक समस्या के साथ उनके संबंध उजागर होते गए।

एक वर्ष तक पंडित जी ने ब्रिटिश शासन के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ मेजर बामन दास बसु तथा डॉ. तारा चन्द्र जैसे विद्वानों द्वारा प्रणीत तत्संबंधी साहित्य तथा अन्य अनेक प्रामाणिक ऐतिहासिक पुस्तकों और दस्तावेजों का गहन अध्ययन किया। इसके बाद पुस्तक-लेखन प्रक्रिया प्रारंभ हुई।

पंडित जी के तीन वर्ष से अधिक के अथक परिश्रम का फल 'भारत में अंग्रेजी राज' ग्रंथ के प्रणयन में प्रस्फुटित हुआ। आश्चर्यजनक, किंतु सत्य यह है कि 1000 पृष्ठों से अधिक कलेवर वाली इस पुस्तक का एक भी अक्षर लेखक ने अपने हाथ से नहीं लिखा। पूरी पुस्तक पंडित जी ने बोलकर लिखवाई जो उनकी मेधा शक्ति का चमत्कार है। इलाहाबाद के पंडित विश्वंभर नाथ पाण्डेय ने पांडुलिपि का हस्तलेखन किया। पंडित सुंदर लाल स्वयं गृहविहीन बटोही थे। उनकी पूरी सृजन-साधना उनके अग्रज-सम क्रांतिकारी बाबू नित्यानंद चटर्जी की गृह-छाया में हुई।

'भारत में अंग्रेजी राज' नामक पुस्तक प्रकाशित होते ही देशव्यापी चर्चा का विषय बन गई। 2000 प्रतियों का प्रथम संस्करण 18 मार्च, 1928 को प्रकाशित हुआ। पुस्तक-प्रणयन के समय ही इसे लेकर अंग्रेजों में काफी खलबली मच गई थी और कदाचित पुस्तक-जगत के इतिहास में यह पहला

सुधीर निगम

जन्म : 1937, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश।

प्रकाशन : कहानी, लेख, उपन्यास, अनुवाद और कविताओं के लेखन में प्रवृत्त। अभी तक आठ उपन्यास, दो लेख संग्रह, तीन अनुवाद की पुस्तकें तथा छह अन्य पुस्तकें प्रकाशित। 350 आलेख, कहानी और कविताएँ प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित।

संपर्क : मोबाइल— 9839164507

ईमेल— nigam_sudhir37@rediffmail.com

राष्ट्रीय गौरव ग्रंथ था जिसकी जब्ती का निर्णय उसके प्रकाशन के पूर्व ही सरकार द्वारा ले लिया गया।

पुस्तक का मुद्रण एक ही प्रेस द्वारा नहीं किया गया था। प्रकाशन के पूर्व ही जब्ती से बचाव के लिए पुस्तक को विभिन्न नगरों में, छोटे-छोटे भागों में छापने का निर्णय लिया गया। पुस्तक का कुछ भाग कानपुर के तत्कालीन ब्राह्मण प्रेस में छापा गया। कानपुर के बाबू देवी प्रसाद निगम ने, जो उस समय ब्राह्मण प्रेस में 'कम्पोजीटर' थे, एक साक्षात्कार में बताया कि उन्होंने पुस्तक के 32 पृष्ठ 'कम्पोज' किए थे। इन पृष्ठों की सामग्री कहाँ से मिली थी, इस संबंध में वह कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं दे सके।

कदाचित पुस्तक पूर्ण रूप से इलाहाबाद से ही प्रकाशित व वितरित की गई। वहीं से तीन दिन के अंदर पुस्तक की 1700 प्रतियाँ पाठकों के पास पहुँचा दी गई। 300 प्रतियाँ रेल या डाकखाने द्वारा भेजी जा रही थीं कि 22 मार्च, 1929 को अंग्रेज सरकार द्वारा जारी जब्ती की आज्ञा लेकर पुलिस प्रकाशक के कार्यालय में जा धमकी। रेल और डाकखाने से जा रही 300 पुस्तकें तो जब्त कर ली गईं और शेष 1700 पाठकों के पते लेकर पुलिस ने पूरे देश में सैकड़ों तलाशियाँ लीं जिसमें पुलिस को आंशिक सफलता ही मिली। 1972 में बुलंदशहर के एक सज्जन के पास मैंने एक ऐसी जीर्ण-शीर्ण प्रति देखी। कहा जाता है कि पुलिस तलाशी के दौरान एक छप्पर में छिपाई गई थी और वहाँ वर्षों पड़ी रही। ऐसी जब्ती और उनके बाद देशव्यापी तलाशी का उदाहरण किसी अन्य पुस्तक के संबंध में उपलब्ध नहीं है।

'भारत में अंग्रेजी राज' की जब्ती और तलाशी के विरुद्ध देश भर के सभी समाचार-पत्रों और प्रमुख नेताओं ने आवाज उठाई। सबसे मुखर विरोध था महात्मा गांधी का। 'यंग इंडिया' में प्रकाशित अपने वक्तव्य में उन्होंने पुस्तक की जब्ती को 'दिन दहाड़े डाका' की संज्ञा दी और देशवासियों का आह्वान किया कि वह तलाशी के अपमान को सहकर भी पुस्तक को बचावें। पुस्तक को बचाने के संबंध में सेठ जमना लाल बजाज के प्रयास देशभक्ति का अनुपम उदाहरण माने जाते हैं।

जब्ती होते हुए भी महात्मा गांधी ने पंडित जी से पुस्तक के एक सेट की माँग की। 'भारत में अंग्रेजी राज' को पहले महादेव भाई ने पढ़ा फिर गांधी जी ने। पढ़ने के बाद गांधी जी ने 'यंग इंडिया' में पुस्तक के विषय में कई संपादकीय लेख लिखे और उसे 'अहिंसा के प्रचार और प्रसार' का एक प्रशंसनीय प्रयत्न बताया। गांधी जी ने लोगों को सलाह दी कि जब भी अंग्रेजी सरकार के कानून तोड़कर सत्याग्रह करने का अवसर आए 'भारत में अंग्रेजी राज' के महत्वपूर्ण अंशों की नकल कर या छाप कर और उसका खुला वितरण कर लोग जेल जा सकते हैं। इस आह्वान के बाद, सत्याग्रह के दिनों में, कई प्रांतों में, विशेषकर तत्कालीन मध्य प्रांत में लोग इसी पुस्तक पर सत्याग्रह कर जेल गए।

जब्ती के विरुद्ध इलाहाबाद उच्च न्यायालय में मुकदमा चलाया गया। लेखक के वकील सर तेज बहादुर सप्रू ने कहा था कि पुस्तक में एक भी ऐसी घटना वर्णित नहीं है जिसकी सत्यता के बारे में कोई प्रश्न उठाया जा सके। सरकारी वकील श्री बाजपेयी ने श्री सप्रू के इस कथन की सत्यता को स्वीकार करते हुए न्यायालय से कहा, "चूँकि इस पुस्तक में सारी बातें सत्य हैं इसलिए यह अधिक खतरनाक है।" इस प्रकार पुस्तक की प्रमाणित सत्यता के कारण पंडित जी मुकदमा हार गए।

10 अप्रैल, 1937 को पंडित सुंदर लाल ने तत्कालीन युक्त प्रांत की सरकार को जब्ती की आज्ञा निरस्त करने के लिए लिखा। अंग्रेज गवर्नर ने अपनी सहमति नहीं दी। पंडित जी ने यह सूचना गांधी जी को दी। गांधी जी ने पत्र लिखा—"भाई सुंदर लाल, 'बेन' तो हटना ही चाहिए। धीरज रखो। गवर्नर क्या बाधा डाल रहा है, मुझे लिखो।"

पंडित जी ने यह पत्र ज्यों का त्यों अधिकारियों के पास भेज दिया। 15 नवंबर, 1937 को तत्कालीन युक्त प्रांत की सरकार ने 23 मार्च, 1929 वाली जब्ती की आज्ञा निरस्त कर दी। उसके बाद दूसरे प्रांतों में भी रोक हटा दी गई।

पुस्तक जब्ती की आज्ञा निरस्त होते ही दूसरा संस्करण निकालने का निर्णय किया गया। कुछ प्रकाशकों ने पंडित जी को रॉयल्टी की बड़ी-बड़ी रकमों के बदले में प्रकाशनाधिकार लेने चाहे।

परंतु पंडित जी ने पुस्तक देश-प्रेम की भावना से प्रेरित होकर लोक-कल्याण के लिए लिखी थी। उन्हें आर्थिक लोभ न था। अतः उन्होंने निश्चय किया कि जो प्रकाशक सबसे कम मूल्य में पुस्तक निकालेगा, प्रकाशनाधिकार उसे ही दिया जाएगा।

इस प्रकार दूसरा संस्करण ओंकार प्रेस, इलाहाबाद के पंडित त्रिवेणी नाथ बाजपेयी ने निकाला। उस समय पुस्तक की तीन जिल्दों का मूल्य मात्र सात रुपये था। 1000 से अधिक बड़े पृष्ठों वाली इतने कम मूल्य में प्रकाशित होने वाली यह प्रथम पुस्तक थी। दूसरे संस्करण की 10,000 प्रतियाँ छपने से पूर्व ही प्रकाशक को 14,000 से अधिक के 'ऑर्डर' मिल चुके थे।

"अकबर के जमाने में किताब के बारे में किसी को पता नहीं चला, परंतु जहाँगीर के जमाने में मालूम हो गया और जहाँगीर को उसकी एक प्रति भी मिल गई। उसने उसे पढ़ा और हुक्म दिया कि 'मुल्ला ने मेरे बाप को बदनाम किया है इसलिए (मुल्ला के तब तक मर जाने के कारण) इसके बेटों को कैद करो और घर लूट लो।'"

'भारत में अंग्रेजी राज' नामक ग्रंथ स्वाधीनता संग्राम में बहुचर्चित होकर, देश-प्रेमियों को नई दिशा देकर अब वर्तमान तथा भावी पीढ़ी के लिए ऐतिहासिक गौरव ग्रंथ बन गया है।

पुस्तक का तीसरा संस्करण स्वाधीन भारत में 1960 में भारत सरकार ने प्रकाशित किया। प्रति तीन-चार वर्षों के अंतराल में नए संस्करण बराबर प्रकाशित हो रहे हैं। यह अपने आप में अकाट्य प्रमाण है कि यह पुस्तक देश की स्वाधीनता के पश्चात भी लोकप्रिय ऐतिहासिक दस्तावेज है।

'भारत में अंग्रेजी राज' अकेली पुस्तक नहीं है जिस पर 'दिन दहाड़े डाका' पड़ा हो। ऐसी बहुतेरी पुस्तकें हैं। यहाँ सिर्फ एक उद्धरण देकर बात खत्म करेंगे। चलिए चार सौ साल पहले चलते हैं। मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूँनी (1540-96) अपने समय के महान विद्वान और कलम के जबरदस्त धनी व्यक्ति थे। उन्होंने बहुत लिखा और ऐसा लिखा जो किसी भी पुस्तकालय के लिए महार्ध आभूषण हो सकता है। शमशुल-उल्मा मुहम्मद हुसैन आजाद बदायूँनी के विरोधी थे, पर उन्होंने भी उनकी योग्यता को स्वीकार करते हुए लिखा है—"राज्य की साधारण क्रांतियों और सैनिक आशियानों से कोई भी व्यक्ति परिचित हो सकता है, लेकिन राज्य के स्वायी और राज्य के स्तंभों में से हरेक के चाल-चलन, उनके गुप्त और प्रकट भेदों से जितने परिचित मुल्ला थे, इतना दूसरा न होगा। इसका कारण यह है कि अपनी बहुज्ञता और परिज्ञता के कारण अकबर के एकांत निवास और दरबार में वह हमेशा पास में जगह पाते थे, परंतु वह अकबर के काफिराना तौर-तरीकों से नाराज थे। इसलिए जो कुछ हुआ, उसे उन्होंने साफ-साफ लिख दिया। उनका इतिहास 'मुतरिवबुत तबारीख' (इतिहास-संग्रह) अकबर-युग की एक सच्ची तस्वीर है। उनका दुर्भाग्य यही रहा कि वह जमाने के मिजाज से अपना मिजाज न मिला सके।" अतः अकबर के जमाने में अपनी पुस्तक उन्होंने चुपचाप लिखी। यह निश्चित था कि उसकी भनक अगर अकबर और उसके दरबारियों को लगती तो मुल्ला की खैरियत नहीं थी। उन्होंने उसे बहुत जतन से छिपाकर रखा।

अकबर के जमाने में किताब के बारे में किसी को पता नहीं चला, परंतु जहाँगीर के जमाने में मालूम हो गया और जहाँगीर को उसकी एक प्रति भी मिल गई। उसने उसे पढ़ा और हुक्म दिया कि 'मुल्ला ने मेरे बाप को बदनाम किया है इसलिए (मुल्ला के तब तक मर जाने के कारण) इसके बेटों को कैद करो और घर लूट लो।' मुल्ला बदायूँनी के वारिस गिरफ्तार होकर आए। उन्होंने दलील दी, "हम तो उस समय बच्चे थे, हमें इसकी खबर नहीं थी।" उन्होंने जमानत दी कि हमारे पास से यदि पुस्तक निकले, तो चाहे जो सजा दी जाए। पुस्तक विक्रेताओं से भी मुचलके लिए गए कि न वह इस इतिहास को खरीदें, न बेचें। खफी खाँ ने शाहजहाँ से मुहम्मदशाह के जमाने तक की प्रायः एक सदी को देखा था। वह कहता है कि सारी कड़ाई के रहते भी राजधानी में पुस्तक-विक्रेताओं की दुकानों पर सबसे ज्यादा तारीफ बदायूँनी की ही नजर आती थी।

एक आधुनिक टिप्पणी

सुंदरलाल की पुस्तक 'भारत में अंग्रेजी राज' को अंग्रेजी सरकार के खिलाफ समझकर उसे प्रतिबंधित कर दिया गया था। पुस्तक अंग्रेजों की बखिया उधेड़ती है, पर सुंदरलाल इतिहासकार नहीं थे। मेजर बसु की पुस्तक का सहारा लेकर आधे-अधूरे उदाहरणों के सहारे उन्होंने अंग्रेजों के जालिमाना राज को हिंदी में जनता के सामने रखा। मान लिया जाए कि अंग्रेजों के खिलाफ संघर्षरत मध्यमवर्ग का आक्रोश बढ़ाने में इस पुस्तक ने भूमिका निभाई, पर स्वतंत्रता के बाद उसे फिर से प्रकाशित करने के पीछे सरकार का क्या मंतव्य हो सकता था? यदि यह पुस्तक अनुपलब्ध थी तो उसे उपलब्ध कराने में सरकार की विशेष रुचि क्यों? भगत सिंह के लेख इसी तरह क्यों प्रकाशित नहीं किए गए? सुंदरलाल की पुस्तक की कुछ प्रतियाँ प्राप्य थीं जो पुस्तकालयों में मिल जातीं। भारत के वर्तमान इतिहासकारों की क्षमता पर विश्वास करने की आवश्यकता थी, जो उस समय की सही तस्वीर प्रस्तुत करने में लगे हुए हैं। ऐसा विकृत इतिहास जनता का हित नहीं करता, उस जनता का भला नहीं करता जिसके हित को ध्यान में रखकर वह लिखा गया था।

—लाल बहादुर वर्मा

(उनकी पुस्तक 'इतिहास के बारे में' से उद्धृत)

राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

ऐ संत महंतो! जाग उठो क्यों सोए आसनमांही? सोने का समय नहीं भाई! सब चेलों को मंत्र बताकर, कर दो अपनी सेना। धर्म के खातिर जान माल को, अर्पण करो सहाई।

राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज अपने सभी संत मित्रों को, मंत्र बताकर अपने चेलों को अर्थात् अनुयायियों को सेना निर्माण कर अंग्रेजों को टक्कर देने का आह्वान करते हैं। राष्ट्र को अध्यात्म के मार्गदर्शन का और धर्म को जीवित रखने का अलौकिक कार्य संत करते हैं। जब भी राष्ट्र पर संकट आया तब अनगिनत संतों ने राष्ट्र प्रथम की भावना से देश को बचाने के लिए मार्गदर्शन करने का, शस्त्र उठाने का अद्वितीय कार्य किया है। अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में एक सच्चा संत किस प्रकार से आजादी प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता है, इसका

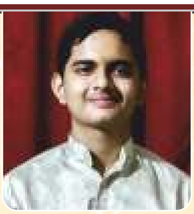

धृव सचिन पटवर्धन

जन्म : सतारा, महाराष्ट्र

शिक्षा : 12 (वाणिज्य)

'मी सावरकर' वक्तृत्व स्पर्धा का महाविजेता होने के कारण सावरकर आत्मार्पण दिन के उपलक्ष्य में अंडमान सेल्युलर जेल में होने वाले कार्यक्रम में वक्ता के रूप में शामिल हुए। आजादी के अमृत महोत्सव के निमित्त आयोजित प्रधानमंत्री युवा मेंटरशिप योजना में 75 लेखकों में से चयनित।

संपर्क : मोबाइल– 9021925347

ईमेल– dspkirtan@gmail.com

मूर्तिमंत उदाहरण है 'राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज'।

30 अप्रैल, 1909 को महाराष्ट्र के अमरावती जिले में स्थित 'यावली' ग्राम में तुकडोजी महाराज अर्थात 'माणिक' का जन्म हुआ। माणिक की माताजी 'मंजुळा' बहुत सीधी-साधी और दयालु थीं। पिता बंडोजी दर्जी थे। उन्हें मारिजुआना (गांजा) और तमाशा (नौटंकी जैसी मराठी लोककला) का शौक होने की वजह से, माणिक के घर में गरीबी थी। दरिद्रता के बावजूद घर का धार्मिक माहौल, भगवान पांडुरंगजी की भक्ति और संत ज्ञानेश्वर महाराज लिखित ज्ञानेश्वरी के निरंतर चिंतन और पाठ आदि संस्कारों की वजह से माणिक को भगवान में और उनके नाम में प्रेमभाव उत्पन्न हुआ। माणिक के भाग्य से उसे आठ-नौ साल की उम्र में ही महान सत्पुरुष समर्थ आडकुजी का अनुग्रह मिला। भारतीबुवाजी ने छंद गायन और हनवतीजी ने माणिक को खंजिरी बजाना सिखाया। माणिक भावपूर्णता से 'खंजिरी भजन' गाने लगे। लोग माणिक के सुमधुर भजन सुनकर कहते, "बेटा गाओ, तुम गाओगे तो हम तुम्हें रोटी का तुकड़ा देंगे।" रोटी के तुकड़े के लिए गानेवाला इसलिए नाम पड़ा 'तुकड्या'। लोग उनका 'माणिक' नाम भूल गए और 'आडकुजी का शिष्य तुकडोजी' के नाम से अब उन्हें पहचानने लगे।

बचपन से होने वाले धार्मिक और आध्यात्मिक संस्कारों के कारण तुकडोजी ने 13-14 वर्ष की उम्र में ही भगवद् प्राप्ति के लिए घर छोड़ दिया। घूमते-घूमते 'रामटेक' के जंगल में वो आ गए। ध्रुव, प्रह्लाद की तरह मैं भी भगवान को पाना चाहता हूँ। ऐसे विचारों से प्रेरित होकर तप करते समय उनके सामने योगीराज प्रकट हुए। उन्होंने माणिक को योग सिखाया। यम नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, अपरिग्रह, ध्यान, धारणा और समाधि अष्टांग योग का अभ्यास कर माणिक सुनहरी कांतिवाला सिद्धयोगी हो गया। लोग अब उन्हें 'देवबाबा' कह कर पुकारने लगे।

गुरुजनों के आशीर्वाद, भगवान की कृपा और सुमधुर स्वयंरचित भजनों की वजह से महाराष्ट्र के विदर्भ प्रांत में वह लोकप्रिय होने लगे। साफ-सफाई करना, फूलों-फलों के पेड़ लगाना, भगवान के लिए भजन गाकर उनकी सेवा करना, नाम सप्ताहों का आयोजन और लोगों को मार्गदर्शन कर तुकडोजी अपना जीवन व्यथित कर रहे थे। बहुत सारे लोग अब उनको पहचानने लगे। आर्थिक संकट के कारण सालबर्डी में आयोजित रुद्र यज्ञ में जब बाधाएँ आने लगीं, तब डेढ़ आने की खंजिरी, कुर्ता और धोती इतनी ही संपत्ति होने वाले इस महान व्यक्ति ने केवल 19 दिनों में 26,920 रुपये इकट्ठा किए। सालबर्डी का अभूतपूर्व यज्ञ हजारों लोगों की मौजूदगी में संपन्न हुआ। पर यह घटना तुकडोजी महाराज के लिए एक संकट, पर अंततः स्वतंत्रता संग्राम में कार्य करने के लिए प्रेरित करने वाली साबित हुई।

> “खुद की उन्नति अभी महत्वपूर्ण नहीं, राष्ट्र के लिए कार्य कर लोगों को आजादी के मार्ग पर जाने के लिए प्रोत्साहित करना जरूरी है, यह तुकडोजी महाराज ने जाना और राष्ट्रमुक्ति के लिए उन्होंने कमर कसी। अंग्रेजों के क्रूर शासन में ऊँच-नीच, कदाचार और अज्ञान से कुचले हुए सभी भारतवासियों को तुकडोजी कहते– ‘उठो और अंग्रेजों को टक्कर दो, यह सोने का नहीं, उठकर लड़ने का समय है।’”

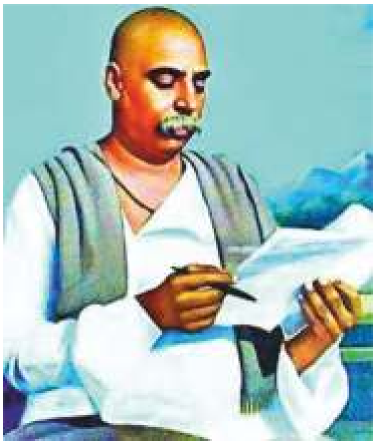

“विज्ञान के जमाने में इस तरह के धार्मिक यज्ञ का आयोजन साधन संपत्ति का व्यय है।” ऐसे मतवाले धर्म सुधारकों ने महात्मा गांधीजी से तुकडोजी महाराज के खिलाफ शिकायत की। इस शिकायत की वजह से महात्माजी और तुकडोजी महाराज का परिचय हुआ। कुछ दिन महात्माजी के साथ गुजारने के बाद, स्वतंत्रता संग्राम के मुखिया किस तरह से विचार करते हैं, यह तुकडोजी महाराज को करीब से देखने का मौका मिला। महात्माजी को भी तुकडोजी महाराज का संगठन कौशल्य, जनमानस में उनका प्रभाव और उनकी समझ, उनकी लोकप्रियता आदि का महत्व समझ में आया। महात्माजी की प्रेरणा से, तुकडोजी महाराज आजादी के संग्राम में कार्य करने लगे।

वैसे देखा जाए तो समर्थ आडकुजी और रामटेक के जंगलों में मिले योगीराज जी के आशीर्वाद से सफल हुआ ‘आत्मोद्धार’ का उच्चतम मार्ग छोड़कर इस सांसारिक मार्ग को स्वीकार करने की तुकडोजी महाराज को कोई जरूरत नहीं थी। पर हमारी भारतीय संस्कृति हमें ‘मैं’ का नहीं, ‘हम’ का विचार करना सिखाती है। खुद की उन्नति अभी महत्वपूर्ण नहीं, राष्ट्र के लिए कार्य करके लोगों को आजादी के मार्ग पर जाने के लिए प्रोत्साहित करना जरूरी है, यह तुकडोजी महाराज ने जाना और राष्ट्रमुक्ति के लिए उन्होंने कमर कसी। अंग्रेजों के क्रूर शासन में ऊँच-नीच, कदाचार और अज्ञान से कुचले हुए सभी भारतवासियों को तुकडोजी कहते–‘उठो और अंग्रेजों को टक्कर दो, यह सोने का नहीं, उठकर लड़ने का समय है।’ भारत माता को उसका खोया हुआ सम्मान, संस्कृति पुनः प्राप्त करने के लिए, भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए महाराजजी ने अपना जीवन समर्पित किया। अंग्रेजों को भारत से भगाकर, स्वतंत्रता पाने का एक ही उपाय, तुकडोजी महाराज को दिख रहा था “राष्ट्रप्रेमी लोगों का संगठन”। आम आदमी के जीवन में आने वाली समस्याओं से जुड़े नमक सत्याग्रह, जंगल सत्याग्रह जैसे आंदोलनों से महात्माजी ने स्वतंत्रता संग्राम को सर्वसमावेश किया था। ऐसे ही तुकडोजी महाराज ने जनमानस में पीढ़ियों से चला आ रहा भजन आदि लोकसंगीत के प्रति रुचि का विचार किया। उन्होंने उनके सभी गुणों का, भजनों का, सुमधुर आवाज का, साहित्यिक प्रतिभा का उपयोग लोगों के मन में स्वतंत्रता की अग्नि प्रज्वलित करने के लिए किया। उनके लेखन कौशल का प्रयोग कर उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के लिए गीत, भजन लिखे। महाराजजी ने स्वतंत्रता सेनानियों का आह्वान किया–

“उठो अब आर्य के पुत्रो! पुकारे सोच भारत की।
करो सब संघटन अपना, मचाओ न यह मत मत की।
गुलाम अब नहीं होना, हमारे प्रिय भारत में।
लगा यह मुँह को काला, खबर सब सोच लो गत की।”

सिर्फ डेढ़ आने की खंजिरी लेकर वो गाँव-गाँव जाकर लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन में सहभागी होने को कहते। आरती मंडल, भजन मंडल स्थापित कर भजनों के गायन द्वारा लोगों को राष्ट्रभक्ति का अमृत पिलाते। युवकों को व्यायाम का महत्व समझाकर राष्ट्र सुरक्षा के लिए कटिबद्ध होने को कहते। बालकों को भारतीय संस्कार मिले, इस हेतु बालक संस्कार केंद्र चलाते। अपने वक्तृत्व कौशल से संबोधित करके स्वतंत्रता, समानता जैसे अनेक विषय लोगों को समझाते। सामुदायिक प्रार्थना

उनका मनपसंद कार्यक्रम था। प्रार्थना के लिए लोग जब साथ आते तो उनको राष्ट्रप्रेम सिखाना और आसान हो जाता। सूत कताई के माध्यम से स्वदेशी और उद्योग विकास को बढ़ावा देते थे। अपनी सभी क्षमताओं का, कला-गुणों का उपयोग पैसे एवं प्रतिष्ठा के लिए नहीं, सिर्फ और सिर्फ राष्ट्रोत्थान के लिए करने वाले तुकडोजी महाराज एक सच्चे संत थे। महाराजजी का भजन गायन बड़ा ही प्रभावी था। नियमों को कट्टरता से निभाने वाले महात्माजी ने महाराजजी के दो भजन सुनकर सोमवार का मौनव्रत तोड़कर 'और कहिए महाराज' ऐसी प्रार्थना की थी। उनका भजन सुनने के लिए लाखों लोग खिंचे चले आते थे। आध्यात्मिक साधना से प्राप्त गायन, लेखन, वाणी, प्रतिभा, भाव और ज्ञान सभी सिद्धियों का उन्होंने देश के स्वतंत्रता संग्राम में पूरी तरह से उपयोग किया। ग्राम गीता, अनेक अभंग और सुविचारों की रचना तथा लोककल्याण के लिए व्यायामशालाएँ, आश्रम, शिक्षण संस्थाएँ, अस्पतालों की स्थापना करने का अद्वितीय कार्य उन्होंने किया है। उनका अलौकिक कार्य देखकर भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने उन्हें 'राष्ट्रसंत' कहकर सम्मानित किया था। राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए बहुत कुछ किया है।

महिलाओं से वह कहते, "स्वतंत्रता आंदोलन में जाने वाले अपने बच्चों को, अपने पति को मत रोको। तुम कहो कि मैं भी आपके साथ आती हूँ। यह काल समर्पण का है।" सेवा दल में भी वह जाते थे। 1936 से 1942 तक उन्होंने गाँव-गाँव घूमकर भजन, कीर्तन, संबोधन आदि माध्यम से लोकजागृति का कार्य किया। 1942 में महात्माजी ने अंग्रेजों से कहा 'चले जाओ'। 'करो या मरो' भाव से प्रेरित जनता में प्रचंड असंतोष था। गाँव-गाँव में सरकार के खिलाफ आंदोलन तेज हुआ था। कई जगहों पर हिंसक प्रदर्शन भी हो रहे थे। तब राष्ट्रसंत की खंजिरी भी अंग्रेजों के खिलाफ उठ खड़ी हुई और कहने लगी—

झाड़ झडूले शस्त्र बनेंगे, भक्त बनेगी सेना।
पत्थर सारे बंब बनेंगे, नाव लगेगी किनारे।

चिमुर अष्टी में अंग्रेजों के खिलाफ हजारों लोगों का अभूतपूर्व आंदोलन हुआ। चिमुर अष्टी के आंदोलन का श्रेय तुकडोजी महाराज को ही कहा जाता है। 1926 से 1942 तक चिमुर में लोकजागृति का कार्य महाराजजी कर रहे थे। तुकडोजी महाराज जी का स्वतंत्रता आंदोलन में सहभाग अंग्रेजों को दिख रहा था। लेकिन मध्य भारत में महाराजजी की लोकप्रियता की वजह से उनको पकड़ना मुश्किल था। 1942 के आंदोलन में सभी बड़े नेताओं को सरकार ने पकड़ा था। यही मौका देखकर सरकार ने 27 अगस्त, 1942 रात के समय चांदा में चल रहे लोकजागृति के चातुर्मास्य कार्यक्रम के बीच में ही महाराजजी को बंदी बनाकर कारावास में भेज दिया। नागपुर कारागृह में 22 दिन 'ब' वर्ग कैदी और रायपुर कारागृह में 74 दिन 'अ' वर्ग कैदी के रूप में उन्हें रखा गया था। कारागृह को राष्ट्रसंत 'श्रीकृष्ण मंदिर' कहते थे। 'महाराजजी को छोड़ दो', ऐसे कहने वाले हजारों पत्र लोगों ने सरकार को लिखे। लोगों की बढ़ती हुई माँग के आगे झुककर सरकार ने उन्हें कारागृह से मुक्त किया। लेकिन महाराज जी के द्वारा लिखित पुस्तकों को जब्त करके उन पर प्रतिबंध लगा दिया गया। महाराजजी को वर्धा और चांदा जिले में जाने की मनाही करने वाला 'प्रवेश बंदी आदेश' जारी किया गया। 1943 में 'विश्वशांति नाम सप्ताह' नाम से महाराजजी ने देशव्यापी आंदोलन की शुरुआत की थी। हर रोज शाम 7:30 बजे तीन मिनट अपने-अपने प्रार्थना स्थल पर विश्वशांति के लिए अपनी-अपनी प्रार्थना करना, इस आंदोलन का स्वरूप था। देशभर से विविध संस्थाओं ने सहभागी होकर हजारों लोगों की उपस्थिति में यह आंदोलन सक्रिय बनाया।

सर्वश्रेष्ठ, सभी सिद्धियों से युक्त होने पर भी एक छोटी-सी कुटिया में रहकर सीधा-साधा जीवन जीने वाले वंदनीय महापुरुष ने पराधीन सत्ता के विरुद्ध लड़ने का बड़ा कार्य कर दिखाया। जब तक भारतीयों में समानता, ईमानदारी जैसे गुणों का विकास नहीं होता, तब तक स्वतंत्रता की लड़ाई समाप्त नहीं होगी, ऐसे महाराजजी के विचार थे। इसलिए दिनभर श्रीरामजी का जाप करने वाला, पर सुबह दूध बेचते वक्त दूध में पानी मिलाने वाला या कार्यालय में भ्रष्टाचार करने वाला उनको कभी भी मान्य नहीं था। महाराजजी ने निरंतर चलने वाले लोक सुधार के कार्य को उचित दिशा देने हेतु 1943 में 'अखिल भारतीय श्रीगुरुदेव सेवामंडल' की स्थापना की है। अमरावती जिला गुरुकुंज मोझरी में यह संस्था आज भी कार्यरत है। मंडल की हजारों शाखाएँ और प्रचारकों के माध्यम से ग्राम निर्माण, मानवतावाद, राष्ट्रकार्य आदि विषयों में आज भी काम किया जाता है। हमें राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज से प्रेरणा लेकर और उनके बताए हुए समानता, मानवता, प्रेम और ईमानदारी के पथ पर चलकर भारत को 'विश्वगुरु' बनाने की राह प्रशस्त करनी चाहिए।

ओ हिंदुस्तान, हल हैं तेरे लहूलुहान

"मंच पर खड़ा वह कोई अलौकिक व्यक्ति लग रहा था, जिसका व्यक्तित्व किसी विचारक, कलंदर और कवि के व्यक्तित्व का समीकरण लग रहा था। वह अपनी कविता में भारत के विभिन्न प्रदेशों की चर्चा इतनी सहजता से कर रहा था कि श्रोता अपने आपको उन प्रदेशों में साँस लेते महसूस कर रहे थे। एक के बाद एक प्रदेश की जनता अपनी विशिष्ट संस्कृति की पृष्ठभूमि में, विशिष्ट वस्त्र धारण किए और विशिष्ट भाषा बोलती धीरे-धीरे उनकी आँखों के सामने उभरती और फिर क्षितिज के कोनों में गुम हो जाती। यह सफल चित्रण सत्यार्थी की वर्षों की साधना और भारत-भ्रमण का फल था। मुझे लगा कि भारत का कोई कवि, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, भारत की आत्मा का चित्र प्रस्तुत करने में सत्यार्थी की बराबरी नहीं कर सकता।" (साहिर लुधियानवी, नीलयक्षिणी, पृ. 372)

बरसों पहले प्रीतनगर के वार्षिक सम्मेलन में सत्यार्थी जी ने 'हिंदुस्तान' शीर्षक कविता सुनाई थी। उस सम्मेलन में मौजूद साहिर लुधियानवी ने मंच पर कविता पढ़ रहे देवेंद्र सत्यार्थी का यह अनोखा शब्द-चित्र प्रस्तुत किया है, जिसे पढ़कर समझ में आता है कि उनकी कविताओं में कैसा खुलापन और जीवन का स्वच्छंद प्रवाह था, जो उन्हें आमजन से सीधे जोड़ता था और उनकी कविताओं की पुकार हवा में गूँज बनकर समा जाती थी।

यह वह समय था, जब अपनी लोकयात्राओं के बीच-बीच में तनिक विराम लेकर वे कविताएँ और कहानियाँ भी लिखने लगे थे और अपनी अनूठी सृजन-शैली और खुली अभिव्यक्ति के कारण वे एकाएक प्रसिद्धि के शिखर पर जा पहुँचे थे। खुद सत्यार्थी जी ने उन्मुक्त पंखों के साथ उड़ानें भरती अपनी काव्य-यात्रा के बारे में बहुत विस्तार से लिखा है, जिसने उनके भीतर एक नशा-सा भर दिया था।

"कविता और कहानी की ओर मैं एक साथ आकृष्ट हुआ, वह भी सन् 1940 में।

आरंभ कविता से ही हुआ और वह भी पंजाबी में। बस यों ही गुनगुनाकर कुछ लिख डाला था। वह स्वयं मेरे लिए भी कुछ आश्चर्य का विषय नहीं था, पर मन पर एक नशा-सा छा गया। जब यह कविता एक प्रसिद्ध पंजाबी मासिक में प्रकाशित हुई तो एक आलोचक ने तो यहाँ तक कहा कि इसमें ध्वनि-संगीत का अछूता प्रयोग किया गया है। ...मैंने सोचा, क्यों न कभी-कभी हिंदी माध्यम में भी लेखनी आजमाई जाए। 'बंदनवार' की 'नर्तकी' शीर्षक कविता इस प्रयास का सर्वप्रथम परिणाम है।... सौभाग्यवश, कुछ दिनों बाद दिल्ली में श्री सुमित्रानंदन पंत से भेंट हुई। उनके सम्मुख भी मैंने बड़ी सरलता से कविता सुना डाली तो उनके मुख से अनायास ही ये शब्द निकल पड़े, "नर्तकी, कविता नहीं एक मूर्ति है, एक पूरी चट्टान को काटकर बनाई गई मूर्ति, कहीं कोई जोड़ तो है ही नहीं...!" (बंदनवार, दृष्टिकोण, पृ. 9)

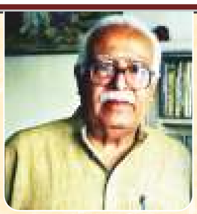

प्रकाश मनु

जन्म : 12 मई, 1950, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा : भौतिक विज्ञान में एम.एस-सी., हिंदी साहित्य में एम.ए.।

संप्रति : लगभग ढाई दशकों तक बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका 'नंदन' के संपादन से जुड़े रहे। अब स्वतंत्र लेखन। प्रसिद्ध साहित्यकारों के संस्मरण, आत्मकथा तथा बाल साहित्य से जुड़ी कुछ बड़ी योजनाओं पर काम कर रहे हैं।

प्रकाशन : बाल साहित्य की सौ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। इसके अलावा उपन्यास, कविता संग्रह, आत्मकथा, जीवनी प्रकाशित। कई महत्वपूर्ण संपादित पुस्तकें और संचयन भी। कई पुस्तकों का पंजाबी, सिंधी, मराठी, गुजराती, कन्नड़ समेत अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद।

पुरस्कार : साहित्य अकादेमी का पहला बाल साहित्य पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के 'बाल साहित्य भारती' पुरस्कार और हिंदी अकादमी के 'साहित्यकार सम्मान' से सम्मानित।

संपर्क : मोबाइल– 9810602327

ईमेल– prakashmanu333@gmail.com

कविता-संकलन ‘बंदनवार’ की भूमिका के रूप में लिखी गई ये पंक्तियाँ कविता के लिए सत्यार्थी जी की दीवानगी की एक झलक पेश करती हैं। यों तो उन्होंने साहित्य की लगभग हर विधा में जमकर लिखा है और एक-से-एक स्मरणीय कृतियाँ दी हैं। पर सच तो यह है कि वे चाहे लोक साहित्य पर लेख लिखें या फिर कहानी, उपन्यास, संस्मरण, रेखाचित्र और यात्रा-वृत्तांत, पर हृदय से वे कवि हैं। वे पहले कवि हैं, फिर कुछ और। इसका इससे बड़ा प्रमाण और क्या होगा कि जो कुछ उन्होंने लिखा, उसमें उनका हृदय बोलता है और उनकी गद्य रचनाएँ तक कविताओं की तरह हृदय में गहरे धँसती हैं। इसलिए साहिर ने सत्यार्थी जी की कविताओं को ‘हिंदी में अपने ढंग की सिरमौर कविताएँ’ कहा था।

इसी तरह मूर्धन्य कवि सुमित्रानंदन पंत उनके ‘बंदनवार’ संग्रह की कविताओं को पढ़कर अभिभूत हुए थे और बड़ा ही भावपूर्ण पत्र उन्होंने सत्यार्थी जी को लिखा था, जिसमें उनकी कई कविताओं की उन्होंने जी भरकर प्रशंसा की थी। बेशक सत्यार्थी जी की कविताओं में धरती बोलती है। वे जिंदगी के थपेड़ों से निकली ऐसी कविताएँ हैं, जो आम आदमी के दुख-दर्द और संघर्षों के साथ-साथ चलती हैं।

सत्यार्थी जी ने अपनी सृजन-यात्रा की शुरुआत में कविताएँ अधिक लिखीं और यह सिलसिला कोई छठे-सातवें दशक तक चलता रहा। उसके बाद कविताएँ कम लिखी गईं और सत्यार्थी जी मुख्य रूप से गद्य साहित्य में रम गए। हालाँकि सत्यार्थी जी की कविताओं की चर्चा बहुत हुई। बंगाल के अकाल पर लिखी गई ‘रेशम के कीड़े’ कविता बहुत मार्मिक है, जो प्रेमचंद के ‘हंस’ पत्रिका में छपी थी। इसमें कीड़े सरीखे मजदूरों की जिंदगी का वह सच है जिसे अकसर भद्रजनों की आँख की ओट कर दिया जाता है।

एक दफा अंतरंग बातचीत में सत्यार्थी जी ने इस कविता का जिक्र छिड़ने पर जो शब्द कहे, वे गौर करने लायक हैं, “ऐसी कविता मनु जी, मैं आज चाहूँ तो भी नहीं लिख सकता। इसलिए कि यह कविता मैंने लिखी नहीं, बंगाल का जो अकाल देखा था, उसने खुद-ब-खुद मुझसे लिखवा ली।” (देवेंद्र सत्यार्थी : एक भव्य लोकयात्री, प्रकाश मनु, पृ. 176)

इसी तरह ‘एशिया’ और ‘हिंदुस्तान’ सत्यार्थी जी की बड़े कैनवस की कविताएँ हैं, जिनके चित्रों में एक साथ विराटता और मोहकता है। इसलिए एशिया की बात चलते ही उन्हें सारे ऐश्वर्यलोक के बावजूद उसकी ‘फटी आस्तीं’ का खयाल आता है—

एशिया! तेरा दिल है क्यों गमगीं?
हर कलाकार के हाथ में
तूलिका अपना जादू दिखाती रही
जैसे आता है फूलों में रंग
जैसे आती शहद में मिठास
जैसे आती अतर में सुवास
जनकला में उभरती रही नंगी धरती की शान
खेत की नर्म माटी में उगता रहा प्रेम, उगता रहा जैसे धान
उगता रहा सारा सौंदर्य गेहूँ के खेतों में ही
एशिया, फिर भी तेरी फटी आस्तीं। (बंदनवार, पृ. 58)

ऐसे ही सत्यार्थी जी की बड़े कलेवर की और बड़ी पुकार लिए हुए एक कविता है, ‘हिंदुस्तान’। प्रीतलड़ी के मुशायरे में उन्होंने यही कविता पढ़ी थी, जिस पर साहिर लुधियानवी ने कहा था कि सत्यार्थी हिंदुस्तान को जितना समझता है, उतना शायद ही कोई समझता हो। (नीलयक्षिणी, पृ. 372) वहाँ उन्होंने पंजाबी में यह कविता सुनाई थी। बाद में उसका हिंदी उल्था भी उन्होंने स्वयं किया। यह कविता हिंदुस्तान की ऐसी भीतरी सच्चाइयों और अँधेरों में उतरती है कि लगता है, सत्यार्थी जी के शब्दों में सारे हिंदुस्तान का गहगहा चित्र उभर आया है—

ओ हिंदुस्तान, हल हैं तेरे लहूलुहान
ओ हिंदुस्तान!
पैरों में हैं टूटे जूते
कपड़े तेरे निरे चीथड़े
पेट कबर सदियों की,
ओ हिंदुस्तान!
मैं कालिदास से कहता
अब मेघदूत को छोड़ो,
विरह प्रथम या भूख
ओ हिंदुस्तान...! (बंदनवार, पृ. 55)

यह कविता खुद सत्यार्थी जी की गूँजदार आवाज में सुनने का सौभाग्य मुझे मिला है। कविता सुनाने के बाद सत्यार्थी जी ने बड़े पसीजे हुए स्वर में कहा था, “आप देख लीजिए, जिस हिंदुस्तान का इसमें जिक्र है, आज का हिंदुस्तान उससे कोई खास बदला हुआ नहीं है। मैं इस बात पर खुश भी हो सकता था कि मैंने ऐसी कविता रच दी, पर नहीं, मेरा दिल तो अंदर-ही-अंदर रोता है।” (मेरे साक्षात्कार : देवेंद्र सत्यार्थी, पृ. 179)

बड़ी ही सघन संवेदना के साथ लिखी गई इस आत्मपरक कविता में सत्यार्थी जी के पथिक रूप का भी चित्रण है। जिधर भी उनके पैर मुड़ते हैं, उनकी प्रिया थके होने के बावजूद अपने प्रिय की खुशी की खातिर बिना कोई शिकायत किए, पैरों की अभ्यस्त गति से साथ-साथ चल पड़ती है। प्रेम में सीझे हुए पति-पत्नी के दांपत्य की यह एक अकथ कथा है, जो सत्यार्थी जी के इन शब्दों में उतर आई है—

मैं हूँ पथिक
पैर में चक्कर
देश-देश के लंबे पथ-संदेश
नित सुनता है मेरा मन
रहती सदा एक ही धुन।
मेरी प्रेयसी पथ-पथ की अभ्यस्त
चल पड़ती है उधर जिधर मैं हो लेता हूँ
न हँसकर, न रोकर
नयनों में प्रिय नयन पिरोकर। (वही, पृ. 106)

सच पूछिए तो दांपत्य संबंधों की मीठी छुअन और रागात्मकता सत्यार्थी जी की कई कविताओं में है। अद्‌भुत लयात्मकता में ढली सत्यार्थी जी की एक बहुचर्चित कविता ‘ब्याह के ढोल’ की उठान बड़े मधुर, अलसित वातावरण में होती है। एक हाथ में ठोड़ी टेके, एक हाथ से पर्दा थामे दुलहन से कवि मुखातिब है, “लो बजे ब्याह के ढोल और

गूँजी शहनाई अलसाई-सी/जरा रेडियो को ऊँचा कर दीजो, दुलहिन!"
लेकिन बाद में मशीनी मानव के मशीनी प्यार का खयाल आया तो—

छिः ये कागजी फूल और छिः वेणी सेंट से महकाई-सी
जरा रेडियो को ऊँचा कर दीजो दुलहिन।
ढोल उधर और इधर मशीनी युग के मानव,
ढोल उधर और इधर फौलादी युग के दानव,
प्रेम नया क्या होगा? यह वही कार्बन कॉपी। (वही, पृ. 44)

तभी उनका फक्कड़ रूप जागता है, यह शॉल किसी को दे दूँ तो? कोई-कोई तो फटे अँगोछे को भी तरसता है। शॉल मिल जाए तो खुशी से नाच न उठेगा! मगर फिर वही तरल अनुरोध याद आता है—'आगे सरक न जाए शॉल' और वे अपनी सोच की धारा को जबरन मोड़ देते हैं।

ऐसे ही एक नर्तकी पर मन की गहरी भावाकुलता के साथ लिखी गई सत्यार्थी जी की कविता सचमुच लाजवाब है। एकदम अलहदा-सी भी। सत्यार्थी जी को मुजराघर के लाल फर्श पर नाचती 'नर्तकी' का खयाल आता है, तो कुछ ही देर में वह माँ की शक्ल ले लेती है और वे स्वयं को उसकी गोद में फूट-फूटकर रोता हुआ पाते हैं।

लंबी कविता 'नर्तकी' की शुरुआत में उसके विलास भरे रूप और हावभावों का वर्णन है, जो देखने वालों को व्याकुल और अधीर कर देता है और इस सुख-विलास की कीमत चुकाने के लिए खुली जेबों से सिक्के गिरने लगते हैं। हालाँकि कवि दूसरे छोर पर जाकर चीजों को देखता है, तो भीतर एक गहरी उथल-पुथल से भर जाता है।

सत्यार्थी जी ने पंजाबी में भी खूब कविताएँ लिखी हैं और बहुत डूबकर लिखी हैं। इनमें कुछ कविताओं की वहाँ बार-बार चर्चा होती है। हिंदी में जो 'प्रेयसी' कविता है, वह पहले पंजाबी में ही लिखी गई थी। यह कविता उन्होंने पत्नी शांति सत्यार्थी पर लिखी थी, जिन्हें आखिरी दिनों में उन्होंने एक सुंदर-सा नाम दिया था, 'लोकमाता'।

सचमुच सत्यार्थी जी के पूरे कविता-संसार में ऐसी कोई दूसरी कविता नहीं है। इससे यह भी पता चलता है कि अपनी खानाबदोशी और अलमस्ती के बावजूद पारिवारिक स्नेह की भावनाएँ कितने गहरे तक उनके भीतर धँसी थीं। भले ही वे 'दुनियादार' नहीं हुए, पर 'दुनिया' से प्यार करना उन्हें आता था। और इस दुनिया में बेशक घर-परिवार की दुनिया भी शामिल थी।

सत्यार्थी जी का कवि मनमौजी कवि है, जो घर हो या बाहर, कहीं भी कुछ अलग-सा देखता है, तो वह खुद-ब-खुद उसके शब्दों में उतरने लगता है। ऐसी ही एक कविता उन्होंने चंडीगढ़ में रहते हुए चंडीगढ़ शहर के बारे में लिखी थी। हुआ यह कि एक बार चंडीगढ़ में उन्होंने एक मित्र के साथ रहते हुए काफी दिन गुजारे। उन्हीं दिनों एक मिस दास भी थीं उड़ीसा की, जो वहाँ उर्दू सीखने आई हुई थीं।

सत्यार्थी जी ने पाब्लो नेरूदा की 'स्पेन' कविता समेत विश्व के अनेक प्रमुख कवियों की कविताओं का एकदम बहती हुई भाषा में अनुवाद किया है, जिसकी एक झलक उनकी लिखी हुई 'बंदनवार' की लंबी भूमिका में मिल जाती है। विष्णु खरे ने एक बार सत्यार्थी जी द्वारा किए गए पाब्लो नेरूदा के अनुवाद की काफी सराहना करते हुए कहा था कि संभवतः देवेंद्र सत्यार्थी हिंदी में पाब्लो नेरूदा के पहले इतने सशक्त और अधिकारी अनुवादक हैं।

यों सत्यार्थी जी के 'बंदनवार' संग्रह में उनकी अनूदित कविताओं का एक खंड अलग से है। यही नहीं, सत्यार्थी जी आज के कवि के लिए विश्व कविता का गंभीर अध्येता होना जरूरी समझते हैं—

"आज के कवि के लिए सचमुच यह आवश्यक हो गया है कि वह विश्व की कविता का अध्ययन करे। इससे कवि के सम्मुख नए क्षितिज उभरते हैं, उसकी आँखें अधिक देख सकती हैं, मस्तिष्क अधिक सोच सकता है। हाँ, इसमें अनुकरण प्रवृत्ति का खतरा अवश्य है जिससे एक जागरूक कवि हमेशा बच सकता है।" (बंदनवार, दृष्टिकोण, पृ. 31)

यही नहीं, वे स्पष्ट रूप से आधुनिकता की नई शैलियों के साथ खड़े हैं और कविता की नई राहों के अन्वेषियों का खुली बाँहों से स्वागत करते हैं। यहाँ तक कि पुरातनवादियों को वे अपनी सीमाओं और जकड़न से मुक्त होकर खुली दृष्टि से नए बोध की कविता को देखने की सलाह देते हैं—

"मैं यह कहने की धृष्टता तो नहीं कर सकता कि पुरानी छंदोबद्ध शैली में आधुनिक युग के अनुरूप अच्छी कविता का सृजन असंभव है। हाँ, यह अवश्य कहूँगा कि जिस प्रकार पुरानी कविता में भी निरंतर विकास हुआ है और प्रत्येक कवि की प्रत्येक कविता काव्य की कसौटी पर एक समान बहुमूल्य साबित नहीं होती, उसी प्रकार हो सकता है कि नई शैली की भी अनेक कविताओं का साहित्यिक मूल्य बहुत अधिक न हो, पर किसी को आज यह कहने का दुस्साहस तो हरगिज नहीं करना चाहिए कि नई शैली की कविता एकदम मिथ्या प्रलाप है—एकदम मस्तिष्क का षड्यंत्र, जिसमें हृदय की जरा भी परवाह नहीं की जाती।" (वही, पृ. 12)

काश, सत्यार्थी जी की कविताओं को आज नए नजरिए से देखा-परखा जाए, तो ऐसे बहुत-से आबदार मोती हाथ आएँगे, जो उनकी कवि-शख्सियत को समझने में तो मदद देंगे ही, हिंदी कविता का भी एक अलग 'इतिहास' उससे सामने आएगा। सचमुच सत्यार्थी जी की कविताओं में जीवन की धड़कन और उसका संगीत एक नई लय में बह रहा है जिसमें नए और पुराने के बीच संवाद का एक नया पुल बनता नजर आता है।

आज जब कविता के अंत या फिर ठहराव की बात की जाती है, तो सत्यार्थी जी की कविता 'एक नई संभावना' के खिड़की-दरवाजे खोलती जान पड़ती है। संभवतः उससे हमें आगे की कुछ अलक्षित दिशाएँ हासिल हों। इस लिहाज से जीवन की ऊर्जा से भरपूर तथा नए बनते हिंदुस्तान की एक अलहदा पहचान लिए, सत्यार्थी जी की खुली और स्वच्छंद कविताएँ हमारे लिए किसी बहुमूल्य दस्तावेज सरीखी हैं।

आओ भारतीय भाषाएँ सीखें

हिंदी	संस्कृत	पंजाबी	उर्दू	कश्मीरी	सिंधी	मराठी	कोंकणी	गुजराती	नेपाली	बांग्ला
प्रसाधन	**प्रसाधनम्**	**साज सिंगार**	**सामाने आराइश**	**साज़ सिंगार**	**सींगार सामानु**	**प्रसाधन**	**प्रसाधन**	**प्रसाधन**	**प्रसाधन**	**प्रसाधन**
इत्र	गन्धः	अतर	इत्र	ॲतर	अतुरु, इत्र	अत्तर	अत्तर,चेर	अत्तर	अत्तर	आतर (सुगंधि)
कंघी	कङ्कतम्	कंघी	कंघी	कंगन्य	फणी	फणी	फणी, दांतोणी	कासंकी कांसको	काँगियो काइँया	चिरुणी(नी) काँकुइ
काजल	अञ्जनम्	कज्जल	काजल	कज़ुल	कजलु, काजलु	काजळ	काजळ	काजळ आंजण, अंजन, मेश	गाजल	काजल
चोटी	वेणी	गुत्त	चोटी	लठुर छ़ोग	चोटी	वेणी	विणी	शिखा, चोटली चोटला	टुपी, चुल्ठो, शिखा	बिनुनि, वेणी (नी)
जूड़ा	जूटः	जूड़ा	जूड़ा	जूड	चोटो-जूड़ो	अंबाडा बुचडा	आंबाडो	अंबोडो	जुरो	खोपाँ
तेल	तैलम्	तेल	तेल	तील	तेलु	तेल	तॅल	तेल	तेल	तेल
दर्पण (आईना, शीशा)	दर्पणः	शीशा	शीशा आईना	ऑन	आईनो/ आरसी/ आर्सी	दर्पण, आरसा, आयना	हारशो	दर्पण, अरीसो आयनो, आरसो	ऐना	आयना, आरसि, दर्पन
पाउडर	चूर्णम्	पौडर	पाउडर	पोडर	पाऊडरु	पावडर	पोव	पाउडर	पाउडर	पाउडर
बिंदिया	तिलकम्, बिन्दुः	बिंदी	बिंदी	बिंदर, ट्र्योक	तिलकु, टिकिड़ो	टिकली	टिको, टिकुली, बिंदी	चांदलो चांल्लो	टिको, टिकुली बिन्दि	टिप बिंदि
महावर	अलक्तकम्	महावर	लाखा	महावर	महावरु	सौभाग्य-वतीच्या, कपाळा लावयचा, रंग	आलता	अळतो महावर	आलता	आल्ता, आलता
मेहँदी	मेधी मेधिका	मैहंदी	मेंहदी, हिना	माँज़	मेंदी	मेंदी	मेंदी	महेंदी, मॅदी	मेहदी	मेहेंदी (मेहंदी)
वेणी	वेणी	गजरा	चोटी	लठुर, वाँख	वेणी	वेणी	फांती	वेणी	वेणि, चुल्ठो	बेनी बिनुनि
सिंदूर	सिन्दूरम्	संधूर	सिंदूर	स्यंदर	सिंदुरु	शेंदूर	शेंदूर	सिंदूर	सिन्दुर, सिँदुर	सिंदूर

असमिया	मणिपुरी	ओड़िआ	तेलुगू	तमिल	मलयालम	कन्नड़	डोगरी	संताली	मैथिली	बोड़ो
प्रसाधन	**केनबा पोत्लम**	**प्रसाधन**	**अलंकरण सामग्रि**	**अऴगु सादनगऴ्**	**अलंकारवस्तु क्कळ्**	**शृंगारसाध नगळु**	**साज-शिंगार सज्ज-बज्ज**	**शक्-अजगक्**	**सिङार, सिङार पटार**	**देलायनाय**
आतर	थाओ मनम नुङशिबा	अतर	अत्तरु	अत्तर्	अत्तर्	अत्तरु, पन्नीरु	अतर	आतर	इत्र	आथर मोदोमग्रा
कंठी, फणि	समचेत	पानिया, चिरुणी	दुव्वेन	सीप्पु	चीप्पु	बाचणिगे	कंघी	नाकिज्	ककबा, ककही, कङघी	खानजं
काजल	काजोल	कजल, कला	काटुक	कण् मै	कण्मषि	काडिगे	कज्जल	आयनम	काजर	खाजल
बेणी	बेनी, शिखा	चुटी, बेणी	जड	शिकै/ कुडुमि	शिख कुटुम	चौलि, जडे	गुत्त	गालाङ उब्	चोटी	लेमसा, सेला
बेणीर खोपा	शमबुल	जूड़ा खोसा	कोप्पु	कोण्डै	मुटिक्वेट्टु	तुरुबु	जूड़ा	सुद्	जूडा, खोपा	खफा, खानाइ फिथर
तेल	थाओ	तेल, तैल	नूने	ऐण्णेय्	एण्ण, तैलम्	एण्णे,	तेल	सुनुम	तेल	थाउ
दापोन, दर्पण, आइना	मिङशेल	दर्पण (आइना)	अद्दमु	निलै- क्कण्णाडि	दर्पणम्, निलक्कण्णाटि	कन्नडि	शीशा	आरसि	सीसा, अएना	आइना
पाउडर	पाउडर	पाउडर	पउडरु	पवुडर	पौडर्	पाउडर्	पौडर	पाउडार	पाउडर	फाउदार
फोंट	बिन्दी	बिंदिआ, बिन्दी	बोटटु, बिंदी	पोट्टु	पोट्टे/ तिलकम्	बोट्टु	बिंदी	टिकाक्	टिकुली	फोथा
आल्ता	अङाङ्बा मचुगी खोङदा तैनबा	महावर, एक प्रकार अलता	पाराणि	चेम्पूच्चु	चेम्पञ्ञिच्चाऱु	केपरगु, लाक्ष्य	महावर अलता	आरता	आलता	आल्था
जेतुका	मेहंदी	मजुआती	गोरिंटाकु	मरुदाणि	मयिलांचि	गोरंटि, मेहंदी	मैहूंदी	मिहूदी	मेहँदी	मेहेन्दि, जेन्थखा गाब
वेणी	बेनि	बेणी	जड, वेणि	पिन्नल्	मुटि	जडे	चोटी, गुत्त	गालाङ उब्	चोटी, जुट्टी	लेमसा, सेला
सेंदुर	सिंदूर	सिंदुर	कुंकम	कुंकुमम्	सिंदूरम्	कुंकुम	संधूर	सिँदूर	सिंदूर सिनूर, सेनुर	सिन्दुर

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित भारतीय भाषा कोश से साभार)

हिंदी के पाणिनी आचार्य किशोरी दास वाजपेयी

सुप्रसिद्ध साहित्यकार, कवि, नाटककार, कुशल वक्ता, आलोचक, संपादक और व्याकरणाचार्य आचार्य किशोरी दास वाजपेयी हिंदी भाषा के सम्मान और उसकी समृद्धि हेतु आजीवन संघर्षरत रहे और उसके लिए जीवनपर्यंत उन्होंने अनेक कार्य भी किए। यही वजह है हिंदी भाषा के प्रति उनके प्रयासरत कार्यों के कारण ही आचार्य किशोरी दास वाजपेयी 'हिंदी का पाणिनी' उपनाम से विख्यात हैं।

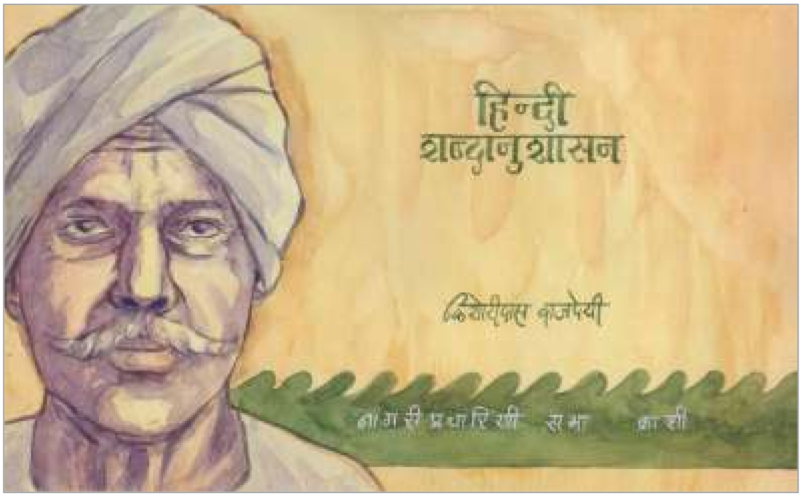

15 दिसंबर, 1898 को उत्तर प्रदेश के कानपुर स्थित बिठूर-मंधना के समीप एक छोटे से गाँव, रामनगर में आचार्य वाजपेयी का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम सतीदीन वाजपेयी था, जो एक खेतिहर किसान थे। खेतों में काम करने के साथ-साथ उनके पिता शूरवीर भी थे, अपनी वीरता के कारण वे गाँव में बेहद लोकप्रिय थे और गाँववासी उन्हें 'शूरमा' कहकर पुकारते थे।

बबिता बसाक

शिक्षा : एम.ए., पत्रकारिता में परास्नातक। वर्तमान में स्वतंत्र लेखन।

प्रकाशन : राष्ट्रीय सहारा, जनसत्ता जैसे समाचार पत्र-पत्रिकाओं में निरंतन लेखन, लगभग 200 लेख प्रकाशित।

सम्मान : प्रेरणाश्री सम्मान (कंसर्न्ड थियेटर, लखनऊ)।

संपर्क : मोबाइल– 9451134140
ईमेल– ishita_ni@rediffmail.com

बाल्यकाल से ही आचार्य वाजपेयी प्रखर बुद्धिमान और परिश्रमी थे। उनके बचपन का नाम 'गोविन्द प्रसाद' था। स्वभाव से ही वे अत्यंत सरल, कोमल हृदय, कार्य के प्रति अडिग, दृढ़निश्चयी, स्वाभिमानी, निर्भीक और बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। स्वाभिमानी और अडिग गुणों के कारण उन्हें महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने 'अभिमान मेरु' और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'अक्खड़ कबीर' की उपाधि से अलंकृत भी किया था।

आचार्य किशोरी दास वाजपेयी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव रामनगर से प्राप्त की और उसके बाद संस्कृत भाषा, प्रथमा विशारद और शास्त्री की परीक्षाएँ उन्होंने क्रमशः बनारस, वृंदावन और पंजाब विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की। विद्याध्ययन के पश्चात हिमाचल प्रदेश के सोलन शहर के एक विद्यालय में वे संस्कृत भाषा के प्राध्यापक नियुक्त हुए और कुछ समय तक वहाँ अध्यापन कार्य किया। शिक्षण कार्य के साथ ही उन्होंने कुछ समय तक 'नागरी प्रचारिणी सभा' के कोश विभाग से जुड़कर वहाँ भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

हिंदी भाषा के पुरोधा, हिंदी की शान और हिंदी के पाणिनी आचार्य वाजपेयी हिंदी भाषा और उसके व्याकरण के क्षेत्र में एक अग्रदूत बनकर आए थे। वे कहा करते थे–"हिंदी एक स्वतंत्र भाषा है। वह संस्कृत से अनुप्राणित अवश्य है, जैसे अन्य भारतीय भाषाएँ, परंतु वह अपने क्षेत्र में सार्वभौम सत्ता रखती है।"

हिंदी व्याकरण को समृद्ध, परिष्कृत, त्रुटिरहित और उसे पूर्ण बनाने का संपूर्ण श्रेय आचार्य वाजपेयी को जाता है।

आचार्य वाजपेयी ने अनेक ग्रंथों की रचना की, उनकी प्रथम प्रकाशित रचना है 'निम्बार्काचार्यस्तन्मतञ्च' जो संस्कृत भाषा में लिखित है। ब्रजभाषा का व्याकरण, हिंदी

निरुक्त, अच्छी हिंदी, हिंदी शब्दानुशासन, भारतीय भाषा विज्ञान, हिंदी वर्तनी, शब्द विश्लेषण, कृष्ण सुदामा, द्वापर की राज्यक्रांति, साहित्य की उपक्रमणिका, काव्य में रहस्यवाद, साहित्य, रस मीमांसा, काव्य प्रवेशिका, काव्य और काव्यशास्त्र, तरंगिणी, राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण व अमृत में विष इत्यादि उनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं।

> **आचार्य वाजपेयी सिर्फ भाषाप्रेमी ही नहीं, वे एक सच्चे देशभक्त भी थे। 1913 में अमृतसर में घटित जलियाँवाला बाग हत्याकांड से उन्हें बहुत आघात पहुँचा। तब उन्होंने 'अमृत में विष' नामक गद्य काव्य की रचना की थी।**

'राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण' और 'हिंदी शब्दानुशासन' उनके गौरव ग्रंथ हैं। 'राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण' नामक उनका ग्रंथ हिंदी भाषा के बारे में व्याप्त भ्रांतियाँ और अहिंदी भाषी लोगों के लिए भाषा सीखने का एक वैज्ञानिक मार्गदर्शन है। आचार्य वाजपेयी के इस ग्रंथ को पं. अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने 'हिंदी के व्याकरण का व्याकरण' कहकर संबोधित किया है।

सन् 1958 में प्रकाशित 'हिंदी शब्दानुशासन' पुस्तक हिंदी के विकास, परिष्कार, प्रकृति स्वकीय, परकीय, शब्द, सर्वनाम, विशेषण और समास आदि का सुंदर वर्णन प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वे सिर्फ हिंदी भाषा के पक्षधर थे। हिंदी भाषा के साथ-साथ वे अन्य भाषाओं का भी सम्मान करते थे। ब्रज, अवधी, कौरवी, पांचाली आदि को स्वतंत्र भाषा के रूप में स्वीकार करने की बात उन्होंने अपनी पुस्तक 'भारतीय भाषा विज्ञान' नामक पुस्तक में कही है। 'हिंदी शब्द मीमांसा' में शब्दों की व्युत्पत्ति और उनके प्रयोग का विस्तृत रूप से वर्णन किया आचार्य वाजपेयी ने।

सन् 1930 में 'सुदामा' नामक नाटक में श्रीकृष्ण और सुदामा की कथा को एक अलग व नए ढंग से उन्होंने प्रस्तुत किया। 1932 में 'साहित्य की उपक्रमणिका' में उन्होंने साहित्य समीक्षा के शास्त्रीय सिद्धांतों को अभिनव रूप में प्रस्तुत किया है। 1936 में प्रकाशित ब्रजभाषा में लिखित 'तरंगिणी' में वर्णित 300 दोहे श्रृंगार, भक्ति, हास्य, राष्ट्रीयता एवं नीति को उजागर करती है।

अपने सरल, सुबोध और प्रभावोत्पादक शैली में लिखी गई साल 1997 में प्रकाशित 'लेखन कला' नामक उनकी पुस्तक का उद्देश्य था—छात्रों, नए लेखकों, लेखक बनने की चाह रखने वाले और अभिनव कवियों का सहयोग करना।

आचार्य वाजपेयी सिर्फ भाषाप्रेमी ही नहीं, वे एक सच्चे देशभक्त भी थे। 1913 में अमृतसर में घटित जलियाँवाला बाग हत्याकांड से उन्हें बहुत आघात पहुँचा। तब उन्होंने 'अमृत में विष' नामक गद्य काव्य की रचना की थी।

आचार्य वाजपेयी ने व्याकरण, वर्तनी और अर्थ तीनों ही क्षेत्रों में हिंदी को व्यवस्थित करने का सार्थक प्रयास किया है। उनकी भाषा, शास्त्री रूप, लेखन तथा अन्वेषण के लिए समर्पित व्यक्तित्व हिंदी जगत के लिए सदैव प्रेरणा स्रोत है और सदैव रहेगा।

लेखन के साथ-साथ आचार्य किशोरी दास वाजपेयी अनेक पत्र से भी जुड़े रहे और पत्रकारिता की। त्रैमासिक, मासिक, साप्ताहिक व दैनिक पत्रिकाओं का भी उन्होंने संपादन किया। मराल, वैष्णव सर्वस्व और चाँद जैसे अनेक पत्र-पत्रिकाओं में उन्होंने अनेक लेख लिखे, लेखन ही नहीं, इन पत्रिकाओं के संपादन कार्य में भी उन्होंने सदैव अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। 'मराल' नामक समीक्षात्मक मासिक पत्रिका में उन्होंने लिखा, 'तुम बिन कौन मराल करे, जग दूध को दूध औ पानी को पानी।'

स्वाभिमान और संघर्षशील प्रकृति के आचार्य वाजपेयी कभी किसी प्रलोभन के समक्ष न तो झुके और न ही कभी कोई समझौता किया। इसका ज्वलंत उदाहरण है कि साल 1977 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा जब उन्हें सम्मानित किया गया, उस समय के तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने मंच से उतरकर स्वयं आचार्य वाजपेयी को सम्मानित किया था।

'प्रासंगिक निवेदन' नामक पत्र में हिंदी के पाणिनी ने कहा है—

"अति दुरुह विस्तृत जीवन जो, ग्रंथों में है नहीं समाता
वहीं किसी के एक पत्र में, ज्यों का त्यों पूरा बँध जाता।"

प्रथम सम्राट चंद्रगुप्त

आचार्य चाणक्य बहुत ध्यान से कुछ बच्चों को खेलते हुए देख रहे थे। उनमें से एक बालक ने विशेष रूप से उनका ध्यान आकृष्ट किया। वह बालक खेल में राजा बना हुआ था और न्याय व सेना का संचालन कर रहा था।

कहते हैं इस बालक के गुणों को भाँप कर आचार्य चाणक्य इस बालक को अपने साथ तक्षशिला ले गए, जहाँ इस बालक और भारतवर्ष, दोनों का ही भाग्य बदलने वाला था।

चंद्रगुप्त का राज्य अफगानिस्तान से लेकर बंगाल, कश्मीर से दक्षिण भारत तक फैला हुआ था। ऐसा पहली बार था कि भारत के इतने बड़े भूभाग पर एक केंद्रीय शासन व्यवस्था कायम हुई थी। इससे पहले अलग-अलग राजाओं के अधीन ऐसे छोटे-बड़े 16 महाजन पद हुआ करते थे और बहुत सारे गणराज्य भी थे। ई.पू. 321 में इतने सारे राज्यों व गणराज्यों को एक सूत्र में

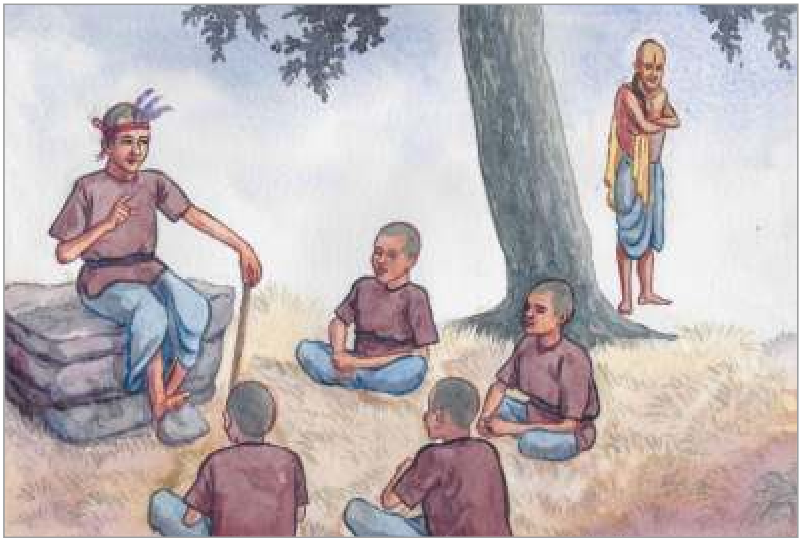

पिरोने वाले चंद्रगुप्त को 'भारत का प्रथम सम्राट' कहना ही उचित होगा।

जिस समय चंद्रगुप्त आचार्य चाणक्य के निर्देशन में तक्षशिला में शिक्षा प्राप्त कर रहा था। उसी समय ग्रीक विजेता सिकंदर मिस्र, फारस को जीतता हुआ भारत की ओर ही बढ़ा चला आ रहा था। उस समय के ग्रीक इतिहासकार प्लट्राच के लेखों में सिकंदर और सनड्रेमेस नाम के भारतीय के बीच की मुलाकात का जिक्र आता है। इतिहासकारों ने बाद में यह साबित किया कि 'सनड्रेमेस' ही 'चंद्रगुप्त' हैं। यह मुलाकात ग्रीक और भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। जब दो विजेताओं के बीच यह मुलाकात हुई थी।

सिकंदर का भारत को जीतने का सपना तो कभी पूरा नहीं हुआ। उसकी सेना ने नंद वंश की सेनाओं का सामना करने से पहले ही विद्रोह कर दिया। हार मानकर सिकंदर को अपनी सेनाओं को वापस मोड़ना पड़ा जिसकी वापसी में ही सिकंदर की मृत्यु हो गई और जल्द ही भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में जो आज-कल पाकिस्तान-अफगानिस्तान का इलाका है, से एक-एक करके बचे-खुचे ग्रीक विजेताओं को उखाड़ फेंका गया।

भारत के उत्तर-पश्चिम के इलाके में उस समय अराजकता का माहौल था। कई छोटे-छोटे राज्य अस्तित्व में आ चुके थे। बचे-खुचे ग्रीक रह-रह कर अपना प्रभाव जमाने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन भारत के पूर्वी हिस्से में शक्तिशाली नंद वंश की सत्ता थी, जिसकी शक्ति के डर से सिकंदर की सेनाओं की आगे बढ़ने के हिम्मत नहीं हुई थी। लेकिन समस्या यह थी कि नंद वंश का राजा धनानंद बहुत निरंकुश और अत्याचारी हो चला था। अपनी सत्ता के मद में चूर धनानंद आचार्य चाणक्य को भी अपमानित कर चुका था। इस अपमान के प्रतिक्रियास्वरूप आचार्य चाणक्य ने नंद वंश को उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया था और

डॉ. संचित त्यागी

जन्म : 07 अक्तूबर, 1986, आगरा।

शिक्षा : एम.बी.बी.एस., एम.ए. (इतिहास)।

संप्रति : संयुक्त निदेशक (प्रशासन एवं वित्त), राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत।

संपर्क : मोबाइल– 8272870112

ईमेल– sanchit4172@gmail.com

तक्षशिला से चंद्रगुप्त ने इस संकल्प को पूरा करने के लिए अपनी योजनाओं पर कार्य करना शुरू कर दिया था।

इतिहास में 'विशाखदत्त' नाम के एक संस्कृत कवि का नाटक 'मुद्राराक्षस' मिलता है। जहाँ 'मुद्रा' का अर्थ अंग्रेजी के 'सील' से है और 'राक्षस' धनानंद का अमात्य यानी कि प्रधानमंत्री था। इस नाटक में विस्तार से चाणक्य और चंद्रगुप्त की योजनाओं का वर्णन है। किस प्रकार चंद्रगुप्त ने सबसे पहले उत्तर और पश्चिम के राज्यों को जीता और बहुत सारे राजाओं के साथ नंद वंश के खिलाफ एक गठबंधन को रूप दिया। धनानंद को सत्ता से उखाड़ फेंकने की योजना में चाणक्य ने अमात्य राक्षस की मुद्रा का बखूबी इस्तेमाल किया और मगध में नंद वंश की जगह मौर्य वंश की सत्ता स्थापित हुई। यही इस नाटक का कथानक है।

इस प्रकार ई.पू. 321 में चंद्रगुप्त भारतवर्ष के पहले सम्राट हुए। यह राज्य वर्तमान अफगानिस्तान, पाकिस्तान कश्मीर से लेकर दक्षिण के राज्यों तक फैला हुआ था। लेकिन कलिंगा (वर्तमान उड़ीसा का राज्य) इसमें सम्मिलित नहीं था। पूरा राज्य एक केंद्रीय व्यवस्था के अधीन था जो प्रदेशों में विभक्त था। राज्य की राजधानी वर्तमान का 'पटना' यानी 'पाटलिपुत्र' थी। नगरों और सीमावर्ती इलाकों की प्रशासनिक व्यवस्था बहुत मजबूत थी। न्याय व्यवस्था कठोर थी। पहली बार भारतवर्ष में विस्तृत और सुदृढ़ नौकरशाही के द्वारा शासन व्यवस्था का संचालन किया जा रहा था। उन सभी को राज्य के खजाने से तनख्वाह दी जाती थी। ऐसी वृहद नौकरशाही बाद में अंग्रेजों के काल में ही देखने को मिलती है। गुप्तचरों का मजबूत जाल था जो राज्य की हर हलचल को राजा तक पहुँचाते थे। चंद्रगुप्त के शासन की संरचनाओं का आचार्य चाणक्य की पुस्तक 'अर्थशास्त्र' में विस्तार से वर्णन मिलता है। अर्थशास्त्र आज भी दुनियाभर के इतिहास, राजनैतिक विज्ञान और सैन्य विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए शोध का विषय बनी हुई है।

सिकंदर की मृत्यु के बाद उसके सेनापति पोटॉमी और सेल्युकस निकेटर ने राज्य को आपस में बाँट लिया। निकेटर का राज्य ईरान, इराक व मध्य एशिया तक फैला हुआ था। उसके राज्य की पूर्वी सीमा, चंद्रगुप्त के राज्य से मिलती थी। निकेटर ने चंद्रगुप्त के राज्य के सीमावर्ती इलाकों को अपने राज्य में मिलाने का सैन्य अभियान छेड़ा, लेकिन चंद्रगुप्त की सेनाओं ने ग्रीक सेनाओं को बुरी तरह परास्त किया। अपनी उत्तर-पश्चिमी सीमाओं की सुरक्षा के लिए चंद्रगुप्त ने निकेटर के साथ संधि की। इस संधि के अनुसार सेल्युकस निकेटर ने काबुल, कंधार और हेरात के इलाकों को चंद्रगुप्त के हवाले कर दिया। उसके अलावा उसकी पुत्री का विवाह भी चंद्रगुप्त से संपन्न हुआ। बदले में चंद्रगुप्त ने सेल्युकस को 500 हाथियों का दल भेंटस्वरूप दिया। इसी संधि के क्रम में ग्रीक राजदूत मेगस्थनीज चंद्रगुप्त के राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र में निवास करने के लिए पहुँचा।

यह संधि भारतवर्ष के लिए बहुत निर्णायक सिद्ध हुई क्योंकि पहली बार निर्णायक तरीके से भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमाओं को सुरक्षित किया गया।

मेगस्थनीज ने मौर्य साम्राज्य के बारे में बहुत-सी बातों का जिक्र अपनी किताब 'इंडिका' में किया है। दुर्भाग्य से यह पुस्तक विलुप्त हो चुकी है, लेकिन इस ग्रंथ में वर्णित मेगस्थनीज की टिप्पणियाँ बाद के बहुत से ग्रीक इतिहासकारों के ग्रंथों में जीवित बनी रहीं जिनमें प्लिनी एवं अररियन प्रमुख हैं। इनके अध्ययन से मौर्य साम्राज्य की शासन व्यवस्था एवं सामाजिक जीवन के बारे में बहुत कुछ पता चलता है। मेगस्थनीज के अनुसार पूरा पाटलिपुत्र नगर चारों ओर से एक किलेबंदी दीवार से घिरा हुआ था। पटना नगर के आस-पास हुए पुरातात्विक खुदाई में इस दीवार के अवशेष भी मिलते हैं। इसके साथ ही लकड़ी के प्रासाद का जिक्र भी मेगस्थनीज द्वारा किया गया है। इस प्रासाद के अवशेष पटना के 'कुम्रहार' नाम के इलाके में मिलते हैं। चीनी यात्री फाह्यान ने भी 600 साल बाद पाटलिपुत्र में ऐसे लकड़ी के प्रासाद का जिक्र किया है। बाद में काल के थपेड़ों को यह सह नहीं पाया होगा और अब केवल इसके अवशेष मिलते हैं।

ई.पू. 321 से ई.पू. 297 तक कुल 24 सालों तक चंद्रगुप्त ने राज्य की बागडोर को सँभाला। उसने अपने वंशजों को एक सुदृढ़ सेना और राज्य सौंपा। अपने अंतिम समय में उसने जैन साधु भद्रबाहु से ज्ञान प्राप्त किया और राज्य का परित्याग कर दक्षिण दिशा (जैन ग्रंथों के अनुसार 'श्रवणबेलगोला' नामक स्थान जो कि वर्तमान में कर्नाटक राज्य में स्थित है) की ओर गमन किया। उसने जैन धर्म की रीति के अनुसार उपवास रहकर अपने प्राण त्याग दिए।

शहीद पत्रकार : रामदहिन ओझा

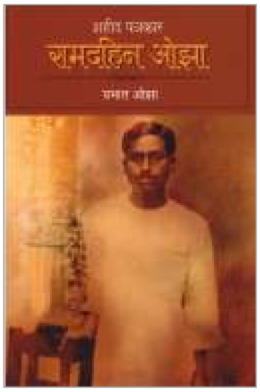

समीक्षक : **डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'**

लेखक : **प्रभात ओझा**

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 138

मूल्य : रु. 200/-

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली ने 'आजादी के अमृत महोत्सव' के अवसर पर स्वाधीनता संग्राम में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले अज्ञात और अल्पज्ञात सेनानियों पर पुस्तकें प्रकाशित करने के क्रम में 'राष्ट्रीय जीवन चरित' शृंखला में यह पुस्तक प्रकाशित की है।

इस पुस्तक के लेखक प्रभात ओझा स्वयं पत्रकार तो हैं ही, साथ ही वे शहीद पत्रकार रामदहिन ओझा के सुपौत्र भी हैं। यह पुस्तक स्वतंत्रता के आंदोलन में तब के 'संयुक्त प्रांत' के जाँबाज सेनानियों की अहम भूमिका को उजागर करती है और तत्कालीन 'बागी बलिया' के नाम से प्रख्यात चित्तू पांडेय, मंगल पांडेय जैसे क्रांतिकारियों की परंपरा में देश की आजादी के लिए प्राणों की बाजी लगाने वाले शहीद पत्रकार रामदहिन ओझा भी आते हैं।

प्रभात ओझा ने इस पुस्तक को चार प्रमुख परिशिष्टों में विभाजित किया है, जिन्हें 'जीवन', 'सर्जन', 'युगांतर में गांधी जी' और 'स्तवन' शीर्षक दिए हैं। अंत में 'परिशिष्ट' में कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी गई हैं। इस पुस्तक की 'प्रस्तावना' स्वयं में जानकारियों का खजाना है। प्रभात ओझा लिखते हैं—'स्वाधीनता सेनानियों का चरित-गायन कहीं भी और कभी भी प्रेरक हुआ करता है। हमारे देश की आजादी के लिए हुए संघर्ष में ऐसे अनगिनत (अनाम भी) नायकों की कथा यत्र-तत्र बिखरी पड़ी है। उत्तर प्रदेश में बलिया की धरती ऐसी गाथाओं का तो जैसे समुच्चय ही समेटे हुए है।'

'जीवन' शीर्षक परिशिष्ट में 'प्रेरक जीवन' में शहीद पत्रकार रामदहिन ओझा के जीवन की छोटी-बड़ी बातों को लेखक प्रभात ओझा ने संजोया है। शिवरात्रि के दिन जन्मे शहीद पत्रकार रामदहिन ओझा का निधन भी सन् 1931 की महाशिवरात्रि के तीन दिन के बाद हुआ था। उन्होंने अपने बचपन से ही स्वाधीनता के सेनानियों के बारे में जानना आरंभ कर दिया था। बालगंगाधर तिलक से ओझा जी इतने प्रभावित हुए कि 'हिदू-मुस्लिम एकता' के प्रति वे चिंतित रहने लगे और अपने पत्र 'युगांतर' में निरंतर इस विषय में लिखते रहे। पत्रकार प्रभात ओझा लिखते हैं—'रामदहिन ओझा को हिंदू-मुस्लिम के बीच बढ़ रहे वैमनस्य की चिंता बराबर सताती रही। इसके पहले 01 सितंबर, 1924 को 'युगांतर' के ही संपादकीय में लिखा गया, 'हिंदू ग्रंथों में भेद-भाव रखने का कहीं भी उपदेश नहीं। 'वसुधैव कुटुम्बकम' आदि वाक्य इसके प्रमाण हैं। जहाँ भेद-भाव नहीं, वहाँ हिंसा नहीं हो सकती। वहाँ कोई बखेड़ा खड़ा नहीं होता।'

'सर्जन' शीर्षक अध्याय में लेखक प्रभात ओझा ने शहीद पत्रकार रामदहिन ओझा के कवि-रूप का सुंदर और सोदाहरण परिचय दिया है। उनकी कविताओं में प्रेरणा का तत्व सहज ही देखा जा सकता है। 'सामान्य भाषा की आवश्यकता' और 'महात्मा जी हारे नहीं, जीते' शीर्षक से 07 जुलाई, 1924 को 'युगांतर' में छपे निबंध से उनकी साहित्यिक देन का परिचय मिलता है।

'युगांतर में गांधी जी' शीर्षक से लिखे अध्याय में लेखक ने शहीद पत्रकार रामदहिन ओझा द्वारा अपने पत्र 'युगांतर' में प्रकाशित महात्मा गांधी के लेखों का उल्लेख किया है। इनमें 'एक ही कार्यक्रम' और 'राष्ट्र से अपील' सचमुच महत्वपूर्ण आलेख हैं।

'स्तवन' शीर्षक अध्याय में पत्रकार-लेखक प्रभात ओझा ने शहीद पत्रकार रामदहिन ओझा के प्रति उस समय के साहित्यकारों द्वारा लिखे गए 'स्तवन' संबंधी प्रसंगों को लिया है। 'शहीद की अमरत्व यात्रा की एक स्मृति' आलेख काशी प्रसाद 'उन्मेष' और 'सत्याग्रह आंदोलन के प्रथम शहीद रामदहिन ओझा' आलेख दुर्गा प्रसाद गुप्त द्वारा लिखा गया है।

यह पुस्तक शहीद पत्रकार रामदहिन ओझा को आजादी के अमृत काल में सच्ची श्रद्धांजलि ही है, जो भारत की युवा पीढ़ी को प्रेरित अवश्य करेगी।

गांधी : रामकथा विचार-कोश

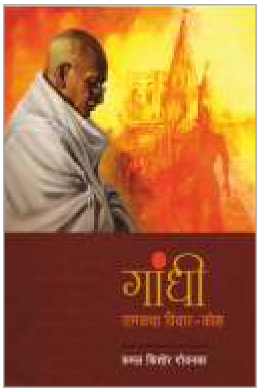

समीक्षक : **डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'**

संपादक : **कमल किशोर गोयनका**

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 260

मूल्य : रु. 665/-

पुस्तक-प्रकाशन के क्षेत्र में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली ने अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। समीक्ष्य कृति 'गांधी : रामकथा विचार-कोश' ऐसी ही एक कृति है, जो 'आजादी के अमृत महोत्सव' के दौरान देश के प्रबुद्ध पाठकों को एक अविस्मरणीय उपहार ही कहा जाएगा। इस कृति के संपादक-संकलन-प्रस्तुतकर्ता डॉ. कमल किशोर गोयनका ने भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित 'संपूर्ण

गांधी वाङ्गमय' के 98 खंडों में आए रामकथा के संदर्भों को संकलित किया है।

सच कहा जाए, तो आज 'कोश विज्ञान' की विधा में कार्य करने वाले विद्वान विरल ही रह गए हैं। इसीलिए डॉ. कमल किशोर गोयनका द्वारा संकलित-संपादित यह 'रामकथा विचार-कोश' धरोहर कृति है।

भारत ही नहीं, पूरा विश्व यह मानता और जानता है कि भारतीय स्वाधीनता के अग्रदूत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी मर्यादा पुरुषोत्तम राम के प्रति अनन्य भक्ति-भाव रखते थे। पूज्य बापू तो भारत की स्वाधीनता के आधार के रूप में 'रामराज्य की परिकल्पना' को लेकर ही चले हैं। पूरा विश्व मानता है कि गांधीजी की प्रातःकालीन प्रार्थना में 'रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम' का उल्लेख ही होता था और बापू के समाधि-स्थल 'राजघाट' पर 'हे राम' अंकित होना भी बापू की 'राम-भक्ति' का ही प्रमाण है।

निश्चय ही, भारतीय जनमानस में 'रामकथा' ऐसी रची-बसी है कि बिना 'राम नाम' हमारा कोई काम हो ही नहीं पाता। रामकथा की सांस्कृतिक और धार्मिक महत्ता के साथ-साथ हमारे जीवन में नैतिक और सामाजिक महत्ता भी उल्लेखनीय रही है, तो साहित्यिक महत्ता को भी कम नहीं कहा जा सकता। वस्तुतः श्री राम ने अपने निजी जीवन के साथ ही राजकीय जीवन में जो आदर्श स्थापित किए हैं, वे वैश्विक स्तर पर भारत को दुनिया से जोड़ते आए हैं, इसीलिए डॉ. गोयनका द्वारा संपादित इस 'रामकथा विचार-कोश' का महत्व बहुत बढ़ जाता है।

यह पुस्तक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के धर्म-अधर्म, अहिंसा, सत्य, सत्याग्रह, शस्त्रबल, ईश्वर और आत्मा की आवाज जैसे अनेक दार्शनिक शब्दों में निहित गंभीर अर्थों के साथ ही 'गांधी-दर्शन' के परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता को रेखांकित करती है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस मूल्यवान कृति से हमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 'स्वराज संघर्ष' को 'राम के संघर्ष' से जोड़कर देखने की स्पष्ट दृष्टि मिल पाती है। यह तथ्य इस पुस्तक से प्रमाणित हो जाता है कि महात्मा गांधी जहाँ-जहाँ और जब-जब भी बोले, वहाँ-वहाँ उन्होंने राम और उनके उन आदर्शों को आधार बनाया है, जो बापू को बचपन से उनकी माताजी से संस्कारों में मिले थे। गांधीजी ने अपने लेखन और व्यक्तिगत जीवन में सदैव राम और उनके आदर्शों को याद किया है।

इस पुस्तक के पृष्ठ-45 पर 'राम : खादी भी उसके अधीन' विचार सुधी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है, जिसमें बापू ने 'हेमप्रभा दासगुप्ता को 02 जनवरी, 1934 को लिखे पत्र में' कहा है, 'खादी भी राम के अधीन है। खादी में राम होगा तो चलेगी और हममें राम होगा तब भी खादी में बसेगा। इसलिए हम खादी के लिए सब प्रयत्न करें, लेकिन चिंता न करें। चिंता राम करेगा। चिंता करने का अधिकार उनका है, सेवा करने का धर्म हमारा है। जितनी चिंता कम करोगे, उतनी सफलता ज्यादा मिलेगी।' (संपूर्ण गांधी वाङ्गमय, खंड-56, पृष्ठ-447)

इस ग्रंथ के पृष्ठ-30 पर 'तुलसीदास : स्त्री-विरोध वास्तविक नहीं' टिप्पणी आज के राजनीतिक संदर्भ में आँखें खोलने वाली है। गांधीजी ने 'नवजीवन' में 11 अक्तूबर, 1925 को 'सीता का अर्थ' में लिखा था—'तुलसीदासजी की 'रामायण' उत्तम ग्रंथ है, क्योंकि उसकी ध्वनि है—स्वच्छता, दया, भक्ति। उसमें 'ढोल गँवार शूद्र पशु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी' लिखा है, इसलिए यदि कोई पुरुष अपनी स्त्री को ताड़े तो उसकी अधोगति होगी। रामचंद्रजी ने सीताजी पर कभी प्रहार नहीं किया, इतना ही नहीं, उन्हें कभी दुख भी नहीं पहुँचाया। तुलसीदासजी ने केवल एक प्रचलित वाक्य लिख दिया। उन्हें इस बात की कल्पना भी न रही होगी कि इस वाक्य का आधार लेकर अपनी अर्धांगिनी की ताड़ना करने वाले पशु भी निकल आएँगे और यदि स्वयं तुलसीदास जी ने रिवाज के वशवर्ती होकर अपनी पत्नी का ताड़न किया हो, तो भी क्या होता है? ताड़ना अवश्य ही दोषपूर्ण बात है। 'रामायण' पत्नी के ताड़ने के लिए नहीं, पूर्ण पुरुष का दर्शन कराने के लिए, सती शिरोमणि सीताजी का परिचय कराने के लिए और भरत की आदर्श भक्ति का चित्र-चित्रित करने के लिए लिखी गई है। दोषयुक्त रिवाजों का जो समर्थन उसमें पाया जाता है, वह त्याज्य है।' यह पुस्तक 'धरोहर कृति' मानी जाएगी।

विद्यालयीन शिक्षा और कानून

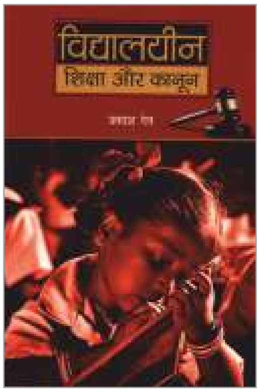

समीक्षक : **रमेश कुमार सिंह**

लेखक : **प्रकाश देव**

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 506

मूल्य : रु. 575/-

यह पुस्तक हमारे देश के विद्यालयों में शिक्षा से संबंधित प्रावधानों और अधिनियमों के बारे में है। यह शिक्षकों, प्रधानाचार्यों, शिक्षाधिकारियों और अभिभावकों को ध्यान में रखकर लिखी गई है। लेखक प्रकाश देव शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े रहे हैं, अतः उनके प्रत्यक्ष अनुभव इस पुस्तक में सन्निहित हैं। लेखक ने शिक्षा का महत्व और इसके अधिनियमों की महत्ता दिखाने के लिए प्राचीन और समकालीन उदाहरण, उद्धरण और महापुरुषों की सूक्तियाँ भी दी हैं।

पुस्तक में शिक्षा के लिए संवैधानिक प्रावधानों, आयोगों, घोषणाओं और नीतियों की चर्चा है। इसमें स्कूली बच्चों के लिए

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा दिए गए सुझावों का भी उल्लेख है।

देश में स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम के निर्धारण हेतु आयोग और समितियों का गठन होता रहा है। इनके द्वारा बच्चों को क्या, कैसे और कितना सिखाया जाए और उनका मूल्यांकन कैसे हो, इसकी सिफारिशें की गई हैं। इनकी चर्चा इस पुस्तक के 'विद्यालयीन शिक्षा में क्या हो' शीर्षक अध्याय में है।

भारतीय संविधान में छह से चौदह साल की उम्र वाले सभी बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान है। इसके लिए स्कूली शिक्षा का प्रबंधन कैसे हो, इसका विस्तृत वर्णन इस पुस्तक में है। हमारे देश में दिव्यांग बच्चों को समावेशी शिक्षा में शामिल करने के विशेष प्रावधान हैं। साथ ही, अल्पसंख्यक समुदाय के बच्चों और सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के बच्चों की शिक्षा के लिए भी संवैधानिक व्यवस्था है। पुस्तक में इन प्रावधानों की चर्चा के लिए अलग अध्याय हैं।

हरेक माता-पिता की अपेक्षा होती है कि उनका बच्चा स्कूल में सुरक्षित रहे। विद्यार्थियों की सुरक्षा विद्यालयों का विशेष दायित्व है। इसके लिए कई कानूनी प्रावधान भी हैं। स्कूल में कई बार शिक्षक बच्चों को अनुशासन के नाम पर शारीरिक दंड देते हैं। हमारे देश में विद्यार्थियों को शारीरिक दंड न देने और मानसिक रूप से प्रताड़ित न करने के संबंध में कई कानून हैं। पुस्तक में चर्चा है कि ये अधिनियम बच्चों को किसी भी तरह के पक्षपात या भेदभाव से भी रक्षा करने के लिए बनाए गए हैं।

माना जाता है कि शिक्षा का माध्यम जहाँ तक संभव हो, मातृभाषा होना चाहिए। शिक्षा आयोगों ने भाषा के बारे में कई सुझाव दिए हैं। लेखक के अनुसार, 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' ने संभवतः भाषा को सर्वाधिक महत्व दिया है। भाषाई विकास पर इसमें संभवतः सबसे अधिक अनुशंसाएँ की गई हैं।'

लेखक के अनुसार, किसी भी देश का भविष्य इस पर निर्भर होता है कि उस देश के बच्चों को कैसी शिक्षा मिलती है। उनका शैक्षिक विकास अच्छे, सुरक्षित, भयमुक्त, परस्पर सहयोगी, आनंददायी और रचनात्मक वातावरण में होना चाहिए। एक अच्छा शिक्षक ही विद्यार्थियों को अच्छे मार्ग पर ले जा सकता है। लेखक मानता है कि हर व्यक्ति को अपने कुछ शिक्षक जीवन भर याद आते हैं।

शिक्षकों के प्रशिक्षण, नियुक्ति, सेवा-शर्तों और सुविधाओं के संदर्भ में समय-समय पर शिक्षा आयोगों ने सिफारिशें की हैं। पुस्तक में इन अनुशंसाओं का वर्णन है। साथ ही, इसमें कुछ अन्य महत्वपूर्ण योजनाओं और अधिनियमों की भी चर्चा है, जैसे—मिड डे मील योजना, बाल श्रम के निषेध के प्रावधान, राष्ट्र के प्रति सम्मान संबंधी प्रावधान, शिक्षा कर्मियों की सुरक्षा से संबंधित अधिनियम आदि। किंतु लेखक के अनुसार, पुस्तक में दिए गए शैक्षणिक बिल, अधिनियम, नियम और नीतियों के अनुच्छेद, कथन, टिप्पणियाँ और विचार विद्यालयों के संदर्भ और मार्गदर्शन मात्र के लिए है। इसे अधिकृत दस्तावेज की तरह नहीं देखा जाना चाहिए। कानूनों में संशोधन होते रहते हैं। पाठकों को इन संशोधनों से अवगत रहना भी आवश्यक है।

पुस्तक के परिशिष्ट में शैक्षणिक संस्थानों में अनुशासन, सुरक्षा, महामारी की स्थिति आदि से जुड़ी प्रशासनिक एडवाइजरी के क्यूआर कोड और वेबसाइट दिए गए हैं। परिशिष्ट में पुस्तक में वर्णित अधिनियमों का सारांश, संदर्भ साहित्य और हिंदी के विशिष्ट शब्दों के सामान्य अर्थ भी दिए गए हैं।

शिक्षा हमारा संवैधानिक अधिकार है। यह पुस्तक पाठकों को इस अधिकार के प्रति जागरूक करती है, उन्हें अपने कर्तव्यों के प्रति सजग और शिक्षा से वंचित बच्चों के प्रति संवेदनशील बनाती है। पुस्तक के अंत में शिक्षा से जुड़ी कुछ नकारात्मक खबरों की हेडलाइंस दी गई हैं। इनके नीचे कैप्शन है—'कानून की अज्ञानता किसी अपराध के लिए क्षमा का आधार नहीं है।' साफ है कि शिक्षा संबंधी नियम और कानूनों को जानना जरूरी है और उनका अनुपालन करना भी। यह पुस्तक इसमें मदद करेगी।

विष विज्ञान

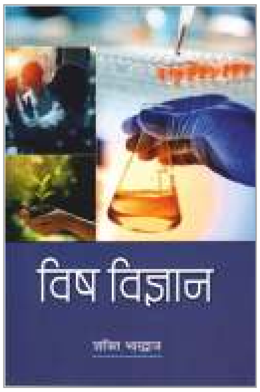

समीक्षक : **डॉ. सुशीलकुमार फुल्ल**

लेखक : **शक्ति भारद्वाज**

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 110

मूल्य : रु. 165/-

विष एक ऐसा विषय है जो आदिकाल से ही मनुष्य को आकर्षित भी करता रहा है और अपनी मारक क्षमता के कारण भयभीत भी करता रहा है। समुद्र मंथन की बात हो तो भी, अमृत निकलने से पहले विष निकलने का प्रसंग भारतीय मानस में रचा-बसा है और फिर अब तो विष के औषधीय गुण भी निरंतर अनुसंधान का विषय रहे हैं। विष जहाँ जीवन का क्षरण करने वाला है, वहीं यह जीवनदायिनी भी है। अस्तु विष का ज्ञान-विज्ञान सदा ही वैज्ञानिकों की रुचि का केंद्र रहा है। आज के भौतिकवादी और सुख-सुविधाओं से संपन्न जीवन में विष एवं विषाक्तता का प्रभाव और भी ज्यादा हो गया है। हमारे खान-पान, रहन-सहन, आस-पास परिवेश में या औद्योगिक परिवेश में उसके अधिकतर दुष्प्रभाव सहसा वैज्ञानिकों का ध्यान खींचने लगे हैं। हम अपने स्वास्थ्य के प्रति भी चिंतित होते हैं क्योंकि सब्जियों पर छिड़के

कीटनाशक, रसायन तथा उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग अनेक चीजो को निरंतर विषाक्त बना रहा है ।

डॉ. शक्ति भारद्वाज की पुस्तक 'विष विज्ञान' आम पाठक की अनेक जिज्ञासाओं को सही संदर्भों में उठाते हुए विष की व्यापकता को वैज्ञानिक ढंग से रेखांकित करते हुए आधारभूत परिचय सधी हुई शब्दावली में सहजता के साथ प्रस्तुत करती है। पुस्तक 12 अध्यायों में विभक्त है अर्थात विष विज्ञान, पर्यावरण विष विज्ञान, खुराक प्रतिक्रिया संबंध, भारी धातु, कीटनाशक, फोरेंसिक विष विज्ञान, जीनोबायोटिक रसायनों की विषाक्तता, जीनोबायोटिक्स का जैव संचय, जीनोबायोटिक्स का रूपांतरण, विषाक्त पदार्थों का जैवपरिवर्तन, विष विज्ञान के अनुप्रयोग तथा विषनाशक उपचार। आदिकाल से ही विष विषय प्रासंगिक रहा है क्योंकि जीवन और मरण से बढ़ कर कोई और बात ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं हो सकती। औद्योगीकरण के कारण अनेक विषैले पदार्थों का उत्सर्जन होता है जो भूमि और जल के लिए बेहद हानिकारक सिद्ध होता है और मानव जीवन के लिए एक चुनौती के रूप में उभरता है। खान-पान पर इसका दुष्प्रभाव अनेक बीमारियों को जन्म देता है। परिणामतः जीवन सुखद होने की बजाय उलझनपूर्ण एवं कष्टप्रद हो जाता है।

पर्यावरण प्रदूषण वानस्पतिक संपदा के ह्रास का कारण बनता है। जैव संपदा का विनाश सामाजिक विषाक्तता को जन्म देता है। प्रस्तुत पुस्तक में विदुषी लेखिका ने सारगर्भित ढंग से विष विज्ञान के अनेक पक्षों को बड़ी कुशलता से समेटा है। पाठ्यपुस्तक की शैली में तैयार की गई यह पुस्तक विष विज्ञान के विषय में रुचि रखने वाले किसी भी पाठक के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक संग्रहणीय है।

हम होंगे कामयाब : कैंसर के क्रीड़ांगन में

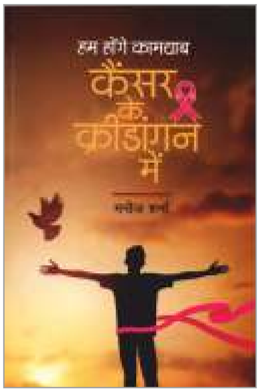

समीक्षक : **फूलचंद मानव**

लेखक : **मनोज शर्मा**

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली-110070

पृष्ठ : 200

मूल्य : रु. 265/-

लोकोपयोगी विज्ञान पुस्तकों की कड़ी में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास समाज के लिए उपयोगी और पठनीय पुस्तकें कम दाम में उपलब्ध करवाता आया है। पेपरबैक किताबें सहज, सुलभ होती रहें, इसके लिए भी देश की राजधानी और विभिन्न प्रांतों में पुस्तक प्रदर्शनी और विक्रय केंद्र आयोजित करवाए जाते हैं। शरीर और मन के विकारों के लिए आज मनुष्य छटपटा रहा है। अस्पताल रोगियों से भरे रहते हैं। महामारियाँ अपना प्रभाव दिखाती हैं तो परिवार के सदस्य भी दंग रह जाते हैं। इलाज के लिए छटपटाते नजर आते हैं। कैंसर का रोग एक डरावनी बीमारी के रूप में विदेश से भारत में आया। इसके उपचार के लिए अलग-अलग स्तरों पर सावधानियाँ बताई जाने लगीं। इलाज के क्षेत्र में डॉक्टरों ने शरीर के अंगों में फैल रहे कैंसर को, अध्ययन और अनुभव के माध्यम से समझा। खोज और शोध के आधार पर इसके लिए दवाएँ विकसित की जाने लगीं। आज मनुष्य इस दिशा में जितनी भी जानकारी रखता है, शायद पर्याप्त नहीं होगी।

कैंसर या इस तरह के रोग भारतीय समाज में दहशत का कारण भी हैं। डॉ. मनोज शर्मा कैंसर के क्रीड़ांगन में फैले हुए बीमारी के लक्षणों को पहचानते हुए जनसामान्य को जागरूक करने की दिशा में प्रस्तुत पुस्तक लिख पाए हैं। किताब में भूमिका के तौर पर 'दो शब्द' और 'आखिर ऐसी पुस्तकें हिंदी पाठकों हेतु क्यों?' परिचय के स्तर पर मुकम्मल जानकारी दे रहे हैं। हमारे यहाँ मनुष्य, परिवार, समाज, अस्पताल आदि विभिन्न भूमिकाओं में सामने आए हैं। हताश या निराश रोगियों के लिए ही नहीं, उनके पारिवारिक सदस्यों के लिए भी सलाह मशविरा है, सम्मतियाँ हैं, उदाहरण और दृष्टांत हैं और व्यवहार में लाने के लिए उपाय या इलाज भी सामने मिल सकते हैं। मनोज शर्मा पुस्तक के 12 अध्यायों में जिस तरह सहज भाव से कैंसर और उसके प्रभावों को खोलने का यत्न कर रहे हैं, यह एक जरूरी प्रयोग है। अध्याय 'जीवन एक खेल', 'हमें होना है कामयाब', 'कैंसर संक्रामक रोग नहीं', 'कैंसर उपचार एक विश्वकप की तरह' में संपूर्ण जानकारी है। इसकी चिकित्सा एक विशाल प्रतिष्ठान के रूप में समझाते हुए यहाँ सहज भाव से लिख रहे हैं कि मुश्किलें व्यक्ति स्वयं बढ़ाने लगता है। निडर होकर गहरे में उतर पाए तो इन सबका इलाज भी पाने लगता है। रोगी और उसके निकटवर्ती लोग कैंसर में असमंजस की हालत में निर्णय नहीं ले पाते। देखा यह भी गया है कि कैंसर के खिलाड़ियों की जिजीविषा ने इस रोग को तिरोहित किया है। आत्मविश्वास के साथ नागरिक या खिलाड़ी किसी भी स्थिति में फतेह प्राप्त कर सकता है। कैंसर के इलाज की शुरुआत के लिए पहले हमें मनोबल से काम लेना होगा। इच्छाशक्ति यदि प्रबल है तो इलाज की शुरुआत भी रोग के खात्मे तक मनुष्य को ले जा सकती है।

रेडिएशन थैरेपी, विकीर्ण चिकित्सा में पीड़ा, दर्द या घुटन से प्राणी छटपटाता है, भटकता हुआ दुखी हो सकता है, लेकिन जो अनिवार्य है, उसके लिए हमें प्रयत्नशील रहना होगा। यों रेडिएशन थैरेपी हो या कीमो थैरेपी, रोगी के हित में उठाए जा रहे कदमों में से सही दिशा अपनाने वाले उपक्रम कहलाते हैं। कैंसर औषधि चिकित्सा, दवाइयों की भरमार, आर्थिक संकट या रोगी का परिवेश, उसको दुविधा में डाल सकता है। लेकिन एक मित्र या सहायक के

नाते कैंसर के क्रीड़ांगन में विचरते हुए डॉक्टर पारिवारिक सदस्य या रोगी स्वयं भी, किस तरह अपने मनोबल से संकल्पपूर्ण भावना को लेकर आगे बढ़ेगा और सफल हो जाएगा। हमारा जीवन एक त्योहार है, एक उत्सव की तरह यदि हम इसमें विचरण करेंगे तो उत्साह और उमंग के साथ चेहरों पर निखार लाकर, हिल-मिलकर सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर त्योहार को संपन्न कर पाएँगे। मायूसी, निराशा, हताशा, जहाँ हमें पतन के गर्त की ओर ले जा रही है, वहीं बीमारी के आलम में उत्सवधर्मिता हमें उभारकर ऊपर ला सकती है। यह वातावरणरूपी परंपरा ही है, जो परिवार के लोग रोगी को दे सकते हैं और सहायक होकर उसके रोग को भी भगा पाने में सफल हो सकते हैं। अभी देश ने ही नहीं, विदेशों में भी कोरोना जैसी महामारी के संकट को झेला है। जो पहले कभी नहीं देखा था, देखने को मिला। कोरोना के साथ ही पिछले डेढ़-दो साल में कैंसर के रोगियों की दुश्वारियाँ, दुविधाएँ, कई प्रश्नचिह्न उठाती रही हैं, लेकिन इनका समाधान भी हमें मिलता आया है।

डॉ. मनोज शर्मा गत पाँच दशक से कैंसर की दिशा में अध्ययनशील रहे हैं। जागरूकतानुसार इसके प्रचार-प्रसार में इनका योगदान सराहनीय रहा है। लेखक का अनुभव विभिन्न संस्थानों में इसी तरह के रोग को भगाने में, बताने में और जानकारियाँ सुलभ करवाने में सहायक सिद्ध होता रहा है। दिल्ली सरकार में कैंसर नियंत्रक सलाहकार के रूप में उन्होंने ख्याति प्राप्त की है। पुस्तक की भाषा आम पाठक के लिए उपयोगी है। रोचक शैली में मेडिकल के विषयों पर हिंदी में लिखने वाले विद्वान बहुत कम मिल रहे हैं। पुस्तक 'कैंसर के क्रीड़ांगन में' निश्चय ही कामयाबी की ओर बढ़ते कदमों में एक ठोस प्रयत्न कहा जा सकता है। रोगियों, उनके संबंधियों, समाज में जिज्ञासु पाठकों के लिए यह पठनीय और संग्रहणीय प्रकाशन है।

भारतीय संत परंपरा में बंगाल के बाउल

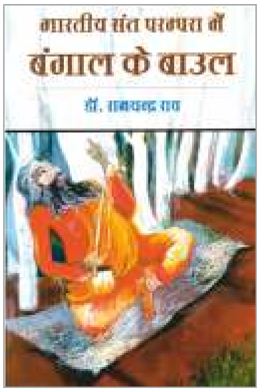

समीक्षक : **रमेश कुमार सिंह**

लेखक : **डॉ. रामचन्द्र राय**

प्रकाशक : शांतिनिकेतन हिंदी प्रचार सभा, शांतिनिकेतन, पं. बंगाल।

पृष्ठ : 152

मूल्य : रु. 150/-

यह पुस्तक बंगाल के बाउलों और उनकी विचारधारा की विशेषताओं के बारे में है। बाउल एक बहुअर्थी और बहुआयामी शब्द है। यह एक संप्रदाय है, विचार पद्धति है, जीवन शैली है और गीत-संगीत भी। रवींद्रनाथ ठाकुर के अनुसार, बाउल 'हमारे लोगों का दर्शन' है, 'मानव धर्म' है।

पुस्तक में बाउल शब्द के अनेक अर्थ बताए गए हैं। इसका एक अर्थ है—बावला या पागल। ये लोग लोक प्रचलित रीति-रिवाजों को नहीं मानते, उन्मुक्त हृदय होते हैं, अपने आप में मस्त। ये स्वयं को 'बाउल' यानी 'पागल' कहते हैं। यहाँ तक कहते हैं कि इन्हें जीवित ही मृत मान लिया जाए। लेखक के अनुसार, "बाउल शास्त्राचार एवं लोकाचार को नहीं मानते हैं, केवल रस और भाव के मार्ग को जानते हैं।"

इस पुस्तक में बाउलों की जीवन-शैली का वर्णन है। बाउल दो तरह के होते हैं—घुमक्कड़ और गृहस्थ। घुमक्कड़ बाउल दानाश्रयी होते हैं। ये अपनी वृत्ति को 'मधुकरी' कहते हैं। मधुकरी का अर्थ है—भिक्षाटन। ये लोग जो गीत गाते हैं, उनकी सरलता और भाव की गहराई मन को छू लेती है। लेखक के अनुसार, "इन लोगों का कोई लिखित शास्त्र नहीं है। इनका साहित्य मुख्यतः वाक् साहित्य ही रहा है। यह एक निरक्षर समुदाय की सृष्टि है। यह संपूर्ण रूपेण लौकिक धर्म मत है।"

लेखक ने बाउल पंथ की प्रमुख विशेषताएँ बताई हैं। इस सरल-सहज समुदाय की एक विशेषता है, प्रेम और मानवता में गहरी आस्था। बंगाल के सहजपंथी संत कवि चंडीदास की उद्घोषणा है—"मानुष सत्य ही सबसे बड़ा सत्य है और उससे बड़ा कुछ भी नहीं"। यही बाउल दर्शन का आधार है। सूफियों का जीवन-दर्शन भी बाउलों से मिलता-जुलता है। सूफी कवि जायसी 'पद्मावत' में कहते हैं, 'मानुष प्रेम भयऊ बैकुंठी, नाहि तो काह छार इक मुट्ठी' (प्रेम के प्रभाव से मानव जीवन स्वर्ग जैसा होता है, अन्यथा यह मुट्ठी भर राख के सिवा और क्या है)।

बाउल साधना पद्धति पर तंत्र का भी कुछ प्रभाव है। इसमें गुरु का बड़ा महत्व है, उसके प्रति अपार श्रद्धा है। यहाँ गुरु के गौरव के अनेक गीत हैं। परंपरा भंजक और काया साधना समर्थक बाउल गीत भी बहुतायत में हैं। बाउल मानते हैं कि शरीर में ही ईश्वर का वास है। शरीर प्रेम का साधन है। प्रेम जो लौकिक भी है, अलौकिक भी। लेखक के अनुसार, 'शरीर ही इनकी साधना का केंद्र है।'

पुस्तक के 'परिशिष्ट' में आचार्य क्षितिमोहन सेन की बांग्ला पुस्तक 'बांग्लार बाउल' का हिंदी अनुवाद 'बंगाल के बाउल' शीर्षक से दिया गया है। लेखक रामचंद्र राय द्वारा पुस्तक के इस हिस्से को 'परिशिष्ट' कहा गया है। यह उचित नहीं लगता। यह 'परिशिष्ट' पुस्तक के आधे से भी अधिक भाग को घेरे हुए है। हालाँकि लघु आकार परिशिष्ट होने का अपरिहार्य गुण नहीं है। किंतु यहाँ तो यही भाग पुस्तक का मुख्य और महत्वपूर्ण हिस्सा है, प्राण है। बल्कि रामचंद्र राय द्वारा लिखे गए हिस्से को पुस्तक की भूमिका कहा जा सकता है।

बाउल मानते हैं कि उनका सहज धर्म मानव की उत्पत्ति के साथ ही आरंभ हो गया था। क्षितिमोहन सेन ने प्राचीन ग्रंथों में बाउल मतों के तत्व ढूँढ़े हैं। उनकी पुस्तक में संस्कृत के उद्धरणों के अनुवाद भी हैं। उन्होंने कबीर और अन्य संतों की वाणी और बाउल गीतों में समानता दिखाई है। सेन कहते हैं, "कबीर में बाउल मत की सभी बातें मिलती हैं।" डॉ. राय भी इससे अंशतः सहमत हैं। लेखक के अनुसार, बाउल कवि फकीर लालन शाह को 'बंगाल का कबीर' कहा जा सकता है। ये दोनों, मनुष्यों के बीच जाति, धर्म, संप्रदाय और ऊँच-नीच की बुराइयों के विरुद्ध खड़े दिखाई देते हैं। बाउल दर्शन सामाजिक सद्भाव और प्रेमभाव का दर्शन है। बाउल संस्कृति का मुख्य केंद्र बंगाल है। वहाँ के साहित्य और संस्कृति पर बाउल मत का गहरा प्रभाव पड़ा है। बंगाल से बाहर की दुनिया को बाउल विचारधारा का परिचय कराने हेतु गहरे शोधपूर्ण साहित्य की आवश्यकता है।

इस पुस्तक से पाठकों को बाउल जीवन दर्शन की झलक मिलेगी तथा इसके बारे में और अधिक जानने की उत्सुकता होगी।

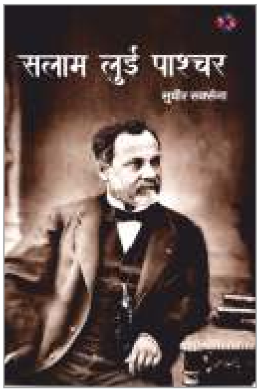

समीक्षक : **प्रमोद भार्गव**

लेखक : **सुधीर सक्सेना**

प्रकाशक : आईसेक्ट पब्लिकेशन, भोपाल (मध्य प्रदेश)।

पृष्ठ : 184

मूल्य : रु. 250/-

सलाम लुई पाश्चर

विज्ञान को लोक में प्रचलित करने की दृष्टि से अनेक अभियान सरकारें चलाती रही हैं, लेकिन विज्ञान का लोकव्यापीकरण बीते 75 सालों में उतना नहीं हो पाया, जितना होना था? इन अभियानों की सार्थकता कालांतर में भी सिद्ध हो पाएगी, ऐसा लगता नहीं है। तथापि अब यह उम्मीद बढ़ रही है कि विज्ञान का लोकव्यापीकरण हो जाएगा, क्योंकि वैज्ञानिकों के जीवनवृत्त उनके सिद्धांतों, आविष्कारों और उनकी मानवता के लिए प्रदेय का आख्यान कविता में कहा जाने लगा है। साथ ही, विज्ञान सम्मेलनों की श्रृंखला चल पड़ी है। इन कविताओं के संकलन सारगर्भित भूमिका के साथ पुस्तकों का भी आकार लेने लगे हैं। इस क्रम में मेरे हाथ पत्रकारिता के सुपरिचित हस्ताक्षर सुधीर सक्सेना की सद्य प्रकाशित कृति 'सलाम लुई पाश्चर' आई है।

दरअसल विज्ञान लेखन, चाहे वह कविताओं में हो या साहित्य की अन्य विधाओं में, उसे आलोचकों ने मुख्य धारा का लेखन नहीं माना। तत्पश्चात हिंदी में विज्ञान कथा लेखन का आरंभ 19वीं सदी के उत्तरार्ध में ही होने लगा था। बंगाली और मराठी भाषाओं में तो विज्ञान गल्प की समृद्ध परंपरा रही है। इसलिए बांग्ला में रवींद्रनाथ टैगोर भी गल्प लिखते हैं और महान वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु भी। मराठी वैज्ञानिक जयंत विष्णु नार्लीकार तो विज्ञान कथा लेखन में सिद्धहस्त थे। डॉ. धर्मवीर भारती ने उनकी कहानियों और लघु उपन्यासों के हिंदी अनुवाद 'धर्मयुग' में खूब छापे। हालाँकि स्वयं सुधीर सक्सेना ने पुस्तक में इतनी सटीक और विस्तृत भूमिका लिखी है, जो विज्ञान कविताओं के साथ वैज्ञानिकों के आविष्कारों का भी इतिहाससम्मत वृत्तांत प्रस्तुत करती है। सच्चाई तो यह है कि यह भूमिका भारतीय परिप्रेक्ष्य में विज्ञान लेखन का ऐसा समालोचनात्मक निबंध बन गया है, जो भारतीय भाषाओं के पाठ्यक्रम में शामिल किए जाने योग्य है।

भारत में बहुभाषी विज्ञान कविताओं को भले ही अब मान्यता मिल रही हो, परंतु वास्तविकता है कि आज हम रामायण हो या महाभारत, उन्हें इसीलिए सुरक्षित पाते हैं, क्योंकि वे काव्य रचनाएँ हैं। आज निर्विवाद रूप से विश्व यह मानता है कि न केवल गणित की उत्पत्ति भारत में हुई, बल्कि शून्य का आविष्कार भी भारत में हुआ। वस्तुतः हकीकत तो यह है कि गणित और शून्य एक-दूसरे के पूरक हैं। शून्य नहीं होता तो गणित भी कहाँ होता? आक्रांताओं के भारतीय ज्ञान पर हुए आक्रमण के तदंतर शून्य के आविष्कार का महत्व जताता 'ईशावास्योपनिषद्' में उल्लेखित मंत्र इसलिए सुरक्षित रहा, क्योंकि वह कविता में था—

ऊं पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते॥

अतएव कहा जा सकता है कि भारत में विज्ञान कविता की विधा में रचित होने के कारण ही तमाम झंझावातों के बावजूद लोक में व्याप्त रहा। आर्यभट्ट के खगोलीय सिद्धांत भी 'आर्यभटीय' में पद्य में ही हैं। 'सिद्धांत शिरोमणि' में भास्कराचार्य के गुरुत्वीय सिद्धांत को भी हम काव्य-रूप में आख्यायित होने के कारण जानते हैं।

भूमिकाओं के पाठ के बाद जब वैज्ञानिकों के जीवन-वृत्त पर सृजित कविताओं का पाठ करते हैं तो वैज्ञानिकों की सृजनात्मकता के प्रति ऐसी विनम्र कृतज्ञता है, जो वैज्ञानिकों पर किए लेखन में अपवादस्वरूप ही देखने में आती है। संग्रह की पहली कविता 'एक्वा-रेजिया' है। रसायन विज्ञान के जानकार जानते हैं कि इस शब्द-युग्म का अर्थ 'अम्लराज' है। जैसे रसायन के सूत्र हैं, वैसे ही कविता भी एक सूत्र है। लेकिन समर्थ कवि की विलक्षणता है कि वह रचना को इस तरह परिभाषित करे कि पाठक अर्थ को सरलता से समझ ले।

भौतिकी में जब बीती सदी के आरंभ में यह माना जाने लगा था कि अब इस विषय में कुछ मौलिक करने को नहीं रह गया है, तब

मैक्स प्लैंक ने कृष्ण-पिंडों के विकिरण का अध्ययन करके क्वांटम कणों के उत्सर्जन की गुत्थी को सुलझाया। इन्हीं मैक्स के जीवन संघर्ष और सिद्धांत को कविता में याद किया है।

हेली पर लिखी कविता में कवि ने वैज्ञानिक हेली के प्रति शुक्रिया इसलिए जताया, क्योंकि वे हेली ही थे, जिन्होंने न्यूटन की प्रसिद्ध पुस्तक 'प्रिंसीपिया' अर्थात 'प्राकृतिक दर्शन के गणितीय सिद्धांत' के प्रकाशन का प्रबंध किया। सापेक्षता का सिद्धांत देने वाले आइंस्टीन और गुरुत्व व गति के नियम देने वाले न्यूटन, लैवाइजिए, लोमोनोसोव, हर्शेल, टाइको ब्राहे, लुई पाश्चर, फैराडे, डेनियल गैबिएल, फ्रेडरिक केकुले, नील बोर, रदरफोर्ड, रॉबर्ट हुक एडिसन, दिमित्री इवानोविच और आर्किमिडीज के जीवनवृत्त तो हैं ही, इस कड़ी में भारतीय वैज्ञानिक आर्यभट्ट, रामानुजन, होमी जहाँगीर भाभा, जगदीशचंद्र बसु, सी.वी. रमन, विश्वेश्वरैया के जीवनवृत्त भी हैं।

इन कविताओं को पढ़ना विभिन्न विषयों, सिद्धांतों और आविष्कारों से परिचित होना भी है। दो पन्नों की कविता में वैज्ञानिक अनुसंधान भी है, अनुसंधान का मनुष्य के लिए उपयोग भी। अकसर विज्ञान के सूत्र जटिल और रहस्यमयी माने जाते हैं, लेकिन सुधीर सक्सेना ने इन्हें इतनी सरल भाषा में परिभाषित किया है कि विज्ञान का कम जानकार भी इन कविताओं को आसानी से आत्मसात कर सकता है। विज्ञान को लोक में व्याप्त कर मानवीय चेतना को जागरूक करने का कविता के अलावा अन्य कोई दूसरा माध्यम नहीं है।

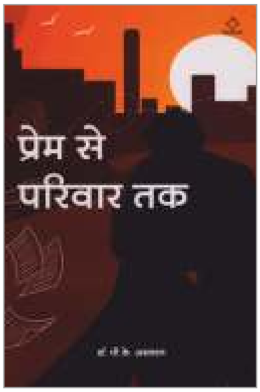

समीक्षक : **डॉ. सुशीलकुमार फुल्ल**

लेखक : **डॉ. पी.के. अग्रवाल**

अनुवादक : **नीलम भट्ट**

प्रकाशक : शाश्वत पब्लिकेशन, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

पृष्ठ : 112

मूल्य : रु. 230/-

प्रेम से परिवार तक

पुस्तक 'प्रेम से परिवार तक' मानव इकाई के घर-परिवार से होकर समाज तक जाने की यात्रा का रोचक वर्णन है। यह उपन्यास का दूसरा संस्करण है। डॉ. प्रभात कुमार अग्रवाल स्वयं भारतीय प्रशासनिक सेवा में रह चुके अधिकारी हैं। प्रेम एक नैसर्गिक ऊर्जा है। मित्रों में, संगठन में, छात्रावास में, अध्ययन कक्षों में या नौकरी-पेशा समाज में कहीं भी रहें, प्यार का ताना-बाना स्वयं बुना जाता है। चाहते-न-चाहते हुए प्रेम या घृणा मनुष्य मन में प्रकट होते रहते हैं। उनका प्रदर्शन भी होता है और कई बार इनको रोकने की चेष्टा भी की जाती है। लेकिन प्रेम तो स्वतः स्फुटित प्रक्रिया है। कभी एक तरफ से तो कभी दोनों तरफ से, ये सक्रिय होकर साकार रूप लेते हैं, तो जीवन की दिशा किसी भी छोर तक जाकर विराम पा सकती है।

अपने-अपने अध्ययन काल में विद्यार्थी कॉलेजों, यूनिवर्सिटियों में पढ़कर उच्च शिक्षा के लिए या नौकरी के लिए चयनित होने पर जब छात्रावास में एक साथ जीवन व्यतीत करते हैं तो वहाँ की अनुभूतियाँ जो रंग ला सकती हैं, इसी रूपरेखा पर प्रस्तुत उपन्यास का ताना-बाना सजाया गया है। उच्च वर्ग सामान्य परिवार अथवा आर्थिक स्तर पर विपन्न घरानों से भी शिक्षा पाए छात्र-छात्राएँ अपने-अपने संस्कारों में नागपुर के छात्रावास में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं, लड़के भी और लड़कियाँ भी। प्रेमसुख, यौन आकर्षण और उम्र की जरूरत इन्हें विवश करती है विपरीत लिंग के प्रति खिंच जाने के लिए। यही आकर्षण कब-क्या रूप धारण कर लेता है, इसकी कथा-व्यथा 'घर से परिवार तक' उपन्यास में पी.के. अग्रवाल ने प्रस्तुत की है। "नागपुर में इनकम टैक्स अफसरों के लिए प्रशिक्षण कॉलेज था। आईएएस आदि की कठिन परीक्षा पास करने के पश्चात भारत के विभिन्न प्रांतों से युवक एवं युवतियाँ यहाँ आए थे। अधिकांश लोग विश्वविद्यालय के जीवन या नौकरी के संधि स्थल पर थे। यद्यपि आईएएस परीक्षा की गंगा पार करने के उपलक्ष्य में राष्ट्रपति ने उन्हें प्रथम श्रेणी के अफसर का ताज पहना दिया था, पर यह ताज उन्हें भारी ज्ञात हो रहा था। विश्वविद्यालय के हल्के एवं ताजगी भरे वातावरण से संबंध-विच्छेद करना उनके लिए शीघ्र संभव नहीं था।" पृष्ठ एक के इन्हीं प्रारंभिक वाक्यों से शुरू हुई यह दास्तान, हिलने-मिलने, भ्रमण पर जाने, कक्षाएँ लगाने व संवाद से, खान-पान जैसी क्रियाओं को साथ-साथ दिखाई, बताती चल रही है। नायक-नायिका ही नहीं, यहाँ उपनायक और दूसरे नर-नारी पात्र भी जिस तरह से चित्रित किए गए हैं, बहुत सहज और स्वाभाविक जान पड़ते हैं।

हमारे संस्कार, रूढ़ियाँ, आदर्शवादिता, उत्साह, अति आधुनिकता जैसा बहुत कुछ यहाँ 20-22 अध्यायों में गुंफित हुआ है। पी.के. अग्रवाल एक कथाकार, उपन्यासकार, निबंधकार या नाट्य रूपांतरकर्ता के रूप में भी इस कृति द्वारा परिचित हुए हैं। 'घर से परिवार तक' रहना-सहना, होना-कहना, भोगना-झेलना, ऐसा बहुत कुछ है, जो उम्र के इस भाग में सहज, स्वाभाविक सामने आ रहा है और पात्रों को चरित्रांकित करके दर्शा रहा है। संभवतः हिंदी भाषी लेखक की जुबान, लेखकीय भाषा उपन्यास में पंडिताऊ जान पड़ती है। उपन्यास एक सरल, सहज कृति के रूप में हमारे सामने आता है या निर्धारित पाठ्यक्रम का हिस्सा भी कहला सकता है, लेकिन यहाँ 112 पन्नों के इस उपन्यास में कई जगह 'शुद्ध हिंदी'

कुछ पाठकों के लिए शायद अनुकूल न बैठ पाए, तत्सम और तत्भव की दृष्टि से भी।

युवा अफसरों की मानसिकता, उनकी यौवनावस्था का विवरण विश्लेषण या भावानुभूति इस उपन्यास में रेखांकित की गई है। समाज के आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक भेदों को भी पात्रों के माध्यम से दर्शाया गया है। मनुष्य मात्र सहज ही अपने आप को दूसरों से आगे और ऊपर मानता आया है, लेकिन स्थितियाँ, पारिवारिक परिवेश और संस्कार उसका पीछा नहीं छोड़ते। 1970-80 के दौरान स्वयं लेखक एक प्रशिक्षणार्थी इसी अवस्था में नागपुर में रहा है। ऐसे में आत्मकथा, आत्मकथात्मक विवरण, डायरी, संस्मरण या स्मृतियाँ, इन सबको मिलाते हुए जिस रूप में प्रेम से परिवार तक उपन्यास के रूप में पाठक के सामने आ रहा है, पठनीय उपन्यास कहला रहा है। शैली, शिल्प, मुहावरा और कथ्य लेखकीय तनाव में पाठक को बाँधते हैं।

भारतीय राजस्व सेवा अधिकारियों के जीवन पर आधारित उपन्यास 'प्रेम से परिवार तक' रचनाकार डॉ. प्रमोद कुमार अग्रवाल की एक पठनीय कृति है। पाठक प्रेम के प्राकृतिक आनंद की अनुभूति पा सकेंगे।

ऑपरेशन गंगा
(डायरी ऑफ अ पब्लिक सर्वेंट)

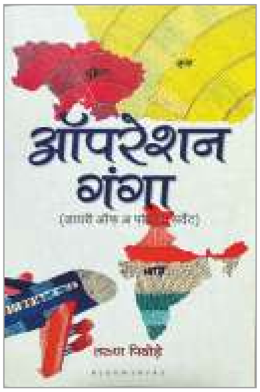

समीक्षक : **ब्रजेश राजपूत**

लेखक : **तरुण पिथोड़े**

प्रकाशक : ब्लूम्सबरी पब्लिशिंग, नई दिल्ली।

पृष्ठ : 202

मूल्य : रु. 282/-

हम उस दौर में जी रहे हैं जिसमें हमारी पीढ़ी मानव सभ्यता के दो बड़े दुश्मन महामारी और युद्ध दोनों को करीब से देख रही है। चर्चित इज़रायली इतिहासकार युवाल नोआ हरारी ने अपनी किताब 'सेपियंस' में लिखा था कि वो दौर गुजर गया जब महामारी और युद्ध में लाखों लोग खो देते थे, मगर महामारी और युद्ध लौट आया है। कोरोना का दौर मुश्किल से गुजरा था कि एक साल पहले रूस ने पड़ोसी यूक्रेन के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। एक युद्ध हजारों परेशानियों को जन्म देता है। ताकतवर रूस ने जब यूक्रेन के खिलाफ हमला किया तो समझा गया कि दबाव बनाने की राजनीति है, कुछ दिनों में ही ये सब सिमट जाएगा। मगर दिनों-दिन युद्ध गहराया तो दुनिया की चिंता सामने आई।

इस युद्ध को लेकर भारत की सबसे बड़ी चिंता यूक्रेन में पढ़ने वाले बीस हजार से ज्यादा विद्यार्थियों की थी। पिछले कुछ सालों में यूक्रेन मेडिकल की पढ़ाई का बड़ा सेंटर बन गया है। वो छात्र जो हमारे देश में सरकारी और गैर-सरकारी मेडिकल कॉलेज में दाखिला नहीं पा पाते, वो थोड़े कम खर्चे में यूक्रेन जाते हैं पढ़ाई करने। ये छात्र वहाँ से लौट कर एक परीक्षा देते हैं और देश में मेडिकल प्रोफेशन में शामिल हो जाते हैं।

यूक्रेन की राजधानी, कीव से लगे कुछ शहर हैं जहाँ बड़ी संख्या में हमारे देश के छात्र पढ़ते हैं। अचानक छिड़े युद्ध ने इनकी परेशानियाँ बढ़ा दीं। खाने-रहने की मुश्किलों के साथ ही जान बचाने का काम भी बढ़ गया। लंबे पावर कट और सायरन बजने पर तहखानों में छिपना पड़ेगा, इन छात्रों ने कभी इस दौर की कल्पना भी नहीं की थी। इन सबको पहले यूनिवर्सिटी ने रोका और जब जाने को कहा तो यूक्रेन में फ्लाइट आनी बंद हो गई। ऐसे में इन सबके सामने लंबी यात्रा कर सीमा के देशों में जाकर वहाँ से निकलना ही एकमात्र रास्ता बचा। ऐसे में फिर शुरू हुआ 'ऑपरेशन गंगा' जिसका मकसद अपने देश के छात्रों को यूक्रेन से सुरक्षित निकालना ही रहा।

संवेदनशील लेखक और मध्य प्रदेश कैडर के आईएएस अफसर तरुण पिथोडे की नई किताब 'ऑपरेशन गंगा : डायरी ऑफ अ पब्लिक सर्वेंट' में इस ऑपरेशन की कथा है जिसमें लेखक ने इस ऑपरेशन के किरदारों से मिलकर उनके किस्से सुने और जाना कि वो बड़े देश के आक्रमण से जूझ रहे छोटे देश से हजारों छात्रों को सीमा पार कराना कितना मुश्किल काम था। तरुण ने यूक्रेन के करीब के चार देशों की यात्राएँ कीं। छात्र-छात्राओं और उनकी मदद करने वाले विदेश विभाग के अफसरों, वहाँ रहने वाले भारतीय और विमान से लाने वाले पायलटों से भी मुलाकात कर एक दिलचस्प किताब लिखी है। किताब पढ़ते हुए छात्रों के उन कठिन दिनों से रू-ब-रू होते हैं, जिनमें उनके पास खाने और पीने के पानी की किल्लत तो होती ही थी, साथ ही जब उनसे सीमा पर जाने को कहा गया तो उनको किन-किन हालातों का सामना करना पड़ा। भारी ठंड में बसों से सीमाओं की ओर जाना, वहाँ पर कई किलोमीटर लंबी लाइन में लगना, कड़ाके की ठंड में थके-हारे छात्रों ने इन सब हालातों का सामना किया और वापस लौटे। इस किताब में तिरंगे की ताकत का भी उल्लेख है कि तिरंगा लगी बसों में भारत के आस-पास के देशों के छात्र भी बैठ जाते थे क्योंकि हमारा तिरंगा आश्वस्ति का प्रतीक बन गया था कि तिरंगा लगी बसों पर कोई हमला नहीं करेगा। प्रधानमंत्री की पहल पर चार मंत्रियों ने यूक्रेन के पड़ोसी देशों में डेरा डाला और छात्रों की देश वापसी में आने वाली छोटी-बड़ी सारी परेशानियों को मिनटों में हल किया। ऐसी ही एक मुसीबत थी लौटने वाले छात्र की जो अपने साथ पेट्स यानी कि पालतू बिल्ली और कुत्ते लाना चाहते थे। उनके बिना वो आने को तैयार नहीं थे, ऐसे में कैसे अथॉरिटी से हरी झंडी मिलने के बाद पिंजरे तलाशे गए और पालतू जानवर लाए गए।

संकट का दौर आता है, चला जाता है, बस याद यह रखा जाता है कि उस दौर से कैसे निपटा गया। यूक्रेन युद्ध में किन हालात में हमारे देश के छात्रों को निकाला गया। यह याद रखा जाए, इसके लिए जरूरी है तरुण पिथोडे की यह किताब, जिसमें बहुत संवेदनशीलता के साथ उस वक्त की कहानी डायरी के तौर पर लिखी गई है। कोविड काल की कथा लिखने वाले एक कुशल प्रशासक से यह उम्मीद तो की जानी चाहिए।

बड़े होने का इंतजार

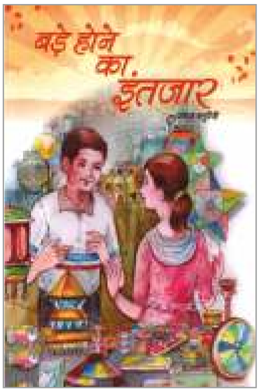

समीक्षक : **संजीव जायसवाल 'संजय'**

लेखक : **पंकज चतुर्वेदी**

प्रकाशक : प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।

पृष्ठ : 66

मूल्य : रु. 150/-

अच्छा बाल साहित्य क्या है? उसमें केवल मनोरंजन होना चाहिए या मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा भी। इस बात पर विद्वानों में लंबे समय से बहस चलती आ रही है और शायद चलती भी रहेगी। विद्वानों ने अच्छी कहानियाँ लिखने के कई सिद्धांत और नियम भी बताए हैं। किंतु इन परिभाषाओं और विमर्शों से परे यदि अच्छी बाल कहानियों को पढ़ने की दरकार हो तो भारत-सरकार के 'प्रकाशन विभाग' द्वारा हाल ही में प्रकाशित पंकज चतुर्वेदी का कहानी संग्रह 'बड़े होने का इंतजार' आपका इंतजार कर रहा है।

पंकज चतुर्वेदी की पहचान एक पर्यावरणविद के रूप में है। जिस तरह वह अपने लेखों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण की सीख देते हैं, उसी तरह अपनी बाल कहानियों के माध्यम से वह बच्चों में एक अच्छा नागरिक बनने के गुणों को संरक्षित करते चलते हैं। संग्रह का शीर्षक 'बड़े होने का इंतजार' स्वाभाविक रूप से आकर्षित करता है। बच्चों की उम्र का वह दौर, जब उनकी गिनती न तो बच्चों में होती है और न ही बड़ों में, अत्यंत नाजुक होती है। कुछ कर गुजरने की ललक और अपनी महत्ता स्थापित करने की जल्दबाजी के बीच, बड़ों की अपेक्षाएँ उनके कच्चे मन में अनेक कुंठाओं, द्वंद्व एवं ग्रंथियों के साथ क्रोधाग्नि को भी जन्म देती है। मानसिक उथल-पुथल की उद्विग्नता में वे कई बार ऐसा कुछ कर गुजरते हैं जिसका परिणाम सुखद नहीं होता है। बालमन को ऐसी दुविधापूर्ण मानसिक स्थिति से उबारने में अभिभावकों के साथ-साथ साहित्यकार भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, क्योंकि उचित मार्गदर्शन से ही बच्चों को सही मार्ग पर लाया जा सकता है अन्यथा उनके अंधकार में भटक जाने की संभावना बनी रहती है।

प्रस्तुत कहानी संग्रह में पंकज चतुर्वेदी ने एक साहित्यकार के रूप में अपनी इस भूमिका का उचित निर्वहन किया है। संग्रह में कुल 15 कहानियाँ संगृहीत की गई हैं जिनकी शैली एवं विषयवस्तु तो भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन प्रत्येक कहानी भरपूर मनोरंजन के साथ-साथ बच्चों के अंतर्मन में, अप्रत्यक्ष रूप से, एक अच्छा नागरिक बनने का गुण विकसित करती चलती है। शीर्षक कहानी 'बड़े होने का इंतजार' में 13 वर्षीय सोनू इसी जद्दोजहद का शिकार है। वह जिद करके स्कूटर तो चला लेता है, किंतु बच्चा होने के कारण उसे भैया की नई मोटरसाइकिल चलाने की अनुमति नहीं दी जाती है। जबकि सोनू को विश्वास है कि वह बड़ा हो चुका है और मोटरसाइकिल चला सकता है। एक दिन वो मोटरसाइकिल लेकर निकल पड़ता है और दुर्घटनाग्रस्त होकर अस्पताल पहुँच जाता है। कहानी के अंत में जब सोनू को पता चलता है कि बड़े भैया मोटरसाइकिल बेचने की बात कर रहे हैं तब वह जिस तरह उनसे लिपटकर माफी माँगता है, वह दृश्य मन को भावुक कर देता है। विश्वास है कि इस प्रभावशाली कहानी को पढ़ने के पश्चात कोई भी बच्चा सोनू जैसी गलती नहीं दोहराएगा।

कहावत है कि भारत त्योहारों का देश है। यहाँ हर ऋतु के अपने त्योहार होते हैं। पंकज चतुर्वेदी ने त्योहारों को आधार बनाकर इस संग्रह में कई कहानियाँ लिखी हैं जिनमें भारतीय संस्कृति, उसकी गौरवशाली विरासत के साथ-साथ सामाजिक एकता एवं सांप्रदायिक सौहार्द की झाँकी भी दिखलाई पड़ती है। कहानी 'हर घर हो दीवाली' में बच्चे अमेरिका गई अपनी दादी को दीपावली की सजावट को लाइव दिखलाते हैं, किंतु दादी की आँखें मिट्टी के बने दीयों को तलाशती रहती हैं। यह कहानी आधुनिक टेक्नोलॉजी के सदुपयोग को दर्शाने के साथ-साथ मिट्टी से बने परंपरागत दीये की महत्ता को भी बढ़ावा देती है ताकि उनको बनाने वाले कारीगरों के घरों में भी खुशियाँ मनाई जा सकें।

कहानी 'प्यार बाँटते चलो' में जिस तरह से हिंदू-मुस्लिम मिलकर ईद की खुशियाँ बाँटते हैं, वह एक सार्थक संदेश देता है। आज ऐसी संदेशपरक कहानियों की अत्यंत आवश्यकता है। 'लो गर्मी आ गई' कहानी में लेखक ने होली के दृश्यों को बिलकुल जीवंत कर दिया है और पाठक उसके रंग में डूबता चला जाता है।

संग्रह की तीन कहानियाँ लोककथाओं पर आधारित हैं, किंतु उनको प्रस्तुत करने की नितांत नवीन शैली ने उनकी रोचकता में वृद्धि कर दी है जिससे ये कहानियाँ अंतर्मन पर एक छाप छोड़ने में सफल रहती हैं। कहानी 'कहाँ गए कुत्ते के सींग' में जिस तरह कुत्ते के सींग भैंस के सिर पर पहुँच जाते हैं, वह अत्यंत मनोरंजक है। कहानी 'अंगुली सा लड़का' में एक अंगुल के कद के नन्हे से लड़के के कारनामे आश्चर्यचकित करते हैं तो कहानी 'नमक की खेती' पिता के द्वारा बच्चों को शिक्षा न दिलवाने के दुष्परिणामों को अत्यंत सशक्तता

के साथ उजागर करती है। यह कहानी मनोरंजन के साथ-साथ समाज में जागृति का संदेश भी देती है।

इस संग्रह की कहानियों में लेखक ने प्राचीन संस्कृति, विरासत, त्योहारों एवं लोककथाओं का आधुनिकता तथा विज्ञान संबंधी विषयों के साथ अत्यंत कुशलता के साथ संतुलन स्थापित किया है। इस दृष्टि से विज्ञान-कथा 'बेलगाम घोड़े' अत्यंत महत्वपूर्ण है जो सभी का ध्यान आकर्षित करने में सफल रही है। इस श्रेष्ठ विज्ञान-कथा में लेखक गोदाम में फेंक दिए गए खराब हो चुके पुराने कंप्यूटरों के माध्यम से कई नई बातों को अत्यंत सहजता व सुगमता के साथ बताते चलते हैं। यह उसका लेखकीय कौशल है जो विज्ञान एवं तकनीकी के गूढ़ सिद्धांतों को मनोरंजक बना कर कहानी के रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत कर देता है। हममें से कोई भी ऐसा नहीं होगा 'जो बड़े होने के इंतजार' के जद्दोजहद से न गुजरा हो। उस समय की अनेक स्मृतियाँ मनमस्तिष्क पर सदैव के लिए संरक्षित हो जाती हैं। इस संग्रह की कहानियों को पढ़ते समय वे स्मृतियाँ उमड़-घुमड़ कर सामने आती रहती हैं। पुस्तक में लोकप्रियता के तत्वों के साथ-साथ सामाजिक एकता, समरसता एवं आधुनिकता का संतुलित समावेश है इसलिए इसकी गिनती बाल साहित्य के महत्वपूर्ण दस्तावेजों में की जा सकती है।

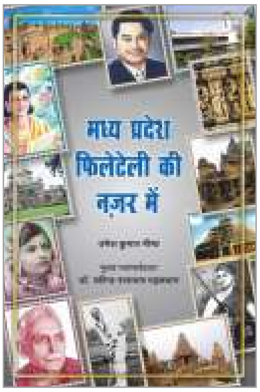

समीक्षक : **ओम पाटोदी**

लेखक : **उमेश कुमार नीमा**

प्रकाशक : वन्दना प्रकाशन, इंदौर, मध्य प्रदेश।

पृष्ठ : 120

मूल्य : रु. 210/-

मध्य प्रदेश फिलेटेली की नजर में

हाल ही में भारतीय डाक विभाग द्वारा जबलपुर, मध्य प्रदेश में आयोजित राज्य स्तरीय फिलेटेलिक प्रदर्शनी (मेपेक्स 2022) में साहित्य वर्ग में रजत पदक से सम्मानित उमेश कुमार नीमा की पुस्तक 'मध्य प्रदेश फिलेटेली की नजर में' की डाक टिकटों के इतिहास का लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है। श्री नीमा की यह किताब जिस खोजपूर्ण तरीके से प्रदेश के डाक टिकटों का इतिहास बखान करती है, उसमें प्रदेश के वरिष्ठ फिलेटेलिस्ट, साहित्यकार एवं विचारक डॉ. श्री रविंद्र पहलवान के निर्देशन की झलक साफ दिखाई देती है। वहीं लेखक के 50 वर्षों के लेखकीय अनुभव को भी प्रदर्शित करती है। श्री पहलवान प्रदेश के फिलेटेलिक जगत में एक माना हुआ नाम है, जो कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश का नाम गौरवान्वित कर चुके हैं। पहलवान का निर्देश इस किताब को विश्वसनीयता प्रदान करता है।

इस किताब में प्रदेश की भोपाल रियासत द्वारा सन् 1876 में पहली बार जारी किए गए डाक टिकट से लेकर अभी तक जारी हुए लगभग 150 वर्षों के डाक टिकटों का क्रमबद्ध इतिहास एवं चित्र में प्रस्तुति न सिर्फ इतिहास में रुचि रखने वाले लेखकों के लिए जानकारी जुटाती है, बल्कि एक सामान्य से विद्यार्थियों के लिए भी पठनीय है। यह किताब पाठक के मन में पढ़ने की जिज्ञासा उत्पन्न करने में सफल साबित होती है। इसमें लेखक ने प्रदेश की 10 रियासतों के डाक टिकटों की जानकारी प्रस्तुत की है, जिसमें लेखक द्वारा बड़वानी, भोपाल, बिजावर, चरखारी, दतिया, धार, ग्वालियर, होलकर (इंदौर), राजनाँदगाँव और ओरछा के पुराने डाक टिकटों को ढूँढ़ कर हू-ब-हू छपवाकर पाठकों के लिए प्रस्तुत करने का अत्यंत ही श्रमसाध्य कार्य किया है। यह हर किसी के बस की बात नहीं है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व प्रदेश की लगभग 47 रियासतों में से मात्र उक्त दस रियासतों (जिन्होंने अपने डाक टिकट जारी किए थे) के 35 डाक टिकटों के साथ ही स्वतंत्र भारत के 87 डाक टिकटों का सिलसिलेवार विवरण इसमें हमें पढ़ने को मिलता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के डाक टिकटों में तो उनके जारी होने की तिथि सहित विवरण पढ़ने को मिलता है, वहीं रियासतों के डाक टिकट में उनके जारी होने के वर्ष के साथ ही वे कब तक प्रचलन में रहे, उसका भी समुचित विवरण हमें सारणी द्वारा प्राप्त होता है, जो बहुत उपयोगी है।

जैसा कि हम जानते हैं कि भारतीय डाक टिकटों की एक महत्वपूर्ण विशेषता रही है कि उनमें मानवजाति के हर पहलू का जिक्र मिलता है, उसी विशेषता को लेकर प्रदेश के डाक टिकटों में भी मानवीय सभ्यता के विकास क्रम को प्रदर्शित करने वाले ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीति, आर्थिक, साहित्यिक पहलुओं को उजागर करने का प्रयत्न हुआ है, परंतु जितना विशाल हमारा प्रदेश है, उतनी ही विशाल इसकी ऐतिहासिक विरासत भी है, यहाँ का पुरातत्व वैभव एवं अद्वितीय मूर्ति का सौंदर्य देखते ही बनता है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में प्रदेश की अग्रणी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता, परंतु भारतीय डाक विभाग द्वारा डाक टिकटों में उतना स्थान मध्य प्रदेश को नहीं दिया गया जिसकी टीस को भी लेखक ने उभारने का प्रयास किया है।

कुल मिलाकर श्री नीमा की यह किताब डाक टिकटों पर हिंदी में उपलब्ध अति अल्प सामग्री की पूर्ति करने का प्रयास करती है और साथ ही डाक टिकट के माध्यम से प्रदेश की ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीति, आर्थिक, साहित्यिक, प्राकृतिक, भौगोलिक गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत करने का सुंदर प्रयास करती है। यही वजह है कि यह हर किसी के लिए पठनीय तो है ही, साथ-ही-साथ संग्रहणीय भी है।

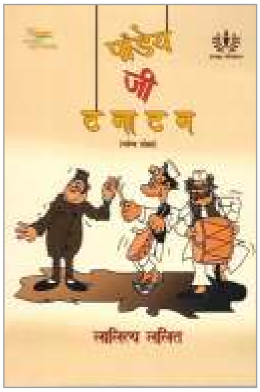

पांडेय जी टनाटन
(व्यंग्य संग्रह)

समीक्षक : **कमलेश पाण्डेय 'पुष्प'**

लेखक : **लालित्य ललित**

प्रकाशक : ज्ञानमुद्रा पब्लिकेशन, भोपाल।

पृष्ठ : 136

मूल्य : रु. 250/-

व्यंग्य साहित्य की वह विधा है जिसमें बेबाक एवं चुटीले अंदाज वाली भाषा न केवल पाठकों को गुदगुदाती है, बल्कि जिंदगी की वह सच्चाई बयाँ कर जाती है जो व्यावहारिक तौर पर व्यक्त नहीं की जा सकती। इस संग्रह में कुल 21 व्यंग्य हैं जिनमें पांडेय जी का किरदार लोगों तक अपनी बात रोचक ढंग से, हास-परिहास व खूबसूरती के साथ पहुँचता है। लेखक ने अपने व्यंग्यों में समाज और व्यक्ति से संबंधित अनेक स्थितियों पर बारीकी से नजर दौड़ाई है। व्यंग्य 'पांडेय जी फेसबुक पर ब्लॉक हुए' में प्रवृत्ति मूलक लोगों के बारे में बताया गया है, जैसे कि सड़ी प्रवृत्ति, सुअर प्रवृत्ति, जल्दबाजी प्रवृत्ति आदि। एक और व्यंग्य 'पांडेय जी और बेमतलब की टेंशन' में जिंदगी के हर क्षेत्र में आने वाली टेंशन का जिक्र है तो 'पांडेय जी प्रेम और पंगे' में सावधान किया है कि जहाँ प्रेम का मामला होता है वहाँ पंगे की गुंजाइश ज्यादा रहती है। लेखक के कथ्य में देखा जाए तो समाज के भोगे हुए पलों का बिंब झलकता है, बनावटीपन की कहीं गुंजाइश ही नहीं है। इन व्यंग्यों में एक खास बात यह है कि ज्यादातर ऐसे पात्र हैं जो अनायास ही हास्य पैदा करते हैं, जैसे कि रामखेलावन, रामप्यारी, गजोधर, लल्लू, गिरधारीलाल टमटा, विलायती राम, कल्लू, चिलमन प्रसाद, फुलमतिया, दगडू, लपकूराम आदि।

इन व्यंग्यों में लेखक ने अपने पाठक को ठहाके लगाने को तो विवश किया ही है, समाज के अंदरूनी लोचे से अवगत कराने का सफल प्रयास भी किया है। सीधा-सादा आदमी आज कब और कहाँ समस्याओं की गिरफ्त में आ जाए, इन व्यंग्यों में ऐसे प्रसंगों को बहुतायत में सम्मिलित किया गया है। यात्राओं में जहाँ सफर को सुहावना बताया है वहीं तकलीफदायक भी साबित किया है। कहीं-कहीं ज्ञान की बातें भी कही गई हैं, जैसे कि 'जीवन में और आचरण में पारदर्शिता होनी चाहिए, जिसने इस सूत्र को जीवन में उतार लिया तो वह घर बैठे हरिद्वार नहा लिया।' इन व्यंग्यों का किरदार 'पांडेय जी' समाज, प्रशासन, राजनीति, साहित्य, गरीब, अमीर, पिछड़े, सवर्ण सब में अपनी भूमिका निभाते हुए व्यवस्थाओं की पोल खोलते हैं। कहीं धुआँ, ट्रैफिक और रोड रेज की घटनाओं से दुखी हैं तो कहीं प्रदूषण से बचाव के लिए मेट्रो से सफर करते हैं। 'पांडेय जी और एयरपोर्ट' व्यंग्य में वे कहते हैं, 'भारतीय रचनाकारों की पहली शर्त यह है कि कोई उदारतापूर्वक निःशुल्क खिलाकर पुण्य कमाना चाहे तो उसके लिए वे मना भी नहीं करते।' अपने व्यंग्य 'पांडेय जी और खेल तमाशे' में लिखते हैं कि 'वार' आठ तरह के होते हैं। सात तो दिनों के वार और आठवाँ 'वर्ल्डवार'। ट्रकों के पीछे लिखी कोरोना वैक्सीन शायरी भी पाठकों के समक्ष रखते हुए वे चुटीलेपन में चार-चाँद लगाते हैं, जैसे कि 'कोरोना से सावधानी हटी, तो समझो सब्जी-पूड़ी बँटी', 'हँस मत पगली प्यार हो जाएगा, टीका लगवा ले, कोरोना हार जाएगा' आदि। संग्रह का एक और सशक्त व्यंग्य है 'पांडेय जी रजिस्ट्री का लोचा', इसमें घर खरीदने वाले को अदालत से लेकर दलालों तक और बाद में किन्नरों को खुश करने तक किन-किन मुसीबतों का सामना करना पड़ता है, सबको चुटीले अंदाज में बताया है। 'ज्योतिषों की दुकानदारी और पांडेय जी' व्यंग्य में हाइटेक ज्योतिषियों को अपने हास्य में शामिल किया है—'इन ज्योतिषियों के रिसेप्शन काउंटर पर खूबसूरत कमसिन बालाएँ शनि की चाल बदलने के नाम पर ग्राहकों की चाल जरूर बदल देती हैं।'

वर्तमान समय में मनुष्य अपने जीवन में इतना व्यस्त हो गया है कि वह हँसना तक भूल गया है। इसी सोच के मद्देनजर लेखक ने जिंदगी में आए विभिन्न अवसरों पर गहरी संवेदना में डूबकर व्यंग्यों के लिए सामग्री इकट्ठी की है। सचमुच आज के समय में दुखों के सागर में डूबे मनुष्य को हँसा पाना सबसे पुण्य का काम है। अपने अगले व्यंग्यों में 'पर्यावरण संतुलन', 'मानसून', 'नए जमाने की चिंता', 'शिफ्टिंग का लोचा', 'लॉकडाउन में पधारें भगवान जी', 'स्वदेश वापसी', 'हवाई यात्रा', 'नया शिगूफा', 'जिंदगी के लोचे' आदि को पांडेय जी के किरदार से जोड़ते हुए हँसने-खिलखिलाने का उन्मुक्त वातावरण बनाया है। प्रत्येक व्यंग्य अपने आप में अनूठा है। इनमें केवल हँसी-ठहाका ही नहीं है, बल्कि जीवन के आदर्शों की बातें भी हैं तो समाज में व्याप्त बुराइयों की भी बखिया उधेड़ी गई है।

आपकी राय का स्वागत है

'पुस्तक संस्कृति' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री पर आपके सुझाव, राय का सदैव स्वागत है। देश-दुनिया के साहित्यिक-सांस्कृतिक परिवेश, प्रकाशन जगत की गतिविधियों पर आपकी सम्मति के लिए आपके पत्र/ईमेल की प्रतीक्षा है।

संपर्क :
संपादक, पुस्तक संस्कृति,
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5, इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-2, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070.
दूरभाष : 267-07758/07876/07700
ईमेल : editorpustaksanskriti@gmail.com

युवा लेखकों के लिए प्रधानमंत्री की मेंटरशिप योजना

"लेखक समाज के मार्गदर्शक और शिक्षक होते हैं।" माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का यह कथन सर्वथा सच है। लेखक ही अपनी कलम से हमारी संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, भूगोल, पर्यावरण, देश-दुनिया, राजनीति जैसे मुद्दों से रू-ब-रू कराता है। न केवल वह हमें जानकारी मुहैया कराता है, अपितु वह हमारा मार्गदर्शन करते हुए चिंतन के बिंदु छोड़ता है। यदि लेखकीय हुनर को लेखन के शुरुआती दौर से ही तराशा जाए तो इसके प्रभाव निश्चित रूप से दूरगामी होंगे। ऐसे में माननीय प्रधानमंत्री जी ने युवा और नवोदित लेखकों को पंख देने के लिए 'प्रधानमंत्री युवा लेखक योजना' शुरू की। इस योजना को वर्ष 2021-22 के दौरान शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'आजादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम के अंतर्गत कार्यान्वयन एजेंसी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के साथ आजादी की 75वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में आरंभ किया गया था। इस अखिल भारतीय प्रतियोगिता में 23 भाषाओं में कथा और कथेतर साहित्य—दोनों श्रेणियों में भारत के राष्ट्रीय आंदोलन, गुमनाम योद्धा, अज्ञात स्थानों की भूमिका, महिला नेताओं आदि विषयों पर 16,000 से अधिक प्रस्ताव प्राप्त हुए। ऐसे में सही पांडुलिपि का चुनाव करना चुनौतीपूर्ण कार्य था, लेकिन न्यास ने सभी प्रस्तावों को त्रिस्तरीय जाँच के माध्यमों से विशेषज्ञों के पैनल द्वारा पढ़ा और परखा। यह भी सुखद है कि चयनित 75 लेखकों की सूची बहुत ही स्वाभाविक तौर पर लैंगिक समानता हासिल करने में सक्षम रही। इस सूची में 38 पुरुष और 37 महिलाएँ स्थान पा सके। इसमें से दो लेखक 15 वर्ष से भी कम आयु के थे।

इन चयनित लेखकों को छह महीने तक ख्यातिलब्ध लेखकों के मार्गदर्शन में शोध, लेखन और भाषा के गुर सिखाए गए और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की संपादकीय टीम ने मार्गदर्शन करते हुए अनुसंधान और संपादकीय सहायता प्रदान की। अथक प्रयासों और लेखकीय मेहनत के बाद इन पुस्तकों ने अंतिम रूप लिया और न्यास के प्रकाशन कार्यक्रम का हिस्सा बन गईं।

इन 75 पुस्तकों का विमोचन 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला-2023' के उद्घाटन सत्र के दौरान माननीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री राजकुमार रंजन सिंह ने किया। हिंदी में प्रकाशित 12 पुस्तकें इस प्रकार हैं—

भारतीय वैज्ञानिक और स्वतंत्रता संग्राम

सदियों से भारत भूमि दर्शन, प्राकृतिक विज्ञान, खगोलशास्त्र, ज्योतिष, धातुकर्म, चिकित्सा, उपचार पद्धति, भाषा और साहित्य की सिरमौर रही है। लेकिन भारत में आधुनिक विज्ञान का प्रवेश प्लासी के युद्ध के 27 वर्ष बाद एक अंग्रेज विलियम जोंस द्वारा किया गया था। तत्पश्चात वैज्ञानिक चेतना के प्रसार और शिक्षण की बागडोर कई भारतीय वैज्ञानिकों ने सँभाली। इनमें से डॉ. महेंद्र लाल सरकार, आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे तथा मेघनाद साहा का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। रॉयल इंस्टीट्यूशन तथा ब्रिटिश एसोसिएशन से प्रेरित होकर डॉ. महेंद्र लाल सरकार ने एक भारतीय विज्ञान संस्थान की स्थापना की अनुशंसा सबसे पहले की।

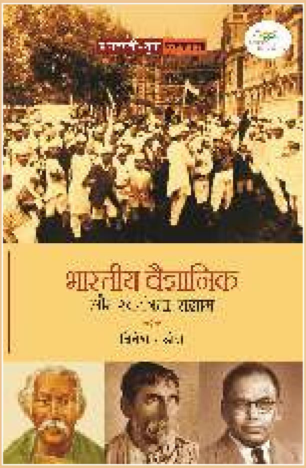

ISBN 978-93-5491-675-5

लेखक

दिनेश मंडोरा

दिनेश मंडोरा (01 दिसंबर, 1995) अलवर, राजस्थान में रहते हैं। उन्होंने अभियांत्रिकी में स्नातक और भौतिक विज्ञान में स्नातकोत्तर किया है। विज्ञान साहित्य, दर्शन और इतिहास में उनकी विशेष रुचि है। वर्तमान में वे एक शैक्षणिक संस्थान में अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। क्वोरा प्रश्नोत्तर मंच पर विज्ञान से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देना, विज्ञान के प्रति रोचक लेखन उन्हें पसंद है।

मालवा के महानायक
कुँवर चैन सिंह

कुँवर चैन सिंह मध्य प्रदेश में भोपाल के निकट स्थित नरसिंहगढ़ रियासत के राजकुमार थे। उन्होंने रियासत, वंश परंपरा तथा देश के इस भाग के ऐतिहासिक महत्व को दर्शाते हुए स्वतंत्रता संग्राम में आहुति दी। उन्होंने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से 33 वर्ष पूर्व ही विद्रोह का बिगुल बजा दिया था। 24 जुलाई, 1824 को अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ते हुए अपने विश्वस्त साथी हिम्मत खाँ और बहादुर खाँ सहित 43 सैनिकों के साथ वे शहीद हो गए।

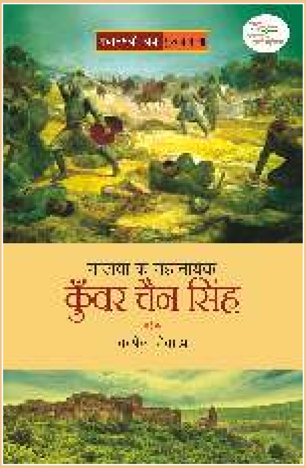

ISBN 978-93-5491-678-6

लेखक

कपिल मेवाड़ा

कपिल मेवाड़ा (10 जुलाई, 1993, चितोड़िया हेमा, सीहोर, मध्य प्रदेश) ने जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर से कृषि अभियांत्रिकी में बी.टेक. की डिग्री प्राप्त की है। वर्तमान में उत्तर प्रदेश सरकार के कृषि विभाग में सहायक भूमि संरक्षण निरीक्षक के पद पर कार्यरत हैं। उनकी दो पुस्तकें प्रकाशित हैं—कलियुग रामायण और ढाई आखर इश्क का।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में मणिपुर की भूमिका

ब्रिटिश सरकार ने 1857 तक संपूर्ण भारत में आधिपत्य स्थापित कर लिया था। साथ ही, पूर्वोत्तर भारत के राज्यों पर भी उनका प्रभुत्व हो गया। ऐसे में मणिपुर भी सन् 1891 में ब्रिटिश शासन के अधीन आ गया। यहाँ के जन समुदाय ने आजाद हिंद फौज के साथ मिलकर देश की आजादी के लिए संघर्ष किया। इस राज्य के वीर सेनानी थे—पाउना ब्रजबासी, रानी गाइदिन्ल्यू, वीर टिकेंद्रजीत सिंह। अंग्रेज-मणिपुर युद्ध (खोंगजोम युद्ध) काफी चर्चित रहा।

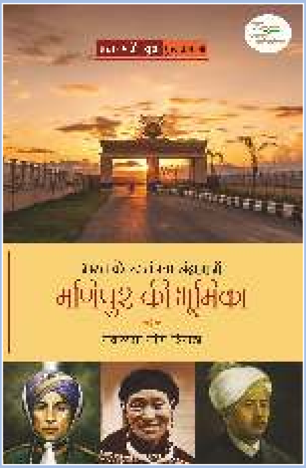

ISBN 978-93-5491-674-8

लेखक

मदालसा मणि त्रिपाठी

लखनऊ की मदालसा मणि त्रिपाठी (01 जुलाई, 1992) ने स्नातक कलकत्ता विश्वविद्यालय और स्नातकोत्तर प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय कलकत्ता से हिंदी विषय में किया है। साथ ही, एम.फिल. हिंदी विषय से किया है, जो पूर्वोत्तर के राज्य मणिपुर पर आधारित था, जिससे उनमें मणिपुर के प्रति जागरूकता बढ़ी। वर्तमान में वे प्रधान महालेखाकार के कार्यालय (लेखापरीक्षा द्वितीय), लखनऊ में कनिष्ठ अनुवादक के पद पर कार्यरत हैं और राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश से पी-एच.डी. भी कर रही हैं।

याद करूँ तो...
1942 : बलिया की क्रांति

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में तत्कालीन संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) ने अहम भूमिका निभाई। उत्तर प्रदेश के विभिन्न भागों में स्थानीय स्तर पर संग्राम का नेतृत्व किया गया। इसमें पूर्वी उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के योगदान को कमतर नहीं आँका जा सकता। बागी बलिया के सूरमाओं ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी महती भूमिका निभाई।

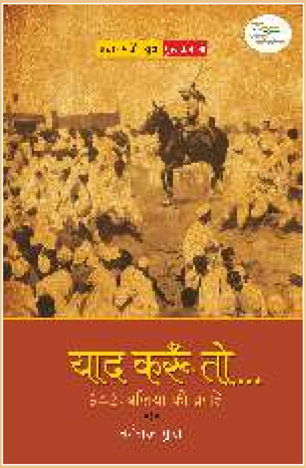

ISBN 978-93-5491-676-2

लेखक

धर्मराज गुप्ता

धर्मराज गुप्ता (02 जनवरी, 2001) बलिया, उत्तर प्रदेश के गाँव चोरकैंड के रहने वाले हैं। उन्होंने स्नातक करने के बाद बी.एड. किया है। हिंदी साहित्य एवं इतिहास के अध्ययन में उनकी विशेष रुचि है। वे समसामयिक घटनाओं पर लेख तथा सामाजिक जागरूकता के लिए कविताएँ लिखते हैं।

शहीदों की शान

मानगढ़ धाम

मानगढ़ राजस्थान और गुजरात की सीमा पर स्थित है, जो राजस्थान के बाँसवाड़ा जिले का एक पहाड़ी क्षेत्र है। मानगढ़ पहाड़ी पर अंग्रेजों ने 17 नवंबर, 1913 को लगभग 1,500 से अधिक भीलों को मौत के घाट उतार दिया था। ये आदिवासी नेता और समाज सुधारक गोविंद गुरु के समर्थक थे। गोविंद गुरु ने लोगों में स्वतंत्रता का भाव जगाया, अध्यात्म और ईश्वर-भक्ति के माध्यम से समाज सुधार के प्रयास किए। उन्होंने संप सभा की स्थापना की और 'भगत आंदोलन' की शुरुआत की।

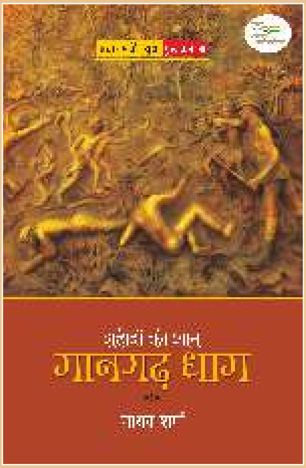

ISBN 978-93-5491-694-6

लेखक

माधव शर्मा

माधव शर्मा (30 दिसंबर, 1999) राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले के गाँव बसेरा में रहते हैं। उन्होंने स्नातक करने के बाद फार्मेसी में डिप्लोमा किया और फिलहाल वे बाँसवाड़ा में अपने व्यवसाय में संलग्न हैं। बचपन से उन्हें क्रांतिकारियों की जीवनियाँ पढ़ने का शौक है।

बिशनी देवी साह

गाथा एक वीरांगना की

सामाजिक कुरीतियों के बीच उत्तराखंड की बिशनी देवी आजादी के लिए लगातार संघर्षरत रहीं। गांधी जी के प्रभाव में आकर वे आंदोलनकारी बनीं और स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित विभिन्न सत्याग्रहों में भाग लिया। उन्हें 25 मई, 1930 को अल्मोड़ा नगर पालिका में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के आरोप में जेल भेजा गया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी वे सक्रिय रहीं।

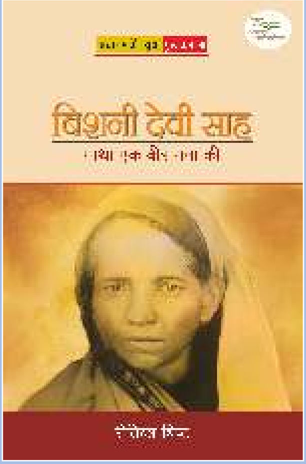

ISBN 978-93-5491-677-9

लेखक

रीतिका बिष्ट

रीतिका बिष्ट (02 जनवरी, 1998) हल्द्वानी, उत्तराखंड में रहती हैं। उन्होंने वर्ष 2022 में ही राजकीय मेडिकल कॉलेज, हल्द्वानी से एम.बी.बी.एस. किया है। उनकी कविताओं, कहानियों एवं सामाजिक घटनाओं के लेखन पर रुचि रही है। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अनेक बार उत्तराखंड का प्रतिनिधित्व किया है। वर्तमान में वे डॉ. सुशीला कुमारी अस्पताल में प्रशिक्षु चिकित्सक हैं।

देशानुरागी

बीबी कौर

बीबी कौर स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाने वाली गदर पार्टी की एकमात्र महिला क्रांतिकारी थीं। उन्होंने समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता और सती प्रथा जैसी कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्हें 'बीबी गुलाब कौर' के नाम से जाना गया। स्वतंत्रता संग्राम के शीर्ष नेताओं से संपर्क बढ़ाने और उनके संदेशों के आदान-प्रदान के लिए उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। वह कोटला नौध सिंह (होशियारपुर) गाँव में आखिरी साँस तक रहीं।

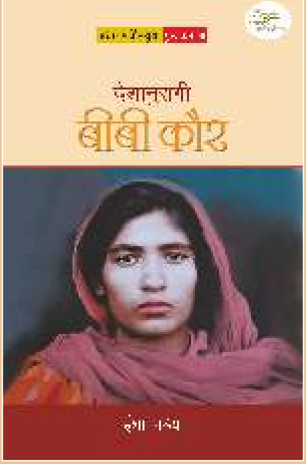

ISBN 978-93-5491-692-2

लेखक

ईशा पांडेय

ईशा पांडेय (13 अप्रैल, 2002) मोतिहारी, बिहार की रहने वाली हैं। उन्होंने मगध महिला कॉलेज (पटना विश्वविद्यालय) से अर्थशास्त्र में स्नातक किया है। उनकी नैसर्गिक लेखन में रुचि है। वे साहित्य लेखन सीखने-सिखाने वाली संस्थाओं से जुड़कर अपनी लेखनी को प्रखर बना रही हैं। वे कहानी, कविता, लघुकथा आदि के लेखन में संलग्न हैं।

सागर के सेनानी

भारतीय स्वतंत्रता इतिहास के परिप्रेक्ष्य में संग्राम सेनानियों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारतीय आर्थिक तंत्र को सबल और स्वदेशी बनाने में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। भारतीय समुद्र में यूरोपीय शक्तियों द्वारा अपना आधिपत्य जमाने का प्रयास किया गया। फलतः भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के कुछ वर्ष पहले ही स्टीम नेविगेशन प्रकल्प में अंग्रेज सरकार को भारतीय व्यापारियों द्वारा विरोध का सामना करना पड़ा। द्वारकानाथ ठाकुर, जमशेदजी टाटा, वी.ओ. चिदम्बरम पिल्लई, वालचंद हीराचंद जैसे पूँजीपतियों ने देशहित और सामुद्रिक व्यापार के क्षेत्र में अहम भूमिका निभाई।

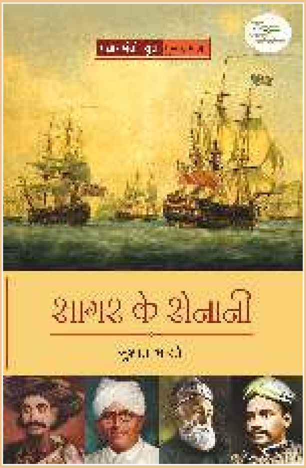

ISBN 978-93-5491-673-1

लेखक

सुशांत भारती

दिल्ली में जन्मे सुशांत भारती (13 जुलाई, 1993) संरक्षण स्थापति एवं युवा शोधकर्ता के रूप में कार्यरत हैं। उनकी स्नातक शिक्षा वास्तुकला में हुई है। मंदिर स्थापत्य, भारतीय मूर्तिशास्त्र एवं ब्रज की सांस्कृतिक धरोहरों में उनकी विशेष रुचि है। कविता लेखन, यात्रा करना एवं भारतीय प्राच्य ज्ञान से जुड़े ग्रंथों का पठन-पाठन उन्हें अत्यधिक प्रिय है। वे रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड, लंदन के फैलो भी हैं। वर्तमान में वे ब्रजस्थ मंदिर स्थापत्य के शोध एवं प्रलेखन कार्य में संलग्न हैं।

सोनाखान के सपूत

शहीद वीर नारायण सिंह

वीर नारायण सिंह छत्तीसगढ़ राज्य के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने सोनाखान गाँव (प्राचीन नाम सिंघगढ़) में अकाल से पीड़ित प्रजा के हित में ब्रिटिश शासन के अत्याचार, उत्पीड़न, शोषण के विरुद्ध तथा स्वराज के लिए संघर्ष किया। फलतः उन्हें 24 अक्तूबर, 1856 को संबलपुर से गिरफ्तार कर रायपुर जेल में बंद कर दिया। स्थानीय लोग उन्हें अपना नेता मानते हुए 1857 की क्रांति में शामिल हो गए। ब्रिटिश कंपनी के खिलाफ लोगों को भड़का कर विद्रोह कराने के आरोप में उन्हें फाँसी की सजा सुनाई गई।

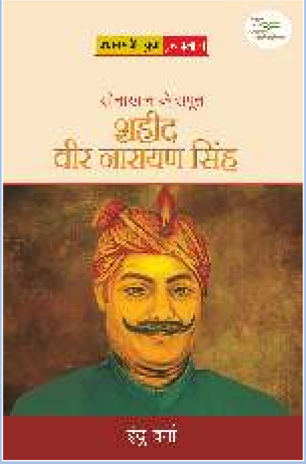

ISBN 978-93-5491-696-0

लेखक

इंदु वर्मा

इंदु वर्मा (12 दिसंबर, 1997) बालौदाबाजार, छत्तीसगढ़ की निवासी हैं। उनके पिता किसान हैं और माँ शिक्षिका हैं। उन्होंने इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में बी.ई. किया है। वर्तमान में वे गवर्नमेंट पॉलीटेक्निक कॉलेज, भाटापारा में अंशकालिक शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। उन्हें मातृभाषा में कविताएँ लिखना पसंद है।

ससन

आजादी के अज्ञात मतवाले मुंडा आदिवासियों की कहानी

राँची जिला (झारखंड) स्थित सोनाहातु ब्लॉक के चोकाहातु गाँव में मुंडाओं का 'ससन' करीब 14 एकड़ (22 बीघा 18 कट्ठा) में फैला है, जिसमें 8,000 स्मृति पत्थर हैं। मेगालिथ, मेनहिर, डोलमेन, स्टोन सर्कल आदि नामों से पुकारे जाने वाले ये पाषाण स्मारक या पत्थलगड़ी महापाषाण काल के सबसे रहस्यमय कला रूपों में से एक हैं। 1890 के दशक में अपनी जमीन की दावेदारी के लिए कई टन के पत्थरों अर्थात 'पत्थर गड़ी' (पुरखों की स्मृति में गाड़े गए पत्थर) को मुंडा आदिवासी मीलों पैदल चलकर कलकत्ता ले गए थे।

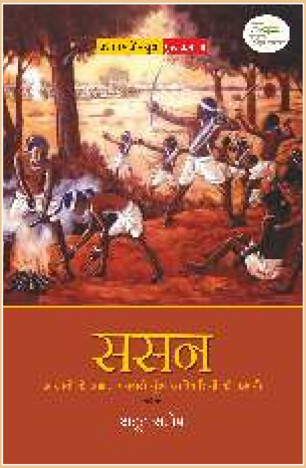

ISBN 978-93-5491-695-3

लेखक

अटूट संतोष

झारखंड निवासी अटूट संतोष (03 जुलाई, 2000) ने संत जेवियर कॉलेज से अंग्रेजी में ऑनर्स किया है। उन्हें कहानी-कविता पढ़ना-सुनना व लिखना पसंद है और चित्रकला में भी खास रुचि है। अब तक कुछ कविताएँ झारखंड सरकार के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की पत्रिका 'आदिवासी' में प्रकाशित हैं।

त्रिदेवी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं यथा–सरस्वती राजामणि, दुर्गा देवी वोहरा और कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इनमें से सरस्वती राजामणि और लक्ष्मी सहगल आजाद हिंद फौज में शामिल होकर सुभाष चंद्र बोस की सहयोगी बनीं। लक्ष्मी सहगल ने चिकित्सक, सांसद, समाजसेवी की भूमिका भी निभाई। वहीं दुर्गा देवी वोहरा ने पति भगवतीचरण वोहरा की शहादत के बाद भगत सिंह, राजगुरु और चंद्रशेखर आजाद के साथ मिलकर विभिन्न क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम दिया।

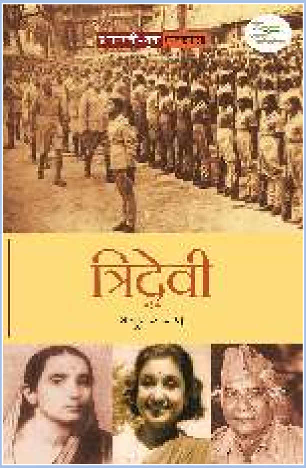

ISBN 978-93-5491-697-7

लेखक

अनूप कृष्वाण

अनूप कृष्वाण (09 मई, 2004) पौड़ी गढ़वाल के रहने वाले हैं। जवाहर नवोदय विद्यालय, देहरादून से 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उनका प्रवेश जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में हुआ, जहाँ से वे पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातक कर रहे हैं। बचपन से ही हिंदी में रचनात्मक लेखन करने में उनकी दिलचस्पी रही है, जिसके चलते उन्होंने जिला स्तर की अनेक प्रतियोगिताएँ भी जीती हैं।

गांधी-भगत के साथी
रामबिनोद सिंह

स्वतंत्रता आंदोलन में योगेंद्र शुक्ल के संग रामबिनोद सिंह ने बिहार में क्रांति की अगुवाई की और गांधी जी के मूल्यों से प्रेरणा ली। उन्होंने बिहार में खादी के प्रति जनजागरूकता पैदा करते हुए अलग-अलग स्थानों पर गांधी कुटीर की स्थापना की। अंग्रेज उनकी देशभक्ति से भयभीत हुए और अनेक बार जेल भी जाना पड़ा। उन्हें 'बिहार का जतिन बाघा' और 'खादी का प्रवर्तक' कहा जाता था।

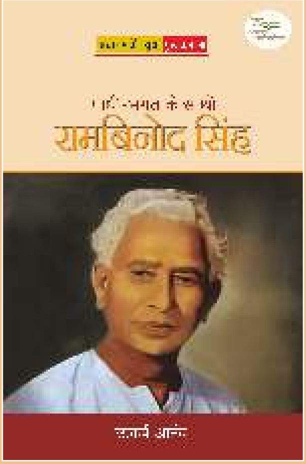

ISBN 978-93-5491-693-9

लेखक

उत्कर्ष आनंद

उत्कर्ष आनंद (23 जनवरी, 1997) बिहार के पटना जिले से संबंध रखते हैं। उन्होंने दूरदर्शन, बिग गंगा, न्यूज इंडिया आदि चैनलों पर राष्ट्रीय स्तर के कवि सम्मेलनों में अपनी प्रस्तुति दी है। कविता, व्यंग्य और गजल लेखन में उनकी विशेष रुचि है। हिंदी साहित्य में उत्कृष्ट सेवा के लिए उन्हें बिहार के उप मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। साथ ही उन्हें काव्य शिरोमणि और अटल सम्मान भी प्राप्त हैं। अकसर उनकी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। 'अदम्य, बिहार के युवा गजलकार' पुस्तक में भी उनकी रचनाएँ प्रकाशित की गई हैं।

प्रधानमंत्री युवा लेखक योजना 2.0

प्रधानमंत्री युवा लेखक योजना की अभूतपूर्व सफलता के बाद यह योजना नए रूप में पुनः शुरू की गई है। पहले संस्करण में आठवीं अनुसूची में वर्णित 22 भारतीय और अंग्रेजी भाषा में युवा और नवोदित लेखकों की बड़े पैमाने में भागीदारी को देखते हुए यह योजना लाई गई है। पीएम-युवा 2.0 का केंद्रीय विषय है–लोकतंत्र (संस्थाएँ, घटनाएँ, व्यक्तित्व व संवैधानिक मूल्य)। योजना के तहत माँगे गए पुस्तक प्रस्तावों की अंतिम तिथि 15 जनवरी, 2023 थी। पहले संस्करण की सफलता के बाद इस बार भी बड़ी संख्या में नवोदित लेखकों ने सहभागिता की है। युवा लेखकों की मेंटरशिप का यह प्रस्ताव प्रधानमंत्री के ग्लोबल सिटीजन के दृष्टिकोण के अनुरूप है, जिसे देश में पढ़ने, लिखने और पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए 30 वर्ष की आयु तक के युवा और नवोदित लेखकों को प्रशिक्षित करने के लिए शुरू करने की आवश्यकता है ताकि भारत और भारतीय लेखन विश्व स्तर पर प्रक्षिप्त हो सके। जबकि कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) मेंटरशिप के सुपरिभाषित चरणों के तहत योजना के चरण-वार निष्पादन को सुनिश्चित करेगा।

इस नए संस्करण में कुछ पात्रता शर्तें भी जोड़ी गई हैं, जैसे कि वे आवेदक जिन्होंने पीएम-युवा योजना 2021-22 के लिए अर्हता प्राप्त की थी (केवल अंतिम परिणाम), वे 'युवा 2.0 योजना 2022-23' के पात्र नहीं होंगे। प्रतियोगी की अधिकतम आयुसीमा दो अक्तूबर, 2022 तक 30 वर्ष या उससे कम होनी चाहिए। पीएम-युवा 2.0 योजना के प्रवेश की शैली केवल कथेतर होनी चाहिए। पुस्तक प्रस्ताव प्रस्तुत करने के बाद उसके शीर्षक में परिवर्तन की अनुमति नहीं है।

इसके अलावा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत स्थापित लेखकों के साथ चयनित उम्मीदवारों हेतु दो सप्ताह के लिए ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन करेगा। इस दौरान युवा लेखकों को न्यास के निपुण लेखकों और कथाकारों के पैनल से दो प्रख्यात लेखक/मेंटर द्वारा प्रशिक्षित किया जाएगा। चयनित लेखकों के नामों की घोषणा मई 2023 के अंतिम सप्ताह में प्रस्तावित है। चयनित लेखकों को छह माह तक शोध और लेखन के लिए प्रतिमाह 50,000 रुपये की दर से भुगतान किया जाएगा।

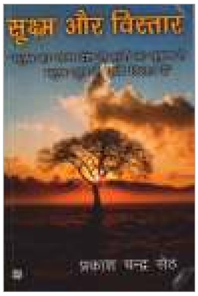

सूक्ष्म और विस्तार

प्रकाश चन्द्र सेठ

इस पुस्तक में विभिन्न शीर्षकों के माध्यम से महत्वपूर्ण संदेश दिए गए हैं। ये संदेश जीवन को अच्छी तरह से जीने की प्रेरणा देते हैं जो क्या करें और क्या न करें, आदि विषयों पर उचित सलाह देते हैं। कुल 17 शीर्षकों में आबद्ध ये कथन गागर में सागर भरने के तुल्य हैं। कुछ संदेश तो लघुकथा के रूप में भी हैं, जो कि रोचक व पठनीय हैं।

बुक्सक्लीनिक पब्लिशिंग, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

पृ. 122; रु. 180.00

ई-एकलव्य

प्रकाश देव

प्रस्तुत पुस्तक में ऑनलाइन शिक्षा से संबंधित शैक्षिक प्रौद्योगिकी की विभिन्न अवधारणाओं को अत्यंत सहज, सरल व रोचक रूप में प्रस्तुत किया गया है। कुल 14 अध्यायों में विद्यालयीन शिक्षा के लिए सार्थक ऑनलाइन शिक्षण अधिगम प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों का व्यापक समावेश शिक्षकों के लिए बहुपयोगी है।

आईसेक्ट पब्लिकेशन, भोपाल।

पृ. 262; रु. 320.00

यादों की रिमझिम बरसात

सुधा भार्गव

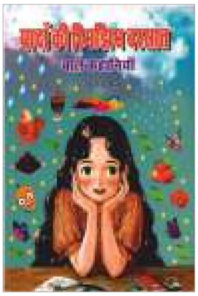

इस बाल कहानी संग्रह में कुल 20 कहानियाँ हैं। इन कहानियों में हास्य का पुट तो है ही, बच्चों के बचपन के दिनों की घटनाओं को बहुत ही रोचक ढंग से समाहित किया गया है। कुछ कहानियों के शीर्षक हैं, जैसे—'जादुई मुर्गी', 'तमाशा ही तमाशा', 'मेरी चोखी काकी', 'नटखटिया', 'चाहत का समुंदर' और 'मुटापे की जंग' आदि।

साहित्यागार, जयपुर।

पृ. 128; रु. 250.00

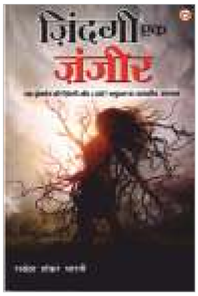

ज़िंदगी एक ज़ंजीर

राकेश शंकर भारती

यह उपन्यास किन्नर और ट्रांसजेंडर समुदाय को समर्पित है। यह चार भागों में विभक्त है। उपन्यास का प्रत्येक पात्र अपने आप में अनोखा है जो कि पाठक के मन में लंबे समय तक अपनी उपस्थिति बनाए रखते हैं। इसमें कहानी की शुरुआत हरियाणा की धरती से होती है, जहाँ बसंत के मौसम में कुदरत की खूबसूरती मन को लुभा रही होती है। लेखक ने कथानक में रोचक प्रसंगों का समावेश कर पाठक के मन को बोझिल नहीं होने दिया है।

डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली।

पृ. 222; रु. 250.00

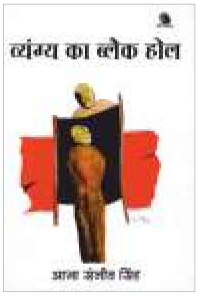

व्यंग्य का ब्लैक होल

आभा संजीव सिंह

इस पुस्तक में मन को गुदगुदाने वाले उत्कृष्ट व्यंग्य हैं। ये व्यंग्य न केवल मनोरंजक हैं, बल्कि संवेदनाओं से ओत-प्रोत करने वाले हैं। ज्यादातर व्यंग्यों के तो शीर्षकों में ही हास्य का पुट झलकता है, जैसे कि 'ताक-झाँक', 'पोशाक की पोशाखा', 'सहमति असहमत होने की', 'आहतोपदेश', 'दमदार दुम', 'गुरु कड़छी ते चेला चम्मच', 'लोकतंत्र में मतिदान' आदि।

रश्मि प्रकाशन, लखनऊ।

पृ. 82; रु. 175.00

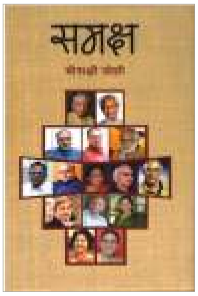

समक्ष

मीनाक्षी जोशी

यह पुस्तक तीन खंडों में विभक्त है। पहले खंड में संस्मरण हैं, जिसके अंतर्गत विदेश भ्रमण के अनुभव हैं। दूसरे खंड में डॉ. नामवर सिंह, रवींद्र कालिया, ममता कालिया, डॉ. दामोदर खड़से, मैत्रेयी पुष्पा, सूर्यकांत नागर, आदि से लिए गए साक्षात्कार हैं तथा तीसरा खंड समीक्षा पर आधारित है, जिसमें प्रमुख पुस्तकों की समीक्षा लेखिका द्वारा लिखी गई है।

विश्व हिंदी साहित्य परिषद, शालीमार बाग, दिल्ली।

पृ. 232; रु. 575.00

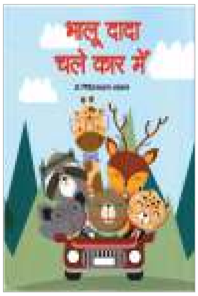

भालू दादा चले कार में

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल

प्रस्तुत पुस्तक में शिशु गीत हैं। इन गीतों की रचना करने के लिए रचनाकार ने शिशु मनोविज्ञान का गहराई से अध्ययन किया है, तभी ये उत्कृष्ट बन पड़े हैं। ये सभी गीत शिशुओं द्वारा पसंद किए जाने योग्य हैं। 'चाऊ-माऊ', 'बिल्लू दादा', 'चूहे राजा', 'बंदर मामा', 'शेरू दादा' आदि गीत इतनी सरल शैली में हैं कि शिशु बहुत ही आसानी से याद कर सकते हैं।

हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर।

पृ. 60; रु. 170.00

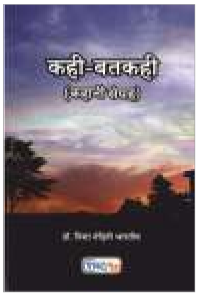

कही-बतकही

डॉ. निशा नंदिनी भारतीय

इस कहानी संग्रह की कहानियाँ यथार्थ के धरातल पर व्यतीत किए पलों की बहुत ही बेबाक टिप्पणी करती हैं। इसमें कुल 20 कहानियाँ हैं। प्रत्येक कहानी में जीवन के विविध रंगों को समेटने का प्रयास है तो अपने इर्द-गिर्द के हालातों का भी समावेश है। संग्रह की पहली कहानी 'पैगी की कर्मठता' में एक महिला के जीवन से प्रेरणा ली गई है।

शब्द ऑनलाइन प्रा.लि., दरियागंज, दिल्ली।

पृ. 104; रु. 184.00

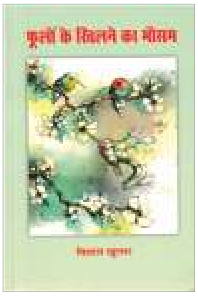

फूलों के खिलने का मौसम

विशाल खुल्लर

यह पुस्तक बेहतरीन गजलों का संग्रह है। संग्रह में गजलकार ने यह विशेष ध्यान रखा है कि शब्द हिंदी उच्चारण के अनुसार ही लिखे जाएँ। जहाँ कहीं उर्दू के शब्दों को देना जरूरी है वहाँ संदर्भ के तौर पर नीचे हिंदी अर्थ दिया गया है। इन गजलों में तुकांत शब्दों का संयोजन बहुत ही खूबसूरत है। गजलों में जहाँ संवेदना का भाव है वहीं जिंदगी में सुकून के पलों के लिए संदेश भी दिया है।

चेतना प्रकाशन, लुधियाना।

पृ. 64; रु. 150.00

देख इधर भी ज़रा ज़िन्दगी

डॉ. गोपाल राजगोपाल

इस गजल संग्रह में कुल 81 गजलें हैं। इन गजलों में प्यार-मोहब्बत से अलग जीवन के खट्टे-मीठे अनुभवों और सामाजिक सरोकारों को कलमबद्ध किया गया है। इनमें जहाँ शहर की चकाचौंध और अस्त-व्यस्त जीवन-शैली का जिक्र है, वहीं नौजवान पीढ़ी में बढ़ती तामसी प्रवृत्ति एवं आपराधिक घटनाओं की पीड़ा को भी संवेदना में डूब कर समाहित किया गया है।

इविन्सिपब पब्लिशिंग, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

पृ. 82; रु. 199.00

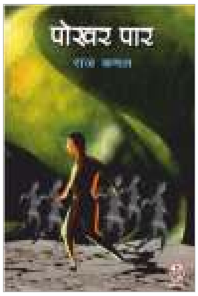

पोखर पार

राज कमल

इस पुस्तक में 31 आवृत्तियों के माध्यम से कथानक को विस्तारित किया गया है। वर्गवाद की समस्या को केंद्र में रखकर यह उपन्यास आगे बढ़ता है। ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित इस उपन्यास में लेखक ने वर्तमान समय की समस्याओं को बेबाक तौर पर समाहित किया है।

प्रलेक प्रकाशन प्रा.लि., विरार, मुंबई।

पृ. 234; रु. 350.00

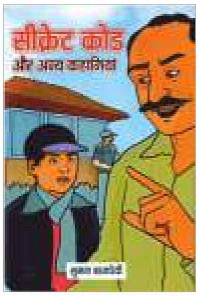

सीक्रेट कोड और अन्य कहानियाँ

सुमन बाजपेयी

इस बाल कहानी संग्रह में कुल 14 कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ बच्चों को जीवन में कुछ नया करने को तो प्रेरित करती ही हैं, सफलता प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयास करते रहने की सीख भी देती हैं। कहानियों के शीर्षक आकर्षक हैं। साथ ही भाषा को सरल रखा गया है। ज्यादातर कहानियों में कहानी के घटनाक्रम पर आधारित चित्र भी दिए गए हैं।

वैभव प्रकाशन, रायपुर, छत्तीसगढ़।

पृ. 104; रु. 100.00

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2023

स्वर्ण जयंती वर्ष पर केंद्रीय विषय 'आजादी का अमृत महोत्सव'

नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला' के 30वें संस्करण का सफलतापूर्वक समापन हो गया है। देश में पुस्तक संस्कृति के विकास और प्रोन्नयन के श्रेष्ठ उद्देश्य से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा आयोजित प्रगति मैदान में एशिया का सबसे बड़ा पुस्तक मेला पुस्तक प्रेमियों और प्रकाशकों से भरा हुआ था। यह ज्ञान और आशा से परिपूर्ण नजर आया। विदित हो कि वैश्विक महामारी 'कोरोना' के चलते वर्ष 2021 का 29वाँ 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला' वर्चुअल संपन्न हुआ था, जबकि वर्ष 2022 का मेला संपन्न नहीं हो सका था। यह पुस्तक मेला 25 फरवरी से 05 मार्च, 2023 तक आयोजित किया गया। इस विशाल पुस्तक मेला में लगभग 1500 स्टॉल स्थापित किए गए, जिसमें 650 भारतीय प्रकाशकों के साथ-साथ लगभग 40 विदेशी प्रकाशक अपनी नवीनतम पुस्तकों के साथ उपस्थित थे। इस संस्करण का अतिथि देश 'फ्रांस' था। ध्यातव्य है कि यह नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के आयोजन की शुरुआत का स्वर्ण जयंती वर्ष है।

उद्घाटन

'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2023' का उद्घाटन माननीय राज्य मंत्री, विदेश मंत्रालय एवं शिक्षा मंत्रालय श्री राजकुमार रंजन सिंह ने किया। मुख्य अतिथि की आसंदी से उन्होंने कहा, "आज सुबह प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने एक वेबीनार में बच्चों और किशोरों के लिए देश के सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में डिजिटल लाईब्रेरी स्थापित करने के लिए अलग से बजट जारी करने का सुझाव दिया है, जो प्रेरणास्प्रद है।" उन्होंने कहा कि विश्व पुस्तक मेला दो वर्ष बाद भौतिक रूप से आयोजित हो रहा है। यह दुनिया का सबसे बड़ा पुस्तक मेला है। यहाँ देश के कोने-कोने से लेखक, पाठक और विद्वान उपस्थित होते हैं। यह बड़ी संख्या में पाठक और लेखक को एक स्थान पर लाता है। यह हमारे लिए हर्ष का विषय है कि इस बार पुस्तक मेले का अतिथि देश 'फ्रांस' है। भारत ने 2018 से 2022 तक पेरिस पुस्तक मेले में सहभागिता की है। इस वर्ष हम आजादी के 75 वर्ष पूरे होने पर 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रहे हैं। मेले का केंद्रीय विषय भी 'आजादी का अमृत महोत्सव' है। राष्ट्र निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाते हुए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों पर पुस्तकें प्रकाशित कर रहा है। यह भी प्रशंसनीय है कि प्रधानमंत्री युवा लेखक योजना के अंतर्गत चयनित लेखकों के मार्गदर्शन में न्यास महती भूमिका निभा रहा है। ये लेखक भविष्य में अपने लेखन कौशल को और सँवारेंगे।

आयोजन के स्वागत भाषण में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के निदेशक श्री युवराज मलिक ने कहा कि एक पुस्तक आपका जीवन बदल सकती है। जिसके पास ज्ञान होगा, उसे मुक्ति मिलेगी और ज्ञान पुस्तकों से मिलता है। शब्द अक्षुण्ण रहते हैं। न्यास देश का नॉलेज पार्टनर है। 'शिक्षा नीति-2020' के बारे में उन्होंने कहा कि यह भारत का विजन डॉक्यूमेंट है जो भारत को बदल देगा। इसके अलावा 'नई शिक्षा नीति-2020' के लागू होने से छात्रों को न केवल क्षेत्रीय भाषा में अध्ययन करने में सुविधा होगी, बल्कि उनकी पठन आदतों में भी सुधार आएगा। इससे पठन संस्कृति का विस्तार होगा। यह भी सुखद है कि इस वर्ष 'जी20 शिखर सम्मेलन' नई दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है।

उन्होंने इस वर्ष दिल्ली में आयोजित होने वाले 'जी20 शिखर सम्मेलन' का भी स्वागत किया। आजादी के अमृत महोत्सव के संबंध में उन्होंने कहा कि यह हमें भारत को समझने का अवसर देता है। हम बुके के स्थान पर बुक देने की संस्कृति को अपनाएँ ताकि अधिक-से-अधिक पुस्तकें लोगों तक पहुँचें और वे उन्हें पढ़ें। ये हमारे समाज को बदलेंगी।

इस अवसर पर आईटीपीओ के अध्यक्ष श्री प्रदीप सिंह खरोला ने कहा कि मानव विकास बिना शिक्षा और बिना पुस्तक संभव नहीं है। छपी हुई पुस्तक के साथ-साथ ई-बुक भी बहुतायत में पाठक पढ़ रहे हैं, लेकिन ई-बुक के आने से छपी हुई पुस्तक की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। श्री खरोला ने कहा कि पुस्तकें ज्ञान तो देती ही हैं, इंसान को आंतरिक रूप से सशक्त और सकारात्मक सोच भी प्रदान करती हैं।

श्री वेनसौं मौताईन, अध्यक्ष सिंडीकेट नेशनल डे ल'एडिशन ने बताया कि किस तरह भारत के प्रधानमंत्री के साथ सन् 2018 में फ्रांस सरकार के साथ हुए समझौते के अनुसार पिछले साल अप्रैल में भारत 'पेरिस पुस्तक मेले' में विशेष अतिथि देश था और अब फ्रांस 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले' में अतिथि देश बना है। उन्होंने उम्मीद जताई कि दोनों देश अपनी नई-नई पुस्तकें एक-दूसरे के देशों में अधिक-से-अधिक संख्या में लेकर जाएँगे।

साहित्य के नोबेल सम्मान से अलंकृत सुश्री आनी ओरनौ ने अपनी पहली भारत यात्रा को अत्यधिक रोमांचक बताते हुए कहा कि उन्हें बदलते हुए भारत की झलक विभिन्न लेखनों के माध्यम से मिलती रही है। खासकर आजादी के बाद भारत में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं। उन्होंने 'जय हिंद' के उद्घोष से अपने भाषण को समाप्त किया।

इस अवसर पर भारत में फ्रांस के राजदूत श्री इमैनुएल लैना ने 'नमस्ते' से अपनी बात शुरू करते हुए पुस्तक मेले के आयोजन के 50 वर्ष पूरे होने पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि न्यास भाषाओं का कितना सम्मान करता है, इसका अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि यह 22 भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में पुस्तकें प्रकाशित कर नॉलेज पार्टनर के रूप में देश को शिक्षित कर रहा है।

इस अवसर पर पोस्ट मास्टर जनरल, दिल्ली सर्कल, श्री अशोक कुमार ने फ्रांसीसी प्रतिनिधिमंडल और न्यास-निदेशक की उपस्थिति में पुस्तक मेले के आयोजन की शुरुआत के 50 वर्ष पूरे होने पर डाक टिकट जारी किया। आयोजन का प्रमुख आकर्षण 22 भारतीय भाषाओं व अंग्रेजी में न्यास द्वारा 'प्रधानमंत्री युवा लेखक योजना' और 'भारत@75 पुस्तकमाला' के अंतर्गत प्रकाशित 100 पुस्तकों का लोकार्पण माननीय मंत्री श्री राजकुमार रंजन सिंह के करकमलों द्वारा किया जाना था। इस आयोजन में विशिष्ट अतिथि के रूप में शिक्षा मंत्रालय की संयुक्त सचिव सुश्री सौम्या गुप्ता भी शामिल थीं।

थीम

इस बार पुस्तक मेले का केंद्रीय विषय था—'आजादी का अमृत महोत्सव'। 'आजादी का अमृत महोत्सव' प्रगतिशील भारत की आजादी के 75 साल और संस्कृति एवं उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को मनाने के लिए भारत सरकार की एक पहल है। थीम-आधारित मंडप का निर्माण

हॉल संख्या 5 में किया गया था। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में हम आजादी के अपने ज्ञात-अज्ञात-अल्पज्ञात नायक और नायिकाओं का स्मरण करें, राष्ट्र के प्रति उनके अवदान को याद कर उन्हें श्रद्धा सुमन समर्पित करें, यह सहज स्वाभाविक है।

पुस्तक मेले की थीम 'आजादी का अमृत महोत्सव' रखा जाना बेहद प्रासंगिक और समयोचित ही है। न्यास ने अपनी गौरवशाली परंपरा के अनुकूल पुस्तक मेले में बेहद भव्य स्वरूप में थीम मंडप का निर्माण किया था, जिसे कोई भी आगंतुक देखकर सहज ही रोमांचित हो उठता था। थीम मंडप का डिजाइन समय के साथ ज्ञान के निरंतर प्रवाह के प्रदर्शन-स्वरूप था, यदि ऐसा कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। थीम मंडप के सबसे सामने के प्रदर्शनी पटल (डिस्प्ले पैनल) पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की तसवीर एवं उनके एक कथन के साथ 'आजादी का अमृत महोत्सव@75' शब्द को अंकित किया गया था। अपने कथन में प्रधानमंत्री श्री मोदी 'आजादी का अमृत महोत्सव' का अर्थ समझाते हुए कहते हैं कि इसका अर्थ स्वतंत्रता की ऊर्जा का अमृत, स्वतंत्रता संग्राम के योद्धाओं की प्रेरणा का अमृत, नए विचारों और प्रतिज्ञाओं का अमृत और आत्म निर्भरता

का अमृत है। एक भव्य डिस्प्ले पैनल पर बनारस के दिव्य घाट की पृष्ठभूमि में राष्ट्रगान 'जन गण मन' तथा राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' उनके रचयिताओं, क्रमशः रवींद्रनाथ टैगोर तथा बंकिमचंद्र चटर्जी के सुंदर रेखाचित्र के साथ अंकित थे तथा मध्य में आजादी के अर्ध 'चक्र' में बड़े ही कलात्मक ढंग से 75@आजादी का अमृत महोत्सव राष्ट्रीय ध्वज के साथ समायोजित करते हुए अंकित किया गया था। इस खंड में काँच के एक जार में जो एक खुली और हस्तलिखित डायरी प्रदर्शित की गई थी, दरअसल, वह क्रांतिकारी भगत सिंह की हस्तलिखित डायरी थी। इस पटल पर वीर सावरकर, महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस सहित कुल 12 राष्ट्रनेताओं एवं साहित्यकारों के प्रबोधक कथनों को उनकी अपनी-अपनी मूल भाषाओं में प्रदर्शित किया गया था। भगत सिंह की हथकड़ी बँधी मूर्ति किसी की भी आँखें नम कर रही थी।

थीम मंडप पर अलग-अलग अंतरालों पर छह पैनलों को इस तरह व्यवस्थित किया गया था कि ये मंडप की निर्माण-परिकल्पना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा प्रतीत हो रहे थे। इन पैनलों पर दोनों तरफ, रैक में, थीम आधारित विभिन्न भाषाओं में विभिन्न प्रकाशकों की शताधिक पुस्तकों को प्रदर्शित किया गया था, जिनमें राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की भारत

@75पुस्तकमाला की लगभग 75 पुस्तकें भी शामिल थीं। एक खंड भित्ति पर उन कुछ अग्रणी लेखकों/कवियों की भूमिका पर भी प्रकाश डाल रही थी, जो देश की आजादी के नायक भी थे। एक खंड भित्तिचित्रों के माध्यम से उन पुस्तकों को दर्शाने हेतु थी, जिन पर ब्रिटिश राज ने प्रतिबंध लगा दिया था। प्रतिबंधित दस्तावेजों का प्रतिनिधित्व करता यह खंड आज की नई युवा पीढ़ी के लिए बेहद जानकारीपरक था। इस खंड का शीर्षक था—आजादी के स्वर। मंडप के लगभग मध्य में काँच के एक जार में बड़ी ही प्रमुखता से 'भारत का संविधान' ग्रंथ को प्रदर्शित किया गया था। भारत का संविधान, भारत का गौरव ग्रंथ भी है। अंत में, थीम मंडप के मुख्य अग्र भाग के पृष्ठ भाग की दीवार पर फिल्म का पर्दा निर्मित किया गया था, जिस पर आजादी के अनेक प्रसंगों के वीडियो निरंतर चल रहे थे। जिज्ञासु और उत्सुक दर्शक-पाठक-आगंतुक पर्दे के सामने बैठकर अपनी थकावट भी दूर करते नजर आए। थीम मंडप पर एक मंच भी निर्मित किया गया था, जिस पर दिनभर थीम आधारित विषयों पर चर्चा, विमर्श, संवाद, परिसंवाद आदि आयोजित होते रहे। स्वतंत्रता संग्राम के आदिवासी महानायकों को भी यहाँ याद किया गया तथा भारत में नालंदा, तक्षशिला, सदृश प्रतिनिधिक शिक्षण स्थलों का स्मरण भी यहाँ परिलक्षित हो रहा था। कुल मिलाकर, थीम मंडप आजादी के अमृत महोत्सव को विभिन्न आयामों के माध्यम से देखने-जानने-समझने तथा 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' को प्रदर्शित करने का एक उम्दा उपक्रम के समान था। इसके अलावा प्राइम टाइम चर्चा, पुस्तक विमोचन और नाटक मंचन भी आयोजित हुए।

बाल मंडप

हॉल सं. 3 में बनाए गए बाल मंडप में पूरे दिन बालोपयोगी गतिविधियाँ संपन्न हुईं। बाल साहित्य के विकास एवं प्रोन्नयन को समर्पित, राष्ट्रीय

पुस्तक न्यास, भारत के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र ने इस अवसर पर बड़े पैमाने पर बाल-आधारित अनेकानेक कार्यक्रमों का समन्वय-आयोजन किया। इसके अंतर्गत बाल पुस्तकों की प्रदर्शनी, कथावाचन, संगोष्ठी, कार्यशाला, पेंटिंग प्रतियोगिता, खुद करके देखो आदि आयोजन किए गए। यहाँ बाल साहित्य जगत के मूर्धन्य लेखक बाल पाठकों से रू-ब-रू हुए और किस्सागोई से बालमन को आकर्षित किया और उनसे सवाल-जवाब भी किया।

बालमंडप के आयोजित कार्यक्रम इस प्रकार हैं—**फ्रांसीसी प्रतिनिधिमंडल** द्वारा खारतिका नायर द्वारा रचित 'ए नेस्टफुल ऑफ लाइट' कहानी पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया, जिसमें जोएले जोल्लिवे ने कहानी के अनुसार चित्रांकन किया। इस आयोजन में केंद्रीय विद्यालय पीतमपुरा एवं जेएलटी सरस्वती बाल मंदिर के बच्चे उपस्थित थे। **रूसी प्रतिनिधिमंडल** की ओर से रूस की लेखिका एनेस्टेसिया ओरलोवा ने छोटे बच्चों को पढ़ाने के लिए अपने विचार प्रकट करते हुए बताया कि अच्छा लिखने के लिए अच्छा और देर तक पढ़ना आवश्यक है। अन्यथा किसी भी प्रकार शिक्षा को ग्रहण नहीं किया जा सकता है। **'द चिल्ड्रेन पवेलियन'** द्वारा आयोजित कार्यक्रम में

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित ओडिसी नृत्यांगना, जया मेहता ने अपनी पुस्तक 'नृत्य कथा-इंडियन डांस स्टोरीज फॉर चिल्ड्रन' से छोटे बच्चों के लिए एक पुस्तक वाचन कार्यक्रम आयोजित किया। एक कार्यक्रम में **वेक्सिसोलॉजिस्ट मोहित गुप्ता** बच्चों से रू-ब-रू हुए, उन्होंने झंडों के इतिहास से बच्चों का परिचय कराया। कहानी वाचक **जयश्री सेठी** ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए तीन कहानियों को आवाजों की कला के साथ सुनाया। **डॉ. अनीता भटनागर जैन** ने बच्चों को कहानियाँ सुनाईं। इस कार्यक्रम में शरीफन एजुकेशनल एंड वेलफेयर सोसाइटी (एनजीओ) और न्यू आइडियल पब्लिक स्कूल, जसोला के बच्चे शामिल हुए। **फ्रांसीसी प्रतिनिधिमंडल** की लौरा साफू ने कार्यशाला में अपनी कहानी के माध्यम से बच्चों को अफ्रीकी जनजातीय समाज की बच्ची की कहानी सुनाई और चित्रांकन भी किया। **राजीव गांधी फाउंडेशन** और **वंडर रूम चिल्ड्रन** द्वारा आयोजित कहानी वाचन सत्र में नन्हे-मुन्ने बच्चों ने तुतलाती जुबान में कहानी वाचन किया। **कार्टून-केरिकेचर कार्यशाला** में कार्टूनिस्ट जिग्नेश चावड़ा ने बच्चों को अंडे के द्वारा कई तसवीरें बनाकर दिखाईं। जिग्नेश ने बच्चों के साथ-साथ उनके अध्यापकों और माता-पिता को भी चित्र बनाना सिखाया। **हेल्प फाउंडेशन** (बहराइच) और **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास** के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित **'भारत के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी'** विषय पर कथा वाचन में डॉ. वेद मित्र शुक्ल और डॉ. विकास कुमार सिंह ने जनजातीय क्रांतिकारियों पर अपनी रोचक कहानियाँ सुनाईं। बच्चों की पुस्तकों के प्रख्यात **चित्रकारों से विमर्श के सत्र** में सुश्री विकी आर्य का कहना था कि बगैर रंग के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। श्री सुबीर राय, शुद्धसत्व बसु, सुबीर डे आदि ने बच्चों की पुस्तकों के लिए चित्र बनाते समय बरती जाने वाली सावधानी और संवेदना पर प्रकाश डाला। प्रख्यात बाल साहित्यकार और 'नंदन' पत्रिका की पूर्व संपादक डॉ. क्षमा शर्मा ने अपने कथा वाचन सत्र में 'बस्ते' कहानी का वाचन हिमालय पब्लिक स्कूल,

रोहिणी, दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल, नोएडा एवं आदर्श शिक्षा निकेतन, मयूर विहार के बच्चों के सामने किया। एक कार्यशाला में चित्रकार कांतो जिमो ने बच्चों को चित्र दिखाकर उनसे उसका मतलब पूछा जिससे कहानी स्वयं ही धारा में चलने लगी और वहाँ पर मौजूद बच्चों को भी समझ में आई। अंग्रेजी शब्दों की सही स्पेलिंग अर्थात वर्तनी की अंतर्विद्यालयी प्रतियोगिता में बच्चों ने भागीदारी की।

'**प्रथम बुक्स**' द्वारा आयोजित एक सत्र में सुश्री ऊषा छाबड़ा ने प्रथम बुक्स द्वारा प्रकाशित पुस्तकों से दो कहानियों, 'कौए के रिश्तेदार', और 'लाडले का ढोल' को सुनाया। कार्यक्रम में 'मानवस्थली, राजेंद्र नगर', 'एयरफोर्स विद्यालय, सुब्रोतो पार्क', और लवली पब्लिक स्कूल, ईस्ट दिल्ली के बच्चे सहभागी रहे। **चित्रकला कार्यशाला** बच्चों ने प्रतिभा दिखाते हुए पुस्तक मेला, प्रकृति की खूबसूरती, पुस्तक पढ़ते हुए, त्यौहार आदि पर चित्र बनाए। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत** द्वारा बच्चों के लिए कहानी कला कार्यशाला आयोजित की गई। सुश्री अम्बालिका भट्ट ने कहा कि "लोक कथाएँ हमारे जीवन का महत्वपूर्ण भाग हैं और इनकी खासियत यह है कि इनमें पेड़-पौधे भी बोल सकते हैं, मछलियाँ उड़ सकती हैं, मगरमच्छ नाच सकते हैं। यहाँ सब-कुछ हो सकता है, पर अब हमारी लोक कथाएँ विलुप्त होती जा रही हैं। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास** द्वारा कहानीकार डॉ. शिवानी कनोडिया के '**कहानी सुनाओ सत्र**' का आयोजन में एयर फोर्स, दिल्ली वर्ल्ड, विद्या जैन पब्लिक विद्यालय, गुरु हरिकृष्ण पब्लिक विद्यालय के बच्चों ने डॉ. शिवानी की 'काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान' पर आधारित कहानी 'बनबन गैंडे की कहानी' का खूब आनंद लिया। **राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास** द्वारा आयोजित '**कहानी वाचन सत्र**' में 'राजकुमारी मुस्कान की जलेबी मुस्कान' कहानी का वाचन 'सुश्री सुमन वाजपेई' ने किया। सत्र में 'दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल' के बच्चे उपस्थित थे। साथ ही छात्रों के लिए 'सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी' और 'स्पैल-बी' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। **रास्ता एनजीओ** द्वारा ओरिगैमी सत्र का आयोजन किया गया। **रूसी प्रतिनिधिमंडल** द्वारा 'अप्रत्याशित यात्रा : पुस्तकों के वे पात्र जो जीवन को बदलकर दुनिया के समान बनते हैं' विषय पर 'कहानी वाचन सत्र' आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सुश्री अनसतासिया कनोडिया ने अपनी पुस्तक 'द नाइंथ लाइफ ऑफ कैट नेल्सन' का वाचन किया, जिसका अनुवाद डॉ. सोनू सैनी ने किया।

'**पराग इनिशिएटिव टाटा ट्रस्ट्स**' की कवयित्री सौम्या ने नन्हे-मुन्ने स्कूली बच्चों को 'चीटी चढ़ी पहाड़ पर' कविता के माध्यम से सिखाने का प्रयत्न किया। **इनलाइटेंट कुमुद ट्रस्ट** द्वारा आयोजित योग कार्यक्रम में बच्चों ने योग से संबंधित अनेक आकृतियाँ बनाकर दिखाईं जिसमें पेड़, एल अक्षर, त्रिकोण, ऊँट और रथ बनाकर दिखाया। '**अपना कोना क्रिएटिव फाउंडेशन**' ने बच्चों के लिए मधुबनी शैली में संस्कृति और कला की कार्यशाला का आयोजन किया। **राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र** द्वारा 'लेखक-चित्रकार से मिलिए कार्यक्रम' में दिल्ली की दो लेखिकाएँ, क्रमशः जया मेहता तथा स्वाति चट्टोपाध्याय तथा चित्रकार सुरुबा नतालिया ने स्कूली बच्चों के साथ संवाद किए। जयपुर के '**द पैलेस स्कूल**' द्वारा सृजनात्मक लेखन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मार्गदर्शक थीं, 'द पैलेस स्कूल' की प्राचार्या सुश्री उर्वशी वर्मन तथा मानसिंह संग्रहालय ट्रस्ट के शिक्षा निदेशक श्री संदीप सेठी। **राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र** ने 'कैसे सोचे-समझें और कार्य करें' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम की वक्ता 'नंदिनी नायर' थीं। कार्यक्रम में 'एमिटी इंटरनेशनल स्कूल' के बच्चे शामिल थे। **पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार** द्वारा योग कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 'सी.एस.के.एम. पब्लिक स्कूल' के बच्चों ने सक्रिय सहभागिता की। **राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र** द्वारा 'कहानी वाचन' सत्र का आयोजन किया गया। सत्र की वक्ता, कहानीकार 'सुश्री श्रद्धा पांडे' थीं। कार्यक्रम में 'अंकुर संस्था' के बच्चे आए थे। **पराग इनिशिएटिव ऑफ टाटा ट्रस्ट्स** की ओर से कमीशीबाई कथा, जापानी कला शैली में 'पपेट मेकिंग और कहानी वाचन' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 'बाल भारती पब्लिक स्कूल' के बच्चे उपस्थित रहे।

साहित्यिक गतिविधियाँ

गत वर्षों की भाँति 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला-2023' का यह संस्करण भी साहित्यिक गतिविधियों से सराबोर रहा। यहाँ बड़े पैमाने पर साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में विचार-गोष्ठी, विमर्श, पुस्तक लोकार्पण, परिचर्चा आदि सम्मिलित थे। यहाँ लेखक अश्विन सांघी, भगत सिंह के पौत्र यादवेंद्र संधू, 'बाहुबली' उपन्यास के लेखक आनंद नीलकंठन, विश्वास पाटिल जैसे लेखकों के संवाद और युवा सत्र कार्यक्रम आयोजित किए गए। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत** द्वारा प्रकाशित और पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' द्वारा लिखित पुस्तक '**पेशावर के महानायक : वीर चंद्र सिंह गढ़वाली**' और '**हिमनद : मानव जीवन का आधार**' पुस्तक का विमोचन किया गया। साथ ही, 'हरियाणा-भाषा साहित्य

एवं संस्कृति' (लेखक—पूर्णचंद शर्मा) पुस्तक का विमोचन डॉ. लाल चंद गुप्त, डॉ. चंद्र त्रिखा, डॉ. वीरेंद्र चौहान तथा न्यास के निदेशक श्री युवराज मलिक द्वारा किया गया। **पेनडाउन प्रेस** द्वारा आयोजित संगोष्ठी में '**पैसिव वेल्थ क्रियेशन**' विषय पर चर्चा हुई, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पतंजलि योगपीठ के योगाचार्य रवि झा शामिल हुए। **पीतांबर पब्लिकेशन** द्वारा नूपुर अग्रवाल की पुस्तक '**स्टोरी टेलिंग मेड इजी**' का लोकार्पण किया गया। **साहित्य अकादेमी** द्वारा आयोजित '**जनजातीय लेखक सम्मेलन**' में

कुड़ुख भाषा के आदिवासी रचनाकार महादेव टोप्पो, खड़िया भाषा की श्रीमती वंदना टेटे, संताली भाषा की श्रीमती सरोजिनी बेसरा ने अपनी भाषा के बारे में जानकारी दी। 'हंस' पत्रिका में छपे कई प्रसिद्ध समकालीन हिंदी साहित्यकारों के साक्षात्कारों के संकलन की पुस्तक **'सफीरों के नाम'** का विमोचन **अक्षर प्रकाशन** द्वारा किया गया। **पोलिश इंस्टीट्यूट** की तातियारा के साथ उदय कुमार शंकर ने **'हिंदी में पोलिश साहित्य'** विषय पर चर्चा की। मैरियन एर्डो के संचालन में जुदित बर्ग, पीटर जूस और डेनियल लेवेंते पाल के बीच **हंगेरियन समसामयिक साहित्य-कैलिडोस्कोप** पर चर्चा हुई। कार्यक्रम में भारतीय-हंगेरियन चित्रकार अमृता शेरगिल ने भाग लिया। सूसी मार्गेस्टन, बेंजामिन चॉड और लौरा साफू ने फ्रांसीसी बाल उपन्यास पर चर्चा की। **ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस** का आयोजन संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष आनंद छल्लानी के सान्निध्य में किया गया जिसमें 'तीर्थंकर महावीर' पुस्तक का विमोचन किया गया। **रेनोवा इंटरनेशनल पब्लिकेशंस** द्वारा दिव्यांग बच्चों के लिए प्रकाशित की गई पुस्तकों का

लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें ओम साईं स्पेशल स्कूल, साहिबाबाद के बच्चों ने प्रस्तुति दी। **अद्विक पब्लिकेशन** द्वारा सिने जगत से जुड़ी दो पुस्तकों—राकेश आनंद बख्शी की 'नग्मे किस्से बातें यादें' और गीतकार देवमणि पांडेय की 'सिने गीतकार' का लोकार्पण आबिद सुरती और डॉ. आरती स्मित की उपस्थित में किया गया। **प्रभात प्रकाशन** द्वारा प्रकाशित अम्बरीन जैदी की पुस्तक 'वीर नारियाँ' का विमोचन किया गया। **उड़िया मीडिया प्रा.लि. भुवनेश्वर** की ओर से आयोजित संगोष्ठी में उड़िया भाषा के कवि एवं लेखकों—डॉ. तपन कुमारपंडा, निधीश त्यागी, यशोधरा मिश्रा, डॉ. गौरहरीदास, वरुण गोयनका, आनंदिता मल्होत्रा और सत्यानंद मिश्र ने इस भाषा के साहित्य को बचाने तथा इसके प्रचार-प्रसार पर अपने विचार व्यक्त किए। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत** द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'भारत@75' शृंखला के अंतर्गत प्रकाशित कन्नड़ पुस्तक **'अग्नाटा सांटा हार्डेकर मंजप्पा'** का विमोचन किया गया। प्राइम टाइम चर्चा में 'पानीपत' उपन्यास के लेखक विश्वास पाटिल श्रोताओं से रू-ब-रू हुए। **साहित्य अकादेमी** द्वारा **'साहित्य में चेतना'** विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें प्रो. कन्हैया त्रिपाठी, प्रो. चंदन कुमार चौबे, डॉ. राहुल और अनुपम तिवारी ने अपने विचार रखे। एक सत्र में प्रख्यात लेखक व इतिहासकार डॉ. विक्रम संपत ने इतिहास पर प्रकाश डाला। **राजपाल एंड संस** द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'स्वयं प्रकाश स्मृति सम्मान' 'एक देश बारह दुनिया' के रिपोर्ताज लेखक शिरीष खरे एवं 'बदलता हुआ देश' के कहानीकार मनोज कुमार पांडेय को दिया गया। **प्यार केरकेट्टा फाउंडेशन** द्वारा आदिवासी पुस्तक लोकार्पण एवं चर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें यशोदा मुर्मू (संताली), जान मोहम्मद हकीम (गोजरी), डॉ. स्नेहलता नेगी (खस), डॉ. सरदार सिंह मीणा (ढूंढाणा), वांगतुग लोवांग (नोक्त) ने लेखन की विकास यात्रा पर विचार रखे। **वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग** द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं में बढ़ती तकनीकी शब्दावली पर चर्चा हुई। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत** और **राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान** द्वारा बधिर और कम श्रवण क्षमता रखने वाले विद्यार्थियों के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा में निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। युवा लेखक **बुधिदिप्ता ढिंगिया** ने 'गमाधार' (स्वाधीनता अनोदोलानार बात कोट्टिया गोमधार कोन्वरार आत्मोकथा) पर बात की।

भारत और अरब के प्रकाशकों के बीच आपसी सहयोग और विपणन की संभावनाओं को लेकर आयोजित विमर्श में सऊदी अरब के एच.ई. श्री सलेह बिन ईद अल-हुसैनी (भारत में सऊदी अरब के राजदूत), डॉ. खालिद यूसुफ बारगावी, मो. अलमल और श्री रमेश के. मित्तल (एफआईपी अध्यक्ष) के बीच विमर्श हुआ। सेवानिवृत्त ग्रुप कमांडर आर.डी. मोहन की पुस्तक **'द स्टोरी ऑफ ए लिटिल बॉय'** का विमोचन एयर मार्शल ए.एस. भोंसले, विंग कमांडर श्री कक्कड़, एयर कमांडर श्री मित्तल, डॉ. शिल्पा शर्मा, ब्रिगेडियर श्री सूद, कर्नल विनोद, डॉ. दिवाकर और श्री लक्ष्मण की उपस्थिति में किया गया। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास** द्वारा युवा स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान सरकार की ओर से चलाई गई योजना 'आईस्टार्ट' पर सत्र का आयोजन किया गया। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास** द्वारा स्पेन के ऑस्कर पुजोल एवं न्यास के अंग्रेजी भाषा के संपादक श्री कुमार विक्रम के मध्य एक वार्ता का आयोजन किया गया। **उद्‌भव सामाजिक एवं शैक्षिक संस्था** द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'प्रतिष्ठित साहित्यकारों द्वारा रचना पाठ' में कई दिग्गज कवियों और रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ सुनाईं। **नागरी लिपि परिषद** द्वारा आयोजित विशेष आयोजन में कई पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। **साहित्य अकादेमी** द्वारा आयोजित बहुभाषीय लेखक सम्मेलन में देश के अनेक भाषाओं के कवि और कहानीकारों ने शिरकत की। **अश्रोत्पोरव** द्वारा आयोजित 'नारी की यात्रा वैदिक से आधुनिक युग तक' कार्यक्रम में डॉ. इला घोष, अनीता पांडे, डॉ. रमा, ज्योति शर्मा, सुश्री मीना प्रजापति, सांत्वना श्रीकांत जैसी चर्चित लेखिकाओं ने भाग लिया। **तुर्की गणराज्य, संस्कृति और पर्यटन मंत्रालय** द्वारा आयोजित 'भारत में तुर्की साहित्य' विमर्श में फिरत सुनैल, भारत में तुर्की के राजदूत और लेखक नर्मिन मोलाग्ल और इस्तांबुल स्थित कलेम लिटरेचर एजेंसी के संस्थापक और प्रमुख शामिल हुए। **ऑस्ट्रिया** के लेखक पीटर रोजी के उपन्यास के हिंदी अनुवाद 'महानगर वियना' पर विमर्श में सुश्री रमा पांडे, सच्चिदानंद जोशी, विकास झा, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी और अनुज कुमार शामिल हुए। **फ़ारसी साहित्य** पर आयोजित एक पैनल चर्चा में डॉ. सैयद मेहदी तबताबाई, डॉ. अली रमज़ानी, डॉ. मोहम्मद हुसैन ज़रीफ़ियान और हामिद हेसाम शामिल थे। **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू)** द्वारा 'नई शिक्षा नीति : 21वीं सदी में भारत की

सफलता का मार्ग' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में प्रो. प्रमोद मेहरा और प्रो. राजेश मेहता वक्ता थे। **इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन (मास्को)** द्वारा आयोजित तथा अनुवादक सोनू सैनी द्वारा संचालित विमर्श में एवगेनी रेज्निचेंको, रंजना सक्सेना और अरुणिम बंद्योपाध्याय शामिल हुए। केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र द्वारा भारतीय भाषाओं में संवाद और समन्वय विषय पर चर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अनिल शर्मा ने की। **नेहा प्रकाशन** द्वारा व्यंग्यकार मनीष शुक्ल के प्रथम कविता संग्रह 'निलंबित मौन के स्वर' के साथ डॉ. रश्मि कौशल रचित 'मैं प्रेम हूँ', डॉ. संगीता की पुस्तक 'भारतीय अध्यात्म एवं ध्यान वर्तमान संदर्भ में' का विमोचन किया गया। **प्रकाशन विभाग** द्वारा आयोजित 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत लगभग बीस पुस्तकों का विमोचन किया गया। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास** के सहयोग से **श्री अरबिंदो आश्रम (दिल्ली शाखा)** द्वारा 'बच्चे के सर्वांगीण विकास में चिंतन की भूमिका' पर एक सत्र आयोजित किया गया। प्राइम टाइम चर्चा में सूचना आयुक्त, भारत सरकार श्री उदय माहुरकर ने अपने जीवन के जटिल संघर्ष की जानकारी दी। **ऑस्ट्रियन कल्चरल फोरम, नई दिल्ली** ने फ्रांज काफ्का की चर्चित कृति 'द ट्रायल' के रमा पांडे द्वारा किए गए रूपांतरण पर आयोजित विमर्श में श्रेष्ठ साहित्यकार शामिल हुए। **डेटा एंड द पब्लिशिंग इंडस्ट्री** विषय पर संपन्न विमर्श में 'विश्व बौद्धिक संपदा संगठन' के निदेशक श्री केवित फिट्जगेराल्ड, लीसन बुक डेटा के कार्यकारी निदेशक श्री विक्रांत माथुर शामिल हुए। **लोटस बुकशॉप, नेपाल** द्वारा 'प्रतीक' पत्रिका के 'दक्षिण एशिया विशेषांक' और अन्य पुस्तकों का लोकर्पण किया गया। **इंस्टीट्यूटो सेरेवेंतेसे, नई दिल्ली** द्वारा आयोजित कार्यशाला में इंस्ट्रक्टर लुइस मार्तुल बेल्ट्रान ने स्पेनिश भाषा सीखने के गुर सिखाए गए। **हिंदी युग्म** द्वारा आयोजित 'अक्षर से आवाज तक' कार्यक्रम 'पॉडकास्ट' पर केंद्रित रहा। **ब्लूवन इंक** द्वारा धवल पटेल की पुस्तक 'भारत के जनजातीय क्रांतिवीर' के विमोचन एवं चर्चा पर कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें विशिष्ट अतिथि केंद्रीय मंत्री, संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी के साथ श्री उदय माहुरकर उपस्थित रहे। **मार्गिका इनफॉर्मेशन हाईवेज इन मेंटल हेल्थ केयर (एनजीओ)** द्वारा 'माइंडस्कैप : अ कैनवस ऑफ इमोशंस इन अ स्पेशल वर्ल्ड' पुस्तक का लोकार्पण किया गया।

किताबघर प्रकाशन द्वारा दीर्घ नारायण यादव के प्रथम उपन्यास 'रामघाट में कोरोना' का लोकार्पण हुआ। **इंद्रप्रस्थ साहित्य भारती** द्वारा 'नए भारत का साहित्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। **यश पब्लिकेशन** द्वारा अभिषेक उपाध्याय की पुस्तक 'यूपी टू यूक्रेन' का विमोचन और चर्चा कार्यक्रम आयोजित किया गया। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास** द्वारा आयोजित 'मराठी पुस्तक सेमिनार' में महाराष्ट्र की तीन लेखिकाओं ने वासुदेव बलवंत फड़के, अनंत लक्ष्मण कन्हेरे, गणेश शंकर मावलंकर आदि क्रांतिकारियों को याद किया। **प्रखर गूँज पब्लिकेशन** द्वारा धर्मपाल भारद्वाज, मुख्य अग्निशमन अधिकारी की 'सुभाष चंद्र...अदम्य साहस के प्रतीक' के साथ अन्य 11 पुस्तकों का विमोचन किया गया। **राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद** द्वारा 'सिंधी भाषा साहित्य शिक्षा विमर्श' पर आयोजित चर्चा के सत्र की अध्यक्षता और संचालन डॉ. रवि प्रकाश टेकचंदानी ने की। **साहित्य अकादेमी** द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'भारतीय स्वतंत्रता में लेखकों का योगदान' कार्यक्रम में डॉ. पद्मावती और प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय ने अपने विचार रखे। **ऑस्ट्रियन कल्चरल फोरम, नई दिल्ली** द्वारा लिंडा क्रेस के साथ उनकी पुस्तक 'अल्टो सल्टो : ट्रैवेलॉग फ्रॉम नेपाल एंड इंडिया एंड द आर्ट ऑफ रंगोली' पर एक वार्ता का आयोजन किया गया। **अस्मिता** के संबंध में हिंदी, पंजाबी और मैथिली के साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं को प्रस्तुत किया और स्त्री अस्मिता के प्रश्नों पर अपनी राय रखी। **दामोदर घाटी निगम** द्वारा शिक्षा सीएसआर पहल सत्र में सौमिक रॉय और शमीम अहमद द्वारा दामोदर घाटी निगम की उपलब्धियों और कार्यों पर प्रकाश डाला गया। **आगम अहिंसा समता एवं प्राकृतिक संस्थान** द्वारा 'एक्योनॉमिटी, फिलॉसफी एंड प्रैक्टिस' पुस्तक का विमोचन किया गया। सीयूईटी (यूजी) 2023 पर **समर्थ** द्वारा आयोजित अनिल सिंह बाफिला और दिव्या करवाल के साथ विमर्श में विश्वविद्यालयों-कॉलेजों में दाखिले की प्रक्रिया को फिजिकल से डिजिटल में बदलने पर चर्चा हुई। **एनआईटी पुदुचेरी** द्वारा आयोजित पैनल विमर्श में डॉ. के. शंकरनारायणसामी, डॉ. अनिरुद्ध कान्हे, डॉ. अमृता भिडे, डॉ. अमितेश कुमार शामिल हुए। **पब्लिकेशन बोर्ड, असम** द्वारा आयोजित कार्यक्रम में असम के कई प्रचलित लोक साहित्यकारों में हिस्सा लिया और युवाओं पर असम साहित्य के प्रभाव और प्रचलन का वर्णन किया। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास** और **ऑल इंडिया कांफ्रेडेशन ऑफ द ब्लाइंड** के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद के जीवन पर केंद्रित लघु नाटिका का मंचन हुआ। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास** द्वारा आयोजित प्राइम टाइम चर्चा में लेखिका प्रियम गांधी मोदी ने देश के इतिहास पर प्रश्न उठाए। **शिवना प्रकाशन** द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'आधी आबादी उत्सव' का आयोजन किया गया, जिसमें 30 महिला लेखिकाओं की 30 पुस्तकों का विमोचन किया गया। **प्रवासी संसार** द्वारा 'प्रवासी हिंदी साहित्य वस्तुस्थिति एवं चुनौतियाँ' पर विशेष परिचर्चा आयोजित की गई जिसमें मुख्य अतिथि श्री वीरेन्द्र गुप्ता उपस्थित थे। **गुल्लीबाबा पब्लिशिंग हाउस** द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखी पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। **सावन कृपाल रूहानी मिशन** द्वारा 'एंगर हर्ट्स द सेंडर मोस्ट' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मेडिटेशन सिखाया गया। **प्रभात प्रकाशन** द्वारा नोबेल शांति सम्मान से अलंकृत 'श्री कैलाश सत्यार्थी पर केंद्रित पुस्तकों पर चर्चा' आयोजित की गई, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में कैलाश सत्यार्थी उपस्थित थे। **साहित्य अकादेमी** द्वारा 'हिंदी के लेखकों का सम्मेलन' आयोजित किया गया। **ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स** ने 'राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर सामूहिक स्वत्वाधिकार प्रबंधन के आर्थिक योगदान' पर एक सत्र आयोजित किया। **ऑस्ट्रियन कल्चरल फोरम, नई दिल्ली** ने 'प्रसिद्ध मानवविज्ञानी क्रिस्टोफ फ्यूरर वॉन हेइमेंडोर्फ को श्रद्धांजलि' शीर्षक से एक विमर्श आयोजित किया। **श्री अरबिंदो आश्रम** द्वारा इंटीग्रल एजुकेशन फ्रेमवर्क के साथ एनईपी-2020 के तुलनात्मक विश्लेषण पर एक सत्र आयोजित किया गया। सुश्री सारिका धूपर द्वारा लिखित पुस्तक 'अभिसार' का विमोचन किया गया। **मध्य प्रदेश ग्रंथ अकादमी** द्वारा लगभग छह पुस्तकों का विमोचन किया गया। **लाइव टू गिव ऑर्गेनाइजेशन** द्वारा कला की दृष्टि से 'समारकों का इतिहास, कला और शिल्प' विषय पर कहानी वाचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। **पेंग्विन प्रकाशन** द्वारा लेखक अनिल यादव के दूसरे

यात्रा संस्मरण 'कीड़ाजड़ी' का लोकार्पण किया गया। **विंसर पब्लिशिंग कंपनी** द्वारा 'पुस्तक लोकार्पण एवं संवाद कार्यक्रम' आयोजित किया गया। प्राइम चर्चा में 'बाहुबली' जैसा उपन्यास लिखने वाले आनंद नीलकंठन ने अपनी लेखन यात्रा साझा की। **हार्पर कॉलिंस** द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'बैड मैन ऑफ बॉलीवुड' पुस्तक का विमोचन किया गया। **वाणी प्रकाशन** द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'वक्त साक्षी है' पुस्तक विमोचित की गई। अन्य कार्यक्रम में डॉ. कुमार विश्वास की पुस्तक 'कोई दीवाना कहता है' के नए संस्करण का विमोचन किया गया। **हिंदी युग्म** तथा **रेडियो प्लेबैक इंडिया** के संयुक्त तत्वावधान 'ऑडियो बुक्स की प्रासंगिकता' पर परिचर्चा आयोजित की गई। **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास** द्वारा अरुण भगत की पुस्तक 'पत्रकारिता : सर्जनात्मक लेखन और रचना-प्रक्रिया' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। **ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया** और **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास** के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'आजादी का अमृत महोत्सव और गुमसुम आजादी के नायक' पर एक संगोष्ठी हुई। **एनसीपीयूएल** द्वारा 'दास्तान-ए-जंग-ए-आजादी' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इंटरनेशनल इवेंट कॉर्नर में **वाणी प्रकाशन** द्वारा आयोजित '**व्हाट्सअप इन द फ्रेंच ग्राफिक नॉवेल सीन विद जीना अबीराकेड**' कार्यक्रम में फ्रांसीसी लेखकों और अतिथियों का श्रोताओं से परिचय कराया गया। '**एन ओवर विद चिल्ड्रेन्स बुक्स स्टार**' कार्यक्रम में फ्रांसीसी लेखिका सूसी मॉर्गेंस्टर्न ने चर्चा की। '**मीट नोबेल प्राइस विनर आनी ओरनौ**' कार्यक्रम में फ्रांसीसी लेखिका आनी ओरनौ ने साहित्य के व्यवसायीकरण की चर्चा की। यहाँ न्यास द्वारा प्रकाशित और डॉ. सज्जन सिंह यादव द्वारा लिखित पुस्तक '**भारत में वैक्सीन की विकास-गाथा**' का विमोचन माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य व परिवार कल्याण एवं रसायन व उर्वरक मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया और श्री लोक रंजन, सचिव उत्तर-पूर्वी विकास मंत्रालय की उपस्थिति में किया गया। एक अन्य कार्यक्रम में **ब्लूम्सबरी पब्लिशिंग हाउस** द्वारा प्रकाशित और आचार्य महामंडलेश्वर कैलाशानंद गिरि महाराज द्वारा लिखित पुस्तक '**रिवर ऑफ मोक्ष पिलग्रिमेजेज अलोंग द गंगा**' का विमोचन वरिष्ठ पत्रकार श्री रजत शर्मा, सांसद निशिकांत दुबे की उपस्थिति में किया गया।

विदेशी मंडप

हॉल संख्या 4 में उपस्थित प्रकाशक देश-दुनिया की पुस्तकें पाठकों का आकर्षित कर रही थीं। यहाँ लगभग 40 विदेशी प्रकाशक अपनी सांस्कृतिक विरासत के साथ मौजूद थे। यहाँ स्थापित विशेष मंडप को फ्रेंच उपन्यासकार साइमन लामॉरेंट ने डिजाइन किया था। इस वर्ष अतिथि देश 'फ्रांस' के 16 लेखकों ने मेले में शिरकत की, जिसमें नोबेल पुरस्कार विजेता 82 वर्षीय आनी ओरनौ भी शामिल थीं। भारत के पड़ोसी देश, नेपाल से इस बार दो संस्थाएँ अपने देश के साहित्य, लोक, संस्कृति का खजाना लेकर

आई थीं। नेपाल इंटरनेशनल बुक फेयर के स्टॉल पर कुल चार प्रकाशकों की सौ से अधिक पुस्तकें उपलब्ध थीं। व्हाइट लोटस, काठमांडू के स्टॉल पर नेपाल में लोकतंत्र संघर्ष और समकालीन साहित्य की पुस्तकें अंग्रेजी, नेपाली और हिंदी में उपलब्ध थीं। इसके अलावा ब्यूरो इंटरनेशनल डे एडीशन फ्रांकैस, फ्रांस; कैपेक्सिल, जनरल इजीप्शियन बुक ऑर्गेनाइजेशन, मिस्र; इंस्टीट्यूटो कैमोस-पोर्तुगीज एंबेसी कल्चर सेंटर, पुर्तगाल; इंस्टीट्यूटो सर्वेन्तेज - एंबेसी ऑफ स्पेन, स्पेन जैसे प्रकाशकों ने भाग लिया।

युवा

प्रधानमंत्री युवा लेखक योजना में चयनित 75 युवा लेखकों के लिए न्यास द्वारा अलग से विमर्श-सत्रों का आयोजन किया गया। इसमें युवा लेखकों ने लेखन के दौरान आने वाली चुनौतियों के बारे में अपने अनुभव साझा किए और आने वाले समय में भावी लेखकों को प्रेरणा दी। उन्होंने अपने विषय पर विस्तार से चर्चा की।

इस दौरान उन्होंने पहले से ही स्थापित लेखकों से विचार-विमर्श भी किया और अपनी लेखन यात्रा को निर्बाध रूप से जारी कैसे रखा जाए, इस पर भी वे उनके दिशा-निर्देश लेते नजर आए। इस अवसर पर 'रेजांग ला की शौर्य गाथा' पुस्तक के लेखक और योजना के मेंटर श्री कुलप्रीत यादव ने युवा लेखकों से बातचीत की।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

हर वर्ष की तरह यहाँ एंफीथियेटर में आयोजित होने वाली प्रतिदिन सांस्कृतिक गतिविधियाँ देश के कोने-कोने के लोकगीत, संस्कृति और सभ्यता का समावेश करते हुए श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर गईं। यहाँ केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय; सातवीं डोगरा रेजिमेंट, असम; कबीर कैफे, श्याम आर्ट्स ग्रुप; कथक केंद्र, संस्कृति मंत्रालय के कलाकारों ने शानदार प्रस्तुतियाँ दीं।

इन्होंने भी लिया मेले में भाग

माननीय राज्य मंत्री, विदेश मंत्रालय एवं शिक्षा मंत्रालय श्री राजकुमार रंजन सिंह द्वारा मेले के औपचारिक उद्घाटन के बाद भी यहाँ पुस्तक प्रेमी राजनीतिज्ञों, सिने कलाकारों और अन्य प्रशासकों द्वारा किया गया भ्रमण आयोजन के दौरान अनवरत चलता रहा। इस दौरान दर्जनों पुस्तकों के लेखक व पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', तेलंगाना की माननीय राज्यपाल श्रीमती तमिलिसाई सौंदरराजन, बिहार के माननीय राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर, लोकसभा सांसद और पूर्व सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री रवि शंकर प्रसाद, माननीय शिक्षा राज्य मंत्री

डॉ. सुभाष सरकार, रूस के माननीय विदेश मंत्री श्री सर्गेई लावरोव, माननीय शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी, प्रसिद्ध कवि कुमार विश्वास, कारगिल युद्ध के महानायक और परमवीर चक्र विजेता कैप्टन योगेन्द्र यादव, माननीय वित्त राज्य मंत्री डॉ. भागवत किशन कराड, मशहूर अभिनेता श्री कबीर बेदी, माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य व परिवार कल्याण एवं रसायन व उर्वरक मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया, श्री लोक रंजन, सचिव उत्तर-पूर्वी विकास मंत्रालय, वरिष्ठ पत्रकार श्री रजत शर्मा जैसे मूर्धन्य विद्वानों ने मेले में सक्रिय सहभागिता की। सभी आगंतुकों ने मेले के केंद्रीय विषय के चयन और भव्य आयोजन के लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के प्रयासों की सराहना की। 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले' के दौरान प्रकाशित होने वाले दैनिक अखबार 'मेला वार्ता' और इसके अंग्रेजी संस्करण 'फेयर डेली' को पढ़ने के लिए नीचे दिए लिंक पर जाएँ—

https://www.nbtindia.gov.in/ndwbf2023/

किंडरगार्टन ग्रेजुएशन सेरेमनी में न्यास-निदेशक का संबोधन

संत निरंकारी पब्लिक स्कूल, गोविंदपुरी में किंडरगार्टन ग्रेजुएशन सेरेमनी आयोजित की गई। इस दौरान राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के निदेशक श्री युवराज मलिक स्कूल के युवा स्नातकों को संबोधित करते हुए माता-पिता से आग्रह किया कि 'वे अपने बच्चों को उनके जन्मदिन पर पुस्तकें भेंट करें क्योंकि पुस्तकें अच्छे मूल्य को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये राष्ट्र और चरित्र निर्माण में सहायक हैं।'

विद्यार्थी जी का जीवन व लेखन एक अप्रतिम पाठशाला है : पद्मश्री श्रीधर

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सेंटर ऑफ मीडिया स्टडीज द्वारा शहीद पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर 'प्रेरणा दिवस' कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में भोपाल स्थित माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान के संस्थापक पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर थे तथा अध्यक्षता विश्वविद्यालय के वाणिज्य संकाय के अधिष्ठाता प्रोफेसर प्रशांत घोष ने की। इस अवसर पर डॉ. धनंजय चोपड़ा द्वारा लिखित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित पुस्तक 'गणेश शंकर विद्यार्थी' का विमोचन किया गया। पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर ने कहा कि गणेश शंकर विद्यार्थी अपने लेखन में जनता से जुड़े सवाल उठाते थे, इसीलिए वे अपने पाठकों के बीच बहुत लोकप्रिय हो गए थे। उनके लेखन में नौजवानों, किसानों और मजदूरों की बात खूब मिलती है। वे पत्रकारिता को सत्य का उद्घोष मानते थे और सदैव मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता करते थे। अपने स्वागत वक्तव्य में डॉ. धनंजय चोपड़ा ने कहा कि विद्यार्थी जी के सान्निध्य में 'प्रताप' अखबार का दफ्तर किसी पत्रकारिता विश्वविद्यालय से कम नहीं था। वहाँ पर रहकर भगत सिंह ने भी 'बलवंत सिंह' के नाम से पत्रकारिता की और कई ऐसे पत्रकार निकले जिन्होंने आगे चलकर देश के कई शहरों से अखबारों का प्रकाशन, संपादन किया।

12वें विश्व हिंदी सम्मेलन में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तकें

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार और फिजी सरकार द्वारा संयुक्त रूप से 15 से 17 फरवरी, 2023 तक 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन

फिजी के नाडी शहर में किया गया। इस अवसर पर भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने कहा कि यह हमारे दीर्घकालिक संबंधों को आगे बढ़ाने का भी अवसर है। सम्मेलन का केंद्रीय विषय 'हिंदी पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा' रहा। माननीय विदेश राज्यमंत्री वी. मुरलीधरन ने कहा कि विश्व हिंदी सम्मेलनों की परंपरा में यह पहली बार है कि पारंपरिक ज्ञान और टेक्नोलॉजी कदम-से-कदम मिलाकर चल रही है। इस दौरान राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अध्यक्ष प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा द्वारा संपादित और न्यास से प्रकाशित पुस्तक 'हिंदी : वैश्विक आयाम' और न्यास की द्विमासिक साहित्यिक पत्रिका 'पुस्तक संस्कृति' का 'विश्व हिंदी सम्मेलन' विशेषांक माननीय विदेश राज्यमंत्री वी. मुरलीधरन को भेंट किया गया। इस अवसर पर न्यास द्वारा पुस्तकों की एक प्रदर्शनी लगाई गई, बाद में इन पुस्तकों को फिजी में भारत के सांस्कृतिक केंद्र में भेंट कर दिया गया।

राजस्थान साहित्य महोत्सव में रा.पु. न्यास

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने जोधपुर के उम्मेद उद्यान के जनाना बाग में 25 से 27 मार्च, 2023 तक आयोजित 'राजस्थान साहित्य महोत्सव' में भाग लिया। इस दौरान डॉ. बुलाकी दास कल्ला, शिक्षा मंत्री, राजस्थान सरकार ने न्यास के स्टॉल का दौरा किया और पुस्तकों की विस्तृत शृंखला देखी।

बिहार पुस्तक मेले में रा.पु. न्यास

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत व बिहार शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में पटना के गांधी मैदान में तीन दिवसीय (22-24 मार्च, 2023) 'बिहार दिवस पुस्तक मेला' का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन प्रो. अरुण कुमार भगत, माननीय सदस्य, बोर्ड ऑफ ट्रस्टी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत और माननीय सदस्य, बिहार लोक सेवा आयोग, पटना द्वारा किया गया। यहाँ न्यास द्वारा प्रकाशित सभी 55 भाषाओं में पुस्तकें उपलब्ध रहीं।

दिल्ली लिटरेचर फेस्टिवल में रा.पु. न्यास

इंडियन हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित दिल्ली लिटरेचर फेस्टिवल के उद्घाटन सत्र में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के निदेशक श्री युवराज मलिक ने देश के नॉलेज पार्टनर के रूप में न्यास की भूमिका के बारे में उपस्थित गणमान्य को न केवल अवगत कराया, अपितु देश निर्माण में साहित्य के माध्यम से इसके योगदान और महत्ता से श्रोताओं को रू-ब-रू कराया। दिल्ली लिटरेचर फेस्टिवल 18-19 मार्च, 2023 तक डीएलएफ एवेन्यू, साकेत में आयोजित किया गया।

बैंक ऑफ बड़ौदा राष्ट्रभाषा सम्मान

भारत जैसे बहुभाषी देश में सभी भारतीय भाषाओं का प्रयोग महत्वपूर्ण है क्योंकि ये राष्ट्र को विविधता प्रदान करते हुए एक समृद्ध विरासत के निर्माण में सहायक हैं। देश की सभी भाषाएँ राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं एवं अपने साहित्य के माध्यम से राष्ट्र की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत को संपन्न कर रही हैं। इसे ध्यान में रखते हुए बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा आरंभ किया गया 'बैंक ऑफ बड़ौदा राष्ट्रभाषा सम्मान' भारतीय भाषाओं के बीच सामंजस्य को बढ़ाने और आम लोगों के लिए हिंदी में श्रेष्ठ भारतीय साहित्य उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखता है। यह सम्मान भारत में साहित्यिक अनुवाद कार्य को भी प्रोत्साहित करेगा। इस सम्मान के शुभारंभ की घोषणा बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक

अधिकारी श्री संजीव चड्ढा द्वारा 20 जनवरी, 2023 को जयपुर में आयोजित 'जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल' के एक विशेष सत्र में की गई। बैंक द्वारा इस सम्मान की शुरुआत भारतीय भाषाओं में साहित्यिक लेखन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए की गई है।

यह पुरस्कार मूल रूप से भारतीय भाषाओं (संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल) में लिखे गए चयनित उपन्यास के मूल लेखक और इसके हिंदी अनुवादक, दोनों को ही प्रदान किया जाएगा। इसके तहत प्रति वर्ष सम्मानित उपन्यास के मूल लेखक को रु.21 लाख तथा उस कृति के हिंदी अनुवादक को रु.15 लाख तथा अन्य पाँच चयनित कृतियों के लिए प्रत्येक मूल लेखक को रु.3 लाख तथा हिंदी अनुवादक को दो लाख की राशि पुरस्कार स्वरूप दी जाएगी।

शंघाई सहयोग संगठन का 'युवा लेखक सम्मेलन' आयोजित

"हमारी संस्कृति में बहुत समानता है, हमें इसे बनाए रखना है। साझी विरासत के संबंधों को खोजने के लिए मूल विचारों का होना अत्यावश्यक है और युवाओं में सभ्यता के लोकाचार और सामाजिक मूल्य प्रणालियों के अनुभव से हमें लगातार सीखना होगा।" उक्त विचार संस्कृति और विदेश राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने 'युवा लेखक सम्मेलन' के उद्घाटन सत्र में व्यक्त किए। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार और शंघाई सहयोग संगठन के संयुक्त तत्वावधान में 12-13 अप्रैल, 2023 को लीला पैलेस, नई दिल्ली में युवा लेखक सम्मेलन आयोजित किया गया।

न्यास के अध्यक्ष प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा ने कहा कि पारस्परिक विकास के लिए संवाद और सहयोग की आवश्यकता है। युवाओं को एक-दूसरे के समाज की विविध संस्कृति, परंपराओं और दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करना चाहिए। इस अवसर पर संयुक्त सचिव, शिक्षा मंत्रालय सुश्री सौम्या गुप्ता ने कहा कि सभ्यागत संवाद उसकी प्रगति का सार है और विचारों के इस आदान-प्रदान के लिए युवाओं की उपस्थिति केंद्रीय है। शंघाई देशों के उप महासचिव श्री जनेश कैन ने वीडियो कॉफ्रेंस के जरिए कहा कि शंघाई सहयोग संगठन ने अपनी स्थापना के बाद से दुनिया की सभ्यताओं के बीच सहयोग विकसित करने का कार्य किया है। यह सम्मेलन साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र में हमारे देशों के बीच सहयोग की परंपरा स्थापित करेगा। न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक ने कहा कि युवा अगली पीढ़ी के नेतृत्वकर्ता हैं, जिनमें नया दृष्टिकोण लाने, नवाचार स्थापित करने, उद्यमिता और विविध सांस्कृतिक विचारों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने की क्षमता है।

प्रथम सत्र का विषय था इतिहास और दर्शन, जिसके अंतर्गत साझा सभ्यागत संबंध और आधुनिक नैतिक व्यवहार पर इसके प्रभाव पर ध्यान केंद्रित किया गया। इसके वक्ता थे—डॉ. आयशा गौतम (भारत) और सुश्री एकाथेरिना एस. मनोयलो (रूसी संघ), जबकि अध्यक्षता डॉ. यूथिका मिश्रा ने की। चर्चा में शामिल थे—डॉ. आर्शी दुआ, डॉ. रुचि वर्मा, श्री फहाद नवी और संचालक थे—प्रो. अजॉय कर्णाती।

दूसरे सत्र में व्यापार और वाणिज्य विषय पर चर्चा की गई। इसके वक्ता थे—सुश्री एनातासिया वी. वोलोडिना (रूसी संघ) और डॉ. प्रवेश कुमार गुप्ता (भारत), जबकि अध्यक्षता डॉ. सुनील अश्रा ने की।

तीसरे सत्र का विषय था धर्म, इसके प्रमुख बिंदु थे—एससीओ क्षेत्रों में धार्मिक विचार और उनका आंदोलन। इसके वक्ता थे—सुश्री नुरलन कीजी बेगैइम (किर्गिस्तान), डॉ. प्रांशु समदर्शी (भारत), मेखरिनोज़ अबासोवा (उज्बेकिस्तान) और सुश्री अइनुर अख्मेतोवा (कजाकिस्तान), जबकि अध्यक्षता श्री चामू कृष्ण शास्त्री ने की। चर्चा में शामिल थे—डॉ. आर्शी दुआ, डॉ. रितिका जोशी और संचालक थे—सुश्री दीपा सिंह।

चौथे सत्र का विषय था संस्कृति, इसके प्रमुख बिंदु थे—समकालीन संस्कृतियों के सभ्यागत मूल। इसके वक्ता थे—सैदा राशितोवा (उज्बेकिस्तान), डॉ. रश्मिनी कोपरकर (भारत), सुश्री एनातासिया वी. वोलोडिना (रूसी संघ), श्री एरकानत खुआतबेकुली (कजाकिस्तान), जबकि अध्यक्षता डॉ. जे.के. बजाज ने की। चर्चा में शामिल थे—श्री इवी हैंडीक, श्री मयंक सिंह, श्री मैक्सिम ए. ज़मशेव और संचालक थीं—श्रीमती नीरा जैन।

पाँचवें सत्र का विषय था साहित्य, इसके प्रमुख बिंदु थे—साहित्यिक ग्रंथों का अनुवाद और व्याख्या। इसके वक्ता थे—सुश्री एकाथेरिना एस. मनोयलो (रूसी संघ), सुश्री तन्वी नेगी (भारत), सुश्री अइनुर अख्मेतोवा (कजाकिस्तान), डॉ. सोनू सैनी (भारत), जबकि अध्यक्षता डॉ. प्रो. बद्री नारायण (भारत) ने की। चर्चा में शामिल थे—श्री अनघ गोपाल, श्री सुमंत सालुंके और संचालक थे—श्री कुमार विक्रम।

छठे सत्र का विषय था विज्ञान एवं चिकित्सा, इसके प्रमुख बिंदु थे—विज्ञान और चिकित्सकीय ज्ञान प्रणाली पर एससीओ सदस्यों का दृष्टिकोण। इसके वक्ता थे—सुश्री नुरलन कीजी बेगैइम (किर्गिस्तान), डॉ. आदित्य कोलाचना (भारत), जबकि अध्यक्षता श्री मैक्सिम ए. ज़मशेव (रूसी संघ) ने की। चर्चा में शामिल थीं—सुश्री दामिनी रॉय और संचालक थीं—सुश्री नीरजा आनंद।

सम्मेलन के समापन सत्र में विदेश एवं शिक्षा राज्य मंत्री श्री राजकुमार रंजन सिंह मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि भारत संगठन की सभी सहयोग गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेता रहा है और संगठन का एक मूल्यवान सदस्य है। युवा लेखकों के सम्मेलन में साझा सभ्यतागत संबंधों पर ध्यान केंद्रित करना एससीओ का लक्ष्य है। समापन सत्र में संयुक्त सचिव, एससीओ सुश्री योजना पटेल, न्यास-अध्यक्ष प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा, न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक उपस्थित रहे।

RNI NO. DELHIN / 2016 / 68219

मनोरंजन, ज्ञान और जिज्ञासा की अनूठी दुनिया!

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के कुछ नए प्रकाशन

भारत की वैक्सीन विकास-गाथा

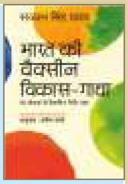

गो-चेचक से वैक्सीन मैत्री तक

सज्जन सिंह यादव

अनुवाद : **प्रवीण शर्मा**

यह पुस्तक वर्तमान विश्व-समुदाय को कोविड 19 महामारी के कारण पहुँचे विकट नुकसान के मद्देनजर सृजित की गई है। पुस्तक में वैश्विक स्तर पर वैक्सीन के विकास की सदियों से चली आ रही यात्रा को खूबसूरती से व्यक्त किया गया है। इसमें कोविड 19 के उद्भव, विकास, विश्व-समाज पर पड़े व्यापक प्रभाव और इससे निपटने के लिए भारत समेत विश्व के प्रयासों का विस्तृत वर्णन है।

पृ. 250; रु. 350.00

लोहित के मानसपुत्र शंकरदेव

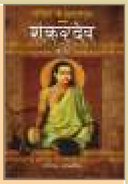

साँवरमल सांगानेरिया

यह पुस्तक असमिया समाज में की गई सामाजिक क्रांति के प्रणेता शंकरदेव के बारे में है। इसमें कुल चार अध्याय हैं। पहले अध्याय में जीवनपीठिका, दूसरे अध्याय में उनका भ्रमण, तीसरे अध्याय में उनका जीवन संघर्ष और चौथे अध्याय में जीवन की परिणति का वर्णन किया गया है। पुस्तक में शंकरदेव का चरित्र वर्णन पाठक वर्ग के लिए प्रेरणाप्रद है।

पृ. 456; रु. 545.00

सनातन प्रज्ञा प्रवाह

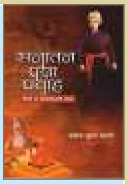

वेदों से विवेकानंद तक

प्रकाश सुमन ध्यानी

प्रस्तुत पुस्तक में वेदों के काल से लेकर भारत की सनातन सभ्यता और धर्म तथा अध्यात्म को विश्वभर में प्रसारित करने वाले आधुनिक सनातन संतों आदि के अवदान तथा प्राचीन और मध्यकाल आदि को समेटा गया है। इसमें भारतीय दर्शन के विचारों के विवेचन-क्रम में भक्तिमार्गी साहित्य की भी विवेचना की गई है तो चैतन्य महाप्रभु, तुलसीदास, सूरदास और मीराबाई रचित साहित्य का विवरण भी समाहित है।

पृ. 354; रु. 440.00

झारखंड

समग्र आयाम

मनीष रंजन

पुस्तक में कुल 17 अध्याय हैं, जिनमें झारखंड राज्य की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनीतिक एवं भौगोलिक स्थिति पर व्यापक रूप से दृष्टिपात किया गया है। इसके अलावा पुस्तक में राज्य के उद्योग-धंधे, परिवहन, संचार, पर्यटन, शिक्षा, खेल-कूद, नीतियाँ एवं योजनाएँ आदि विभिन्न आयामों की व्यापक चर्चा है। पुस्तक में राज्य की लोक कलाओं के विभिन्न रूपों का भी वर्णन है।

पृ. 448; रु. 590.00

शेष कथन

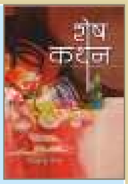

गोपबन्धु मिश्र

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने 'अभिज्ञानशाकुन्तल' के सभी पात्रों की विचारधारा का गहन विश्लेषण किया है। इन सभी पात्रों से पाठकों का जुड़ाव बहुत ही संवेदनात्मक रूप से हुआ है। यह उपन्यास पात्रों का एकालाप प्रस्तुत करता है। शकुंतला के प्रत्याख्यान से व्यथित सभी पात्र अपने-अपने प्रस्तुत हिस्से का पश्चाताप व्यक्त करते हैं। अंतःकरण की अंतर्ध्वनि की अनुभूति कराने में लेखक सफल रहा है।

पृ. 142; रु. 225.00

भारत एवं मध्य एशिया

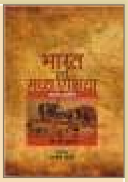

साझा अतीत

बी.बी. कुमार

अनुवाद : **राजेश माँझी**

पुस्तक में मध्य एशिया के जीवन के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक पहलुओं की विस्तारपूर्वक जाँच की गई है। पुस्तक में कुल 14 अध्याय हैं, जिसमें भारत और मध्य एशिया के बीच अनेक तरह के तथा अनेक स्तरों पर जो संबंध-संपर्क रहे, यथा—भाषा, धर्म, पंथ आदि, उसकी सारगर्भित जानकारी दी गई है।

पृ. 164; रु. 235.00

महाराष्ट्र

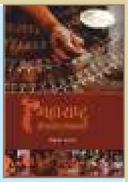

की प्रदर्शन लोककलाएँ

श्रीकृष्ण काकडे

इस पुस्तक में कुल 24 अध्याय हैं, जिनमें महाराष्ट्र की लोककलाओं पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। ये लोककलाएँ संस्कृति की संवाहक हैं, जिनमें जीवन का धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है। जनमानस के हृदय में ये कलाएँ रंग भरने के साथ ही सबको भावविभोर करती हैं। पुस्तक में इन कलाओं पर आधारित रंगीन चित्रों का भी समावेश किया गया है।

पृ. 194; रु. 300.00

nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070.

फोन : 011-26707761 ● **ई-मेल :** nro.nbt@nic.in

वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in